www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 6 ■ 16-31 जनवरी, 2011

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❒ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❒ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

❒ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

◆ देश का भविष्य	*आचार्य तुलसी*	3
◆ लोकतंत्र और नागरिक अनुशासन	*आचार्य महाप्रज्ञ*	5
◆ धर्म से प्रभावित अर्थनीति	*आचार्य महाश्रमण*	7
◆ पायं लागी सरकार	*जसविंदर शर्मा*	9
◆ रंग 'बदरंगा' परजातंतर	*आशीष वशिष्ठ*	10
◆ भारतीय गणतंत्र : एक आत्मप्रेक्षा	*प्रो. प्रेममोहन लखोटिया*	12
◆ बयानों से उपजते विवाद	*नरेन्द्र देवांगन*	14
◆ भ्रष्ट और अनैतिक भारत की नींव	*डॉ. हीरालाल छाजेड़*	17
◆ लालबहादुर शास्त्री अणुव्रत सम्मेलन में	*मुनि राकेशकुमार*	18
◆ सुख प्राप्ति की कला	*शिवचरण मंत्री*	19
◆ उजली चादर का मौन	*डॉ. वेदप्रताप वैदिक*	20
◆ जाग हिन्दुस्तानी जाग	*पाबूराम गिटाला*	22
◆ अपराध संस्कृति और राजनीति	*अशोक सहजानन्द*	25
◆ बिहार चुनाव : अणुव्रत मूल्यों की विजय	*डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी*	26
◆ देशभक्ति के संस्कार :1:	*कैलाश वर्मा*	28
◆ ताकि हथियार न उठाएं लोग	*यामिनी अय्यर*	31

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ राष्ट्र चिंतन	8
◆ झांकी है हिन्दुस्तान की	15
◆ कविता	6, 16, 24
◆ पाठक दृष्टि	27
◆ सुर्खियां	30
◆ अणुव्रत आंदोलन	33-39
◆ कृति	39
◆ अध्यक्ष की कलम से	40

www.terapanthinfo.com

जनतंत्र की श्रेष्ठता

हमारे संसदीय इतिहास में यह पहला अवसर था जब सन् 2010 के नवम्बर-दिसम्बर माह में प्रस्तावित संसद के शीतकालीन सत्र में 22 दिनों तक कोई विशेष काम नहीं हुआ और संयुक्त संसदीय समिति के गठन के मुद्दे पर संसद ठप्प रही। पूरे ही सत्र में प्रतिपक्ष ने जमकर नारेबाजी की और भारी हंगामे के मध्य लोकसभा एवं राज्यसभा की बैठकें दिन भर के लिए स्थगित कर दी गयी। शीतकालीन सत्र के प्रथम दिन से अंतिम दिन तक सदन स्थगन का यह क्रम सोचने को विवश कर रहा है कि पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों देश का हित चाहते है या अपने-अपने दलों का।

सन् 2010 के उत्तरार्द्ध में सत्ताधीशों द्वारा की गई वित्तीय अनियमितताओं के प्रकरण एक-एक कर जिस तरह से उजागर हुए उससे न सिर्फ जनतंत्र कलंकित हुआ वरन् आम आदमी का राजनेताओं से विश्वास भी उठ चला। कदाचार करने वाले राजनेताओं के त्यागपत्र ही भ्रष्टाचार रुपी कैन्सर का इलाज नहीं है। सत्ता शीर्ष पर बैठे कदाचारी लोगों को जब तक कड़ा सबक नहीं दिया जायेगा भ्रष्टाचार रुपी गंगा का प्रवाह रुकेगा नहीं। इस राष्ट्रव्यापी समस्या के निदान की दिशा में पक्ष और विपक्ष की एक ही संयुक्त आवाज होगी तभी शिष्टाचार बन चुके भ्रष्टाचार पर प्रहार होगा जो हमारी दृढ़ राजनैतिक इच्छाशक्ति के सहारे ही संभव है। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने वर्षों पूर्व ठीक ही कहा था--**''आज संसद प्रजा से कह रही है कि उन व्यक्तियों को मुझसे दूर रखिए, जो असंयमी हैं, चरित्रहीन हैं, जो सत्ता में आकर राष्ट्र से भी अधिक अपने परिवार को महत्व देते हैं, देश से भी अधिक अपनी जाति-सम्प्रदाय को महत्व देते हैं। सत्ता जिनके लिए सेवा का साधन नहीं, अपने विलास का साधन है। सत्ता जिनके लिए देश-कल्याण का माध्यम नहीं, किन्तु प्रतिशोध का माध्यम है। जिनकी न व्यक्तिगत छवि अच्छी है और न राष्ट्रीय छवि ही। उस प्रकार के व्यक्तियों से भी मुझे बचाइए।''**

9 नवम्बर 2010 से प्रारंभ हुए संसद के शीतकालीन सत्र की कुल 24 बैठकें होनी थीं लेकिन इसमें से केवल पहले दिन को छोड़ संसद ठप्प रही और 23 बैठकों में हुआ शोर-शराबा और बरपा हंगामा। 22 दिनों तक दोनों सदनों में एक ही स्वर सुनाई दिया--हमें चाहिये संयुक्त संसदीय समिति। इस शोर-शराबे के मध्य ही सरकार ने केवल कुछ वित्त और विधायी काम निपटाये। वर्ष 2010-11 के अनुदान की अनुपूरक मांगें तथा विनियोग विधेयक और रेलवे की वर्ष 2010-11 की अनुदान की अनुपूरक मांगें एवं इन विनियोग विधेयकों को हंगामे के बीच ही बिना चर्चा के सरकार ने पारित करवा लिये।

शीतकालीन सत्र में 2-जी स्पेक्ट्रम और अन्य भ्रष्टाचारी मुद्दों की संयुक्त संसदीय समिति से जांच कराने की मांग पर प्रतिपक्ष स्थिर रहा तो सरकार इस मांग के आगे झुकने को तैयार नहीं हुई। जनतंत्र की यह कैसी विवशता है कि ईमानदार छवि वाले प्रधानमंत्री भी कदाचारी राजनेताओं का साथ देने को विवश नज़र आए। संसद की गरिमा-पवित्रता को बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि राजनेताओं का जीवन पारदर्शी हो। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में--**''केवल वे ही हाथ लोकतंत्र के बुझते दीप में प्राण भर सकते है, जो अपनी पतंग की डोर अपने-आप थामे हुए हैं और जो स्वतंत्रता की पवित्र वेदी पर समानता की प्रतिष्ठा करने को प्राणप्रण से जुटे हुए हैं। क्या चुनाव में बहुमत से विजय की याचना करने वाले हाथ इस शंख-ध्वनि को अपनी पवित्र अंगुलियों में थामेंगे?''**

जनतंत्रीय प्रणाली को सशक्त बनाने के लिए आवश्यक है कि निर्वाचित प्रतिनिधि राजनीति को सेवा माने व्यापार नहीं। व्यापार बनती जा रही राजनीति को जड़मूल से समाप्त करके ही हम जनतंत्र की श्रेष्ठता को कायम कर सकेंगे।

● **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

www.terapanthinfo.com

"वह राजनीतिज्ञ अयोग्य है, जो केवल भावी निर्वाचन के विषय में सोचता है। योग्य राजनीतिज्ञ वह है जो देश की भावी पीढ़ी के विषय में चिन्ता करता है। सचमुच ऐसे ही निपुण राजनेताओं के हाथों देश का भविष्य सुरक्षित हो सकता है।"

देश का भविष्य

आचार्य तुलसी

बहुत बार मन में प्रश्न उभरता है, क्या राजनीति का अपना कोई चरित्र नहीं होता अथवा सत्ता-प्राप्ति के लिए राष्ट्र, समाज, दल और व्यक्ति की विश्वासपूर्ण भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना ही राजनीति का चरित्र होता है?

ऐसा प्रतीत होता रहा है कि राजनीति का अर्थ देश में सुव्यवस्था बनाए रखना नहीं, अपनी सत्ता और कुर्सी बनाए रखना है। राजनीतिज्ञ का अर्थ उस नीति-निपुण व्यक्तित्व से नहीं है, जो हर कीमत पर राष्ट्र की प्रगति, विकास-विस्तार और समृद्धि को सर्वोपरि महत्व दे, किन्तु उस विदूषक-विशारद व्यक्तित्व से है, जो राष्ट्र के विकास और समृद्धि को अवनति के गर्द में फेंककर भी अपनी कुर्सी को सर्वोपरि महत्व देता है। राजनेता का अर्थ राष्ट्र को प्रगति की दिशा में अग्रसर करने वाला नहीं, अपने दल को सत्ता की ओर अग्रसर करने वाला रह गया है। यही कारण है कि आज राष्ट्र गौण है, दल प्रमुख है। सिद्धांत गौण है, सत्ता प्रमुख है। चरित्र गौण है, कुर्सी प्रमुख है। एक राजनेता में राष्ट्रीय चरित्र, न्याय, सिद्धांत और नेतृत्व क्षमता के गुणों की आवश्यकता नहीं, किन्तु आज कुशल राजनेता वही है, जो अपने दल के लिए राष्ट्र के साथ ही विश्वासघात कर सकता हो, अपनी कुर्सी के लिए अपने दल के साथ भी विश्वासघात करने का जिसमें साहस या दुःसाहस हो।

जनता की कोमल भावनाओं का शोषण करके सत्तासीन होने के बाद क्या राजनेता का व्यक्तित्व जनता और राष्ट्र से भी बड़ा हो जाता है? यदि ऐसा नहीं है तो आज की राजनीति क्यों अपने-अपने प्रिय-पुत्रों, संबंधियों और चमचों-चाटुकारों के चक्रव्यूह में फंसकर रह गई है? राष्ट्र को स्थिर नेतृत्व प्रदान करने के नाम पर क्यों सिद्धांतहीन समझौते और स्तरहीन कलाबाजियां दिखाई जा रही है? सम्प्रदायवाद, जातिवाद, भाषावाद और प्रांतवाद को भड़का करके क्यों सत्ता की गोटियां बैठाई जा रही है? राष्ट्र-पुरुष की छवि को निखारने के नाम पर अपने स्वार्थों की पूर्ति की जा रही है। गांधीजी ने तत्कालीन राजनीति को नेतृत्व अवश्य दिया, किन्तु वे स्वयं राजनीति से सदा ऊपर रहे। किन्तु आज गांधीजी की समाधि को जिस तरह से सत्ता की राजनीति के दलदल में घसीटा जा रहा है, उसे देखकर अनायास ही मन ग्लानि और वितृष्णा से भर जाता है। फिर दूसरा प्रश्न उभर आता है, आखिर यह सब कुछ कब तक चलता रहेगा?

इस संदर्भ में मुझे महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर का एक कथा प्रसंग स्मरण आ रहा है। राजपथ पर भगवान जगन्नाथ की रथ-यात्रा बड़ी धूमधाम से निकल रही है। सैकड़ों श्रद्धालु जन उस भीमकाय रथ को बड़ी श्रद्धा-भावना से खींचने में लगे हैं। हजारों भक्तजन बीच-बीच में साष्टांग दंडवत् प्रणाम करते हुए रथ-यात्रा में सम्मिलित हो रहे हैं। यह सारा उत्सव देखकर रथ, पथ और मूर्ति गर्वोत्कर्ष में मन-ही-मन फूले नहीं समा रहे हैं। तीनों सोच रहे हैं, ये भक्ति-संभृत प्रणाम, मंत्रोच्चारण, भजन-कीर्तन, जय-जय का तुमुलनाद हमारे लिए ही हो रहा है। जबकि अन्तर्यामी प्रभु इन सबके अज्ञान-जनित अहं-उत्कर्ष पर मन-ही-मन हंस रहे हैं। कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर इसी स्थिति का मर्म-चित्रण करते हुए कहते हैं--

रथ भावे आमी देव, पथ भावे आमी।
मूर्ति भावे आमी देव, हंसे अन्तर्यामी।।

रथ सोच रहा है, यह प्रणाम मुझे हो रहा है और पथ सोच रहा है मुझे। मूर्ति अपने में ही भ्रम पाले हुए है और अन्तर्यामी प्रभु रथ, पथ और मूर्ति की नादानी पर हंस रहे हैं।

ऐसा लगता है, आज के राजनैतिक चरित्र पर यह व्यंग्य बहुत ही सटीक बैठता है। हर किसी राजनेता को यह भ्रम पैदा हो गया लगता है कि मेरे सत्तासीन होने से ही अथवा प्रधानमंत्री बनने से ही देश को स्वच्छ प्रशासन मिल सकता है। यह कुर्सी मेरा ही वरण करना चाहती है। मैं कुर्सी पर नहीं हूँ, इसलिए देश की यह दुर्दशा हो रही है। अतः येन-केन-प्रकारेण कुर्सी प्राप्त करूं, ताकि देश का निर्माण हो सके और राष्ट्र की कोटि-कोटि जनता नेताओं के इस विदूषक-व्यक्तित्व पर मन-ही-मन हंस रही है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि राष्ट्र के मस्तक पर आसीन व्यक्तित्व के राजनैतिक चरित्र से जनता को निराशा ही हुई है। किन्तु निराशा होने से कुछ नहीं होगा।

www.terapanthinfo.com

हमें इस रोग का इलाज सोचना होगा। किंकर्त्तव्यविमूढ़ बनकर बैठने से कोई लाभ नहीं होने वाला है। हमें रोग का सही निदान खोजना होगा, उपचार भी तभी हो सकेगा। इस दृष्टि से भारतीय जनता पर एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है।

यद्यपि जनता-जनार्दन पहले से बहुत प्रबुद्ध है किन्तु ऐसा लगता है कि अभी भी उनका शिव-स्वरूप जागृत नहीं हुआ। भारतीय जनता को यह अच्छी तरह समझना होगा कि कुछ नेताओं से कभी कोई राष्ट्र नहीं बनता। वस्तुतः प्रजा ही राष्ट्र है। सहस्त्राब्दियों पूर्व हमारे मंत्र-द्रष्टा ऋषियों ने गाया--राष्ट्राणि वै विशः--प्रजा ही राष्ट्र है। विशि राजा प्रतिष्ठितः--राजा की स्थिति भी प्रजा पर निर्भर है। राजाओं की स्थिति भी प्रजा के समर्थन पर निर्भर करती थी। अब तो स्थितियां सर्वथा भिन्न हैं। राज्य-व्यवस्था का स्वरूप ही प्रजातांत्रिक हो गया है। इस अवस्था में जनता को यह समझना बहुत जरूरी है कि जब तक वह अपना तृतीय शिव-नेत्र नहीं खोलेगी, तब तक नेता के रूप में देश के साथ खिलवाड़ करने वाला कामदेव भस्म होने वाला नहीं है।

संसदीय कक्ष में संसद सदस्यों और मंत्रिपरिषद के सदस्यों के बीच अपने विचार प्रकट करने का अवसर मिला। वहाँ मैंने विशेष रूप से एक बात कही थी। उसी बात को मैं आज जनता के समक्ष दोहराना चाहता हूँ। क्योंकि उसका सीधा संबंध जनता से है।

एक बार विद्या ने ब्राह्मण से कहा--मैं आपकी निधि हूँ। आप मेरी रक्षा करें। ब्राह्मण ने पूछा--आपके सामने ऐसी क्या कठिनाई है? विद्या ने कहा--जो व्यक्ति मेरे योग्य नहीं है, आप उनके साथ भी मेरा पाणिग्रहण कर देते हैं। जिस किसी के साथ मेरा गठबंधन कर देते हैं। कम-से-कम ऐसा तो नहीं होना चाहिए। पण्डित ने पूछा--आखिर तुम चाहती क्या हो? विद्या ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा--आप कृपा करके मुझे तीन प्रकार के व्यक्तियों से बचाएं। प्रथम तो वे जो पर-दोषदर्शी हैं। दूसरों के दोषों को देखना ही जिनका प्रमुख व्यवसाय है। दूसरे वे जो मायावी हैं, कुटिल हैं और तीसरे वे जो असंयमी हैं, चरित्रहीन हैं। इन तीन प्रकार के व्यक्तियों से आप मेरी रक्षा करें।

> **“आज संसद प्रजा से कह रही है कि उन व्यक्तियों को मुझसे दूर रखिए, जो असंयमी हैं, चरित्रहीन हैं, जो सत्ता में आकर राष्ट्र से भी अधिक अपने परिवार को महत्व देते हैं, देश से भी अधिक अपनी जाति-सम्प्रदाय को महत्व देते हैं। सत्ता जिनके लिए सेवा का साधन नहीं, अपने विलास का साधन है। सत्ता जिनके लिए देश-कल्याण का माध्यम नहीं, किन्तु प्रतिशोध का माध्यम है। जिनकी न व्यक्तिगत छवि अच्छी है और न राष्ट्रीय छवि ही। उस प्रकार के व्यक्तियों से भी मुझे बचाइए।”**

आज के संदर्भ में संसद जनता से यही प्रश्न कर रही है कि आप कृपा करके तीन प्रकार के व्यक्तियों को चुनकर संसद में मत भेजिए। पहले वे जो पर-दोषदर्शी हैं। दूसरों के दोष ही देखने वाले हैं। अच्छाई में भी बुराई देखने वाले हैं। पिछली सरकार के अच्छे कार्यों को भी उलटने वाले हैं। वह हमारे दल का नहीं, इसलिए उसमें कोई अच्छाई हो ही नहीं सकती। इस तरह जिनकी दृष्टि मोती पर नहीं, मछलियों पर है, वैसे सदस्यों को आप मेरे पास मत भेजिए।

उन लोगों को भी आप मेरे पास मत भेजिए जो कुटिल हैं, मायावी हैं, नेता नहीं अभिनेता हैं, असली पात्र नहीं मात्र विदूषक की भूमिका निभाने वाले हैं। कुर्सी के लिए हर प्रकार का कुटिल षडयंत्र रच सकते हैं, गलत तत्त्वों से सांठ-गांठ कर सकते हैं, चरित्रहनन कर सकते हैं। सत्ता-प्राप्ति के लिए अकरणीय जैसा उनके लिए कुछ भी नहीं है। जिस जनता के कंधों पर बैठकर केन्द्र तक पहुँचते हैं, उसके साथ भी धोखा कर सकते हैं। जिस दल के घोषणा-पत्र पर चुनाव जीतकर आए हैं, उसकी पीठ में भी छुरा भोंक सकते हैं। इस प्रकार के कुटिल-जटिल, दम्भी व्यक्तियों को आप मेरे पास मत भेजिए।

तीसरे उन व्यक्तियों को भी मुझसे दूर रखिए, जो असंयमी हैं, चरित्रहीन हैं, जो सत्ता में आकर राष्ट्र से भी अधिक अपने परिवार को महत्व देते हैं, देश से भी अधिक अपनी जाति-सम्प्रदाय को महत्व देते हैं। सत्ता जिनके लिए सेवा का साधन नहीं, अपने विलास का साधन है। सत्ता जिनके लिए देश-कल्याण का माध्यम नहीं, किन्तु प्रतिशोध का माध्यम है। जिनकी न व्यक्तिगत छवि अच्छी है और न राष्ट्रीय छवि ही। उस प्रकार के व्यक्तियों से भी मुझे बचाइए। भारतीय संसद भारतीय जनता के द्वार पर ही अपनी मर्म-भेदी पुकार लेकर खड़ी है।

आज के राजनैतिक चरित्र को यदि उज्ज्वल बनाए रखना है, संसद की गरिमा, पवित्रता और मान-मर्यादा को बनाय रखना है, राष्ट्र को स्वस्थ, सुदृढ़ एवं सुसंस्कार-संपन्न बनाना है तो सम्पूर्ण भारतीय समाज को इस दिशा में प्रबुद्ध होना होगा, अपने दायित्व को समझना होगा और सामने खड़ी परीक्षा की घड़ी में अपनी निर्णायक मनीषा से देश की तस्वीर को उज्ज्वलतम बनाना होगा। वह राजनीतिज्ञ अयोग्य है, जो केवल भावी निर्वाचन के विषय में सोचता है। योग्य राजनीतिज्ञ वह है जो देश की भावी पीढ़ी के विषय में चिन्ता करता है। सचमुच ऐसे ही निपुण राजनेताओं के हाथों देश का भविष्य सुरक्षित हो सकता है।

www.terapanthinfo.com

लोकतंत्र और नागरिक अनुशासन

आचार्य महाप्रज्ञ

सारी इच्छाओं का केन्द्र मन है और मन की इच्छा का केन्द्र है स्वतंत्रता। मन अपनी इच्छा से चलना चाहता है। वह अपने क्षेत्र में दूसरों का हस्तक्षेप नहीं चाहता। यह सार्वभौम स्वतंत्रता मन का शाश्वत स्वभाव है।

व्यक्ति यदि अकेला ही होता है तो वह अपनी सार्वभौम स्वतंत्रता का उपयोग कर पाता लेकिन आज वह अकेला नहीं है। वह सामाजिक जीवन जी रहा है। इसीलिए उसकी स्वतंत्रता सीमित है। चाहे-अनचाहे उसमें दूसरों का हस्तक्षेप भी होता है। इसका अर्थ यह है कि सामाजिक जीवन स्वतंत्रता और परतंत्रता का मिश्रित रूप है।

प्रजातंत्र व्यक्ति को अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता देता है। किन्तु आर्थिक स्वतंत्रता के बिना क्या सामाजिक राजनैतिक स्वतंत्रता फलित होती है? गरीबी के कारण न जाने कितने लोग आज भी अनेक परतंत्रताओं से जकड़े हुए हैं। चिन्तन की स्वतंत्रता के बिना भी ऐसा ही होता है। अशिक्षित लोग भी विवशता की पकड़ से मुक्त नहीं होते।

मैं जिस भाषा में सोचता हूँ। उसमें जनतंत्र का स्वरूप कुछ दूसरा है, वर्तमान स्वरूप से भिन्न और बहुत भिन्न। मैं निर्वाचन पद्धति को देखता हूँ तो लगता है यह जनतंत्र है और जब शासन प्रणाली को देखता हूँ तो लगता है कि यह कठोर राजतंत्र है।

जिस शासन में नियंत्रणों का अधिक भार, शासन का अधिक दबाव और कानून का अधिक विस्तार हो, क्या वह जनतंत्र हो सकता है?

सीमित नियंत्रण, सीमित दबाव और सीमित कानून--इनका समन्वित रूप जनतंत्र। असीम इच्छा, असीम प्रयत्न और असीम उच्छृंखलता--इनका समन्वित रूप मनुष्य का स्वभाव।

प्राकृतिक रूप में मनुष्य-स्वभाव और जनतंत्र की पद्धति में मेल नहीं है, किन्तु उनका मेल बिठाया जाता है। मनुष्य कुछ स्वभाव से बदलता है और कुछ जनतंत्र। नियंत्रण का थोड़ा विस्तार और इच्छा का थोड़ा संकोच, दबाव का थोड़ा विस्तार और प्रयत्न का थोड़ा संकोच--यह जनतंत्र का आकार बनता है। आज का जनतंत्र इस आकार का नहीं है, इसलिए जनता और शासन--दोनों ओर से अधिक दबाव आ रहा है।

मैं नहीं कहता कि जनता का दबाव कम हो और सरकार का दबाव बढ़े, या सरकार का दबाव कम हो और जनता का दबाव बढ़े। ये दोनों विकल्प जनतंत्र के लिए स्वस्थ नहीं है। उसकी स्वस्थता इसमें है कि दोनों ओर का दबाव घटे। जनतंत्र में निरंकुश शासक और निरंकुश जनता दोनों खतरनाक होते हैं। इस खतरनाक स्थिति के लक्षण अनेक घटनाओं में प्रकट हो रहे हैं। दुकानों की लूट, अग्निकाण्ड, शस्त्रों का प्रयोग, पथराव और गोलियों की बौछार--ये अनुशासित नागरिकों के चरणचिह्न नहीं हैं। सरकारी

www.terapanthinfo.com

निर्णय के विरुद्ध वैधानिक उपाय काम में लिए जाते हैं, यह अनुचित नहीं है, किन्तु अराजकतापूर्ण स्थिति का निर्माण उचित भी नहीं है। इसमें जनतंत्रीय प्रणाली को आघात पहुँचता है और एकाधिनायकता को बल मिलता है। सरकारी निर्णय सभी पक्षों को प्रिय लगें, यह संभव नहीं। अप्रिय निर्णय का विरोध न हो, यह भी जनतंत्र में असंभव है। संभव यह है कि विरोध की पद्धति वैधानिक एवं शालीन हो। जनता को अनुशासन-विहीन बनाने में शायद किसी भी दल का हित नहीं है। आज एक दल को जनता की उत्तेजनापूर्ण और अनुशासन-विहीन प्रवृत्तियों का सामना करना पड़ रहा है, कल किसी दूसरे-तीसरे दल को भी करना पड़ सकता है।

जनतंत्र का भविष्य इस प्रश्न पर निर्भर नहीं है कि शासन किस दल का है? उसका भविष्य इस प्रश्न पर सुरक्षित है कि उसकी जनता अनुशासित है और हर परिस्थिति का अनुशासित ढंग से समाना कर सकती है। शासक लोग भी आग्रह से मुक्त होकर जनता की स्थिति को जानना न चाहें, वस्तुस्थिति के साथ आँख-मिचौनी करें तो निश्चित रूप से अ-लोकतंत्रीय प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिलता है। यत्र-तत्र विधान-सभा की घटनाएं भी अनुशासन के प्रति अनुराग उत्पन्न करने में सफल नहीं हुई हैं। फिर केवल जनता से अनुशासन और संयम की आशा कैसे की जाए? सामंजस्य, समन्वय और सह अस्तित्व की बात केवल अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में ही अपेक्षित नहीं है। पहले उनकी अपेक्षा राष्ट्र में है--विभिन्न राजनैतिक दलों में है। विशेषतः सार्वजनिक महत्त्व की समस्याओं के समाधान के समय है। लोकतंत्र अ-लोकतंत्रीय उपायों से कभी सक्षम नहीं बनता। उसे सक्षम बनाने का प्रत्यक्ष दायित्व जनता पर है, प्रत्यक्षतर विधायकों पर और प्रत्यक्षतम शासकों पर। दायित्व के आधार पर यह स्वतः प्राप्त होता है--जनता अनुशासित हो, विधायक अनुशासिततर और शासक अनुशासिततम।

भारतीय जनता का बहुत बड़ा भाग अशिक्षित है। यह कहना कठिन है कि जो अशिक्षित हैं, वे अनुशासित नहीं हैं और जो शिक्षित हैं, वे अनुशासित हैं। हमारे विद्यालयों में लोकतंत्र के शिक्षण की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है, इसलिए जनता से विशिष्ट अनुशासन की आशा ही कैसे की जा सकती है?

वर्तमान वातावरण में जो परिणाम सामने आ रहे हैं, उनसे भिन्न परिणामों की आशा नहीं की जा सकती।

इन घटनाओं की पुनरावृत्तियों से हमें न आश्चर्यचकित होने की जरूरत है और न खिन्न होने की, किन्तु एक पाठ लेने की जरूरत है। वह है लोकतंत्रीय शिक्षण की समुचित व्यवस्था। मैं इसमें अधिक सफलता देखता हूँ कि हमारा ध्यान वर्तमान की घटनाओं पर ही न अटके किन्तु जिन कारणों से वे घटित हो रही हैं, वहाँ तक पहुँचे और उनके निवारण में लगे।

संभल-संभल जन गणतंत्र के....

रामगोपाल 'राही'

अपनी चिंता छोड़ के, चिंता करत देश बचाने की।
संभल-संभल जन गणतंत्र के, घड़ियां न सुस्ताने की।।

गणतंत्र की रक्षा हेतु, शुरू पहल हो अपने से।
सिर से पानी गुजरा जाता, रोक ले खुद को बहने से।।
संकल्प-कटिबद्ध कसम ले, भ्रष्टाचार मिटाने की।
संभल-संभल जन गणतंत्र के, घड़ियां न सुस्ताने की।।

महंगाई मन मार रही है, उत्साह फीका-फीका है।
नैतिकता तो पिटी-पिटी सी, उभरा घूस सलीका है।।
कर्त्तव्य, दायित्व प्रमुख हो, सोच बढ़ा अपनाने की।
संभल-संभल जन गणतंत्र के, घड़ियां न सुस्ताने की।।

तहलका ने देश झिंझोड़ा, पूरी तरह निचोड़ा है।
अब घोटाले आए दिन ही, क्षेत्र न कोई छोड़ा है।।
राष्ट्र चेतना - जीवन मूल्य, खोये उनको पाने की।
संभल-संभल जन गणतंत्र के, घड़ियां न सुस्ताने की।।

हालत बद से बदतर हो रही, हंगामों से संसद में।
हठधर्मी-हंगामें क्यों हो? गणतंत्र की संसद में?
छल ही छल से क्षति देश की, बात बड़ी शर्माने की।
संभल-संभल जन गणतंत्र के, घड़ियां न सुस्ताने की।।

नौकरशाही-प्रतिनिधि का, बिगड़ा सारा ढांचा है।
रक्षक-भक्षक देश हितों को, जड़ते रोज तमाचा है।।
बाढ़ खेत को खाती लगती, कोशिश कर बचाने की।
संभल-संभल जन गणतंत्र के, घड़ियां न सुस्ताने की।।

दल बड़ा न धर्म-व्यक्ति, सबसे देश बड़ा है।
क्षेत्रवाद व उन्मादों से, देश सदा पिछड़ा है।।
हिंसा-आतंक मिटे मुहिम हो, नामों निशा मिटाने की।
संभल-संभल जन गणतंत्र के, घड़ियां न सुस्ताने की।।

राष्ट्र पर्व गणतंत्र हमारा, चहुँ एकता धारा हो।
अमर है भारत राष्ट्र चेतना, जयहिंद का नारा हो।।
जगे-चेतना उठा तिरंगा, फेरी चहुँ लगाने की।
संभल-संभल जन गणतंत्र के, घड़ियां न सुस्ताने की।।

मोहल्ला गणेशपुरा, वार्ड-5,
लाखेरी - 323615, जिला - बूंदी (राजस्थान)

www.terapanthinfo.com

"देश का हर व्यक्ति सादगी और संयम का जीवन जीने लगे, प्राणीमात्र के प्रति अनुकम्पा का भाव जाग जाए, ईमानदारी नैतिकता और सदाचार जीवन में आ जाए तो हर एक व्यक्ति सच्चा सम्राट् बन सकता है और जीने का आनन्द प्राप्त कर सकता है।"

धर्म से प्रभावित अर्थनीति

आचार्य महाश्रमण

एक भारतीय संन्यासी विदेश-यात्रा पर गया। वहाँ के एक प्रमुख राजनेता ने संन्यासी से पूछा--मैंने सुना है, आप स्वयं को सम्राट कहते हैं? किन्तु जिसके पास एक पैसा भी नहीं हो, वह सम्राट् कैसे बन सकता है? संन्यासी ने कहा--जिसके जीवन में संतोष और आनन्द का सागर लहराता है, जो किसी के आगे हाथ नहीं पसारता तथा जो स्वयं पर अनुशासन रखता है, वह सच्चा सम्राट् होता है।

संन्यासी ही नहीं, एक गृहस्थ भी सच्चा सम्राट् बन सकता है, बशर्ते उसके जीवन में संयम हो, वह मात्र लेना ही नहीं, देना भी जानता हो, आत्मानुशासी हो और संतुलित अर्थनीति का विज्ञाता हो। सामान्यतया अर्थ के बिना जीवन-यात्रा सम्यक् सम्पन्न नहीं हो सकती। जीवन-यापन के लिए अर्थ की आवश्यकता भी है और उपयोगिता भी है। अर्थ के अर्जनकाल में ईमानदारी और उपभोगकाल में सदुपयोग जैसे सिद्धांत आचरण में आ जाएं तो संतुलित अर्थनीति बन सकती है।

अर्थ अपने-आपमें एक सम्पत्ति है और ईमानदारी उससे भी बड़ी सम्पत्ति है। अर्थ ऐसी सम्पत्ति है जो कभी भी धोखा दे सकती है और अधिक-से-अधिक वर्तमान जीवन तक व्यक्ति के पास रह सकती है। विश्व विजेता सिकन्दर जब अन्तिम सांसें गिन रहा था, उसे बहुत दुःख और आश्चर्य हुआ कि ये धन के भण्डार मुझे मौत से नहीं बचा सकते। उसने प्रधान सेनापति को यह आदेश दिया कि शवयात्रा के दौरान मेरे दोनों हाथ कफन से बाहर रखे जाएं ताकि जनता इस सच्चाई को समझ सके कि-- 'मैं एक तार भी साथ नहीं ले जा रहा हूँ। मैं खाली हाथ ही आया था और खाली हाथ ही जा रहा हूँ।' जबकि ईमानदारी एक ऐसी सम्पत्ति है जो व्यक्ति को कभी धोखा नहीं दे सकती और वर्तमान जीवन तक ही नहीं, आगे भी व्यक्ति का साथ निभा सकती है। यदि अर्थ के अर्जन में ईमानदारी नहीं रहती, अहिंसा नहीं रहती, अनुकम्पा का भाव नहीं रहता, तो अर्थनीति असंतुलित बन जाती है। ईमानदारी अहिंसा का ही एक आयाम है। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिनके जीवन में ईमानदारी बोलती है।

सुजानगढ़ निवासी रूपचन्द सेठिया का जीवन आदर्श जीवन था। वे कपड़े का व्यापार करते थे। एक दिन दुकान पर कोई ग्राहक आया। मुनीमजी ने कपड़े का निर्धारित मूल्य उसे बता दिया। ग्राहक ने आग्रह किया कि कपड़े का मूल्य कुछ कम किया जाए। मुनीमजी ने कपड़े का मूल्य कम कर दिया और साथ में उसे कुछ कपड़ा भी कम दे दिया। जब रूपचंदजी दुकान में आए तो मुनीमजी ने सारी बात बता दी। सेठजी ने उपालम्भ देते हुए कहा-- आपने बेईमानी क्यों की? उसे कपड़ा कम क्यों दिया? सेठजी ने उस ग्राहक को वापस बुलाया और उसका हिसाब किया और साथ में मुनीमजी का हमेशा के लिए हिसाब कर दिया और कहा--मुझे ऐसा मुनीम नहीं चाहिए जो किंचित् भी अप्रामाणिकता का कार्य करे।

ऐसे व्यक्ति बहुत कम होते हैं जो इतनी उच्चस्तरीय प्रामाणिकता का पालन करते हैं। जिनके पास अर्थ है उन्हें भी धनवान कहा जा सकता है और जिनके

सत्ता-संपदा से व्यक्ति उस ऊंचाई को नहीं छू सकता, जो सत्य, प्रामाणिकता आदि आध्यात्मिक गुणों के विकास से उपलब्ध होती है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-**कोलकाता**-700019

● दूरभाष : 22809695

www.terapanthinfo.com

पास अर्थ के प्रति अनासक्ति और ईमानदारी के प्रति आसक्ति है, उन्हें भी धनवान कहा जा सकता है। आदमी ऐसा कोई कार्य न करे जिससे किसी को कष्ट हो अथवा नैतिकता खत्म हो। ऐसे व्यक्ति समाज और देश के गौरव हैं जो ईमानदारी पर आंच नहीं आने देते। जो अपनी इज्जत के खातिर लाखों रुपयों का नुकसान स्वीकार कर लेता है। उसके सामने एक ही आदर्श वाक्य रहता है--'जाए लाख, रहे साख।'

कई व्यक्ति परिश्रम से अर्थार्जन करते हैं और उसका कुछ अंश व्यसन में खर्च कर देते हैं, शराब आदि पी लेते हैं अथवा अन्य कोई नशा कर लेते हैं, जिससे अर्थ की हानि होती है और स्वास्थ्य भी खराब होता है। जहाँ अर्थ का दुरुपयोग होता है, वहाँ अहिंसक/संतुलित अर्थनीति के विरुद्ध बात हो जाती है। अर्थवान व्यक्ति के लिए यह विचारणीय बात होती है कि वह अर्थ का उपयोग किस रूप में करता है। विवेक-सम्पन्न व्यक्ति अर्थ का अपव्यय नहीं करता। बिना प्रयोजन वह एक पाई भी नहीं खोता और विशेष हित का प्रसंग उपस्थित होने पर वह जैन श्रावक भामाशाह बन जाता है। भामाशाह ने मेवाड़ की सुरक्षा के लिए अपना खजाना महाराणा प्रताप को समर्पित कर दिया था।

आदमी अर्जन के साथ विसर्जन की मनोवृत्ति का विकास करे। अपनी इच्छाओं को सीमित करे और व्यक्तिगत भोग और संग्रह की भी सीमा करे। व्यक्ति आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है, किन्तु आकांक्षाओं की पूर्ति कर पाना मुश्किल होता है। आर्थिक विकास के लिए शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शान्ति और भावनात्मक संतुलन गौण हो जाए, वह अर्थनीति संतुलित नहीं हो सकती। गरीबी मिटाने के लिए आर्थिक विकास आवश्यक माना गया है, किन्तु उसका उपयोग कुछेक व्यक्तियों तक ही सीमित न रहे। आदमी अपने जीवन में सन्तोष, आवश्यकता और अर्थ के सदुपयोग को महत्व दे।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सादगीप्रिय और मितव्ययी व्यक्ति थे। राष्ट्रपति का वेतन दस हजार रुपये मासिक निर्धारित होते हुए भी उन्होंने कभी पूरा वेतन नहीं लिया। एक बार उनके मित्र ने पूछा--बाबूजी! आप पूरा वेतन क्यों नहीं लेते हैं? डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बोले--सभी की मूलभूत आवश्यकताएं बराबर हैं। मेरे लिए उतना ही काफी है जितने से मेरी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। आवश्यकता से अधिक संग्रह करना मैं उचित नहीं मानता।

देश का हर व्यक्ति सादगी और संयम का जीवन जीने लगे, प्राणीमात्र के प्रति अनुकम्पा का भाव जाग जाए, ईमानदारी नैतिकता और सदाचार जीवन में आ जाए तो हर एक व्यक्ति सच्चा सम्राट् बन सकता है और जीने का आनन्द प्राप्त कर सकता है।

राष्ट्र चिन्तन

- नक्सलवाद देश की शांति और सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा है। ऐसे लोगों को गुमराह करना आसान है, जिनकी न्यायोचित मांगें भी नहीं मानी गई हैं या फिर सरकार ने उनकी समस्याओं के प्रति उचित संवेदनशीलता नहीं दिखाई। नक्सल प्रभावित इलाकों में उसे बेहद संवेदनशील रवैया अपनाना चाहिए।

  सबसे ज्यादा चिंता इस बात की है कि नक्सलवाद आर्थिक रूप से सर्वाधिक पिछड़े इलाकों में फैल गया है। कहीं न कहीं इससे यह भी साबित होता है कि हम (सरकार) स्थानीय लोगों की अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरे हैं। सीमापार आतंकवाद, पूर्वोत्तर राज्यों में उग्रवाद और नक्सलवाद देश के विकास के लिए घातक तो है ही, ये हमारे पूरे समाज को भी प्रभावित कर रहे हैं। हमें इन समस्याओं से तुरंत और पूर्णता के साथ निपटना होगा।

- विपक्षी दलों द्वारा 2-जी स्पैक्ट्रम मामले में जेपीसी के गठन पर चर्चा के लिए संसद विशेष सत्र के सरकार के प्रस्ताव को ठुकरा दिए जाने से सरकार और विपक्ष के बीच चल रहे तनाव में ढील आने के कोई आसार नहीं दिख रहे हैं। विशेष सत्र की पेशकश करने वाले केन्द्रीय वित्त मंत्री ने विपक्ष से राष्ट्र से माफी मांगने को कहा है।

  -- प्रणव मुखर्जी, *केन्द्रीय वित्त मंत्री*

- प्रधानमंत्री को अपने पद की ताकत को पहचानना चाहिए और 10 जनपथ के निर्देशों की बजाय खुद जेपीसी के गठन का ऐलान करें।

  -- लालकृष्ण आडवाणी, *वरिष्ठ नेता भाजपा*

- अगर प्रधानमंत्री जेपीसी का गठन नहीं कर सकते तो उन्हें अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए।

  -- अरूण जेटली, *नेता भाजपा*

- यूपीए सरकार को बताना होगा कि वह जेपीसी की मांग स्वीकार करने को तैयार क्यों नहीं है।

  -- सुषमा स्वराज, *नेता भाजपा*

www.terapanthinfo.com

पायं लागी सरकार

जसविंदर शर्मा

अखबारें रोजाना ही ताजा व चटपटी खबरों की तलाश में रहती हैं। जिस दिन उन्हें ऐसी सनसनीखेज खबरें न मिलें मसलन प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री का ब्यान, बलात्कार, आगजनी, दंगे या रेल हादसा से जुड़े लोक-रुचि की खबरें न मिलें तो उस दिन ये अखबारें कोई दूसरा अटपटा रहस्य उजागर करके लोगों की चटपटी जीभ के लिए मिर्च-मसाले का इन्तजाम करती हैं। आज के अखबार की ताजा खबर है कि एक राज्य सरकार के सचिवालय में दो लाख से ज्यादा फाइलें लंबित पड़ी हैं और कुछ सालों से धूल चाट रही हैं। इन अनचाही फाइलों की अब हालत यह हो गई है कि दफ्तर के चूहे उन्हें बेरहमी से कुतरने लगे हैं और इन बेकार पड़ी उपेक्षित फाइलों को खा-खाकर ये चूहे बहुत मोटे हो गए हैं। फाइलों को निबटाने के साथ-साथ एक दूसरी गम्भीर स्थिति यह पैदा हो गई है कि इन चूहों की फौज से कैसे निबटा जाए।

बाहरी तौर पर देखा जाए तो यह सब अफसरशाही की कार्य-अक्षमता का ही सबूत है। अफसर बात-बात पर फाइलें खोल तो लेते हैं मगर उन्हें बन्द करने का कभी आदेश नहीं देते। इससे अच्छे तो हमारे पुलिस विभाग के हजारों मुंशी हैं जो बिना किसी वारदात की एफ आई आर लिखे उन्हें आनन फानन रफा-दफा कर देते हैं। हर बात की रिर्पोट लिखेंगे तो फिर कार्यवाही भी करनी पड़ेगी उन्हें। न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी। अफसर अपने बड़े आका की पांयलागी में ही पूरा दिन खोटा करता है। कौन-सी फाइल कैसे और कहाँ तक सरकानी है नेता के इशारे के बिना अफसर कोई फैसला नहीं लेता।

अब अफसर भी क्या करें। शायर सच कहता है--'एक के बाद एक चला आता है खुदा बनकर, दिल ने उकताकर कहा कि खुदा कोई नहीं।' हर तीसरे दिन सरकार बदल जाती है, मंत्री बदल जाते हैं, ऐसे में कानून को ताक पर रखकर केसों का निपटान करना कितना मुश्किल है, यह बात शरीफ अफसर ही जानते हैं। तटस्थ रहने वाले अफसर आजकल बहुत कम रह गए हैं। किसी को मनपसन्द तैनाती चाहिए तो किसी को दो नम्बर की कमाई। ऐसे में फाइलों की परवाह किसे है।

खैर, राज्य सरकार ने अब फैसला लिया है कि लाल-फीताशाही का असर घटाने के लिए इन फाइलों को निबटाने का काम वह एक प्राइवेट एजेंसी को सौंपने वाली है। वैसे इसमें सरकार की दोगली नीति स्पष्ट है। वह चाहे तो सारे फैसले लागू हो जाएं मगर इसने अपने मनपसन्द फैसले भी तो लेने हैं। जनता का भला कौन देखता है इन दिनों।

इन फाइलों के लिए जिम्मेवार प्रशासनिक अधिकारी कुछ सालों से इन फाइलों पर 'अर्जेंट', 'तुरंत', 'अभी लाएं' आदि जैसी टिप्पणियां तथा पताकाएं लगाने से चूकते रहे जिसके कारण ऐसी स्थिति बनी। वैसे अनुभव की बात तो यही है कि सचिवालय से किसी फाइल को पास करवाना बहुत ही टेढ़ी खीर है। लोगों को बजट, अनुमोदन, नीति, कार्यविधि सरीखे हजारों अवरोधक पार करने होते हैं।

सरकार का इरादा बिल्कुल साफ और नेक है। वह चाहती है कि ये फाइलें कुछ गति पकड़ लें। इनमें से बहुत-सी फाइलें ऐसी हैं जो पिछले सरकार के मंत्रियों के फैसलों से सम्बन्धित हैं। पूर्ववर्ती सरकार द्वारा लिए गए फैसलों का क्या करना है, यह तय करने में ज्यादा वक्त लग रहा है। यह बात तो तय है कि उनका कुछ नहीं करना मगर कानून और विपक्ष का मुंह भी बन्द करना है। सरकार ने आदेश जारी किए हैं कि अफसर और मंत्री लोग इन फाइलों के बारे में कोई ढीला नजरिया न रखे बल्कि उन पर आवश्यक निर्णय जरूर लें।

इस अटपटी स्थिति के अलावा सचिवालय के बाबू और अफसर सचिवालय भवन में बढ़ते चूहों, दीमकों और कीड़ों से बहुत परेशान हैं। कितनी हैरानी की बात है कि सरकार को एक-एक चूहे को मारने के लिए लगभग साठ रूपए खर्च करने पड़े। पिछली सरकार की ये बदकिस्मत फाइलें चूहों को इतनी भा गई हैं कि किसी भी चूहेमार दवा से बने बिस्कुट को उन्होने मुंह नहीं लगाया।

चूहेदानियों के दम पर कुछ चूहे जरूर पकड़ में आए। फिर किसी सयाने अफसर के सुझाव पर यहाँ कुछ बिल्लियां पाली गई। बिल्लियां थोड़ी कमजोर थी और बाहर से आई थीं, सो चूहों का पीछा करने में वे कई दिन झेंपती-घबराती रहीं। चूहे खूब तकड़े थे। सो कई बार तो बिल्लियां ऐसे मोटे चूहों से दहशत खाती थीं।

फाइलों की स्थिति इतनी बदतर हो गई हैं कि अफसर उन्हें सरकने नहीं देते और नीचे चूहे उन्हें दिन-रात कुतर रहे हैं। पिछली सरकार के फैसलों से इस सरकार के चहेतों को क्या मतलब? अतः सरकार पर दबाव बढ़ता जा रहा है कि कुछ दिन इन फाइलों की अनदेखी की जाए। ये अपने-आप ही चूरा-चूरा हो जाएंगी। अफसर उन्हें मंजिल तक पहुँचने नहीं देंगे और चूहे उन्हें अन्दर से खोखला कर ही देंगे। सम्राट अकबर ने भी अनारकली से यही कहा था-- सलीम तुम्हें मरने नहीं देगा और हम तुम्हें जीने नहीं देंगे।

इन लाखों फाइलों को न तो सम्भालते बनता है और न ही फेंकते बनता है। अफसर तो चढ़ते सूरज को नमस्कार करते हैं मगर साथ ही उन्हें यह खटका भी लगा रहता है कि दूसरा राजनैतिक दल फिर सरकार में आ गया तो फिर उससे मधुरता कैसे बनाऐंगे। इसलिए वे चाहते तो हैं कि इन फाइलों का कुछ तो निबटारा हो मगर मंत्री अपने सियासी विरोधियों की बेकार की बातें क्यूं पूरी करने लगे भला।

ऐसे में उनकी लोकप्रियता का ग्राफ नीचे आ जाएगा। मुश्किल से तो ताजपोशी हुई हैं और ऐसे में घोड़ा घास से यारी करे तो खाए क्या और अपने आकाओं को खिलाए क्या? नैतिकता, लोकतंत्र व देशहित अपनी जगह सही है मगर कितना रगड़ा खा-खाकर सरकार में आए हैं और अब पिछली सरकार की बेसिर-पैर की बातें पूरी करें। इतने भी अहमक नहीं हैं ये। शायर सच कहता है, 'रात को आदमी जिबह करके, वे सुबह चींटियां चुगाते हैं।'

5/2डी रेल विहार मंसादेवी
पंचकुला-134109 हरियाणा

www.terapanthinfo.com

रंग 'बदरंगा' परजातंतर

आशीष वशिष्ठ

वर्तमान में प्रचलित शासन प्रणालियों और व्यवस्थाओं में से प्रजातांत्रिक प्रणाली को सर्वश्रेष्ठ शासन पद्धति माना जाता है। प्रजातांत्रिक प्रणाली के गुणों, विशेषताओं, पवित्र संकल्पों, उदार भावनाओं, कल्याणकारी प्रारूप को देखते हुए विश्व के सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका से लेकर एशिया के छोटे से देश नेपाल तक में प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था का परचम लहरा रहा है। प्रजातांत्रिक प्रणाली के इन्हीं गुणों को देखते हुए स्वतंत्रता मिलने के उपरांत हमारे कर्णधारों ने प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था को प्राथमिकता दी थी। हमारा राष्ट्र विश्व का सबसे बड़ा और सफल प्रजातांत्रिक देश है। जितनी विविधता और विभिन्नता हमारे प्रजातंत्र में देखने को मिलती है उतनी विश्व के किसी अन्य प्रजातंत्र में देखने को नहीं मिलती है। विश्व के श्रेष्ठ संविधानों के अध्ययन और शोध के पश्चात् देश के संविधान का निर्माण किया। लेकिन जिस पवित्र भावना, संकल्प, निश्चय और विचार को लेकर संविधान का निर्माण किया गया था, वो भावना और विचार आज पूर्णतः तिरोहित हो चुके हैं और हमारा रंग बिरंगा प्रजातंत्र लूटतंत्र, गनतंत्र और भ्रष्टतंत्र में परिवर्तित हो चुका है। स्वतंत्रता को हमने स्वच्छंदता समझा और मौलिक अधिकारों के नाम पर खूब लूट-खसोट मचाई। मौलिक अधिकारों के साथ-साथ रहने वाले कर्त्तव्य आम जीवन से गायब हो चुके हैं और जिनके कंधों पर देश चलाने की जिम्मेदारी थी वही नियम, कानून और व्यवस्था भंग करने में शान समझने लगे। परिणामस्वरूप देश उन्नति के बजाए अवनति के मार्ग की ओर प्रशस्त है, और लोकतंत्र में लोक की हालत बड़ी दयनीय, शोचनीय और चिंतनीय है। देश की बिगड़ती दशा और दिशा पर विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका खामोश है और रोजमर्रा के छोटे-मोटे कामकाज से लेकर देश निर्माण के बड़े-बड़े कामों में भ्रष्टतंत्र और 'गन'तंत्र का बोलबाला है।

बदलते और तेजी से बीतते समय के साथ-साथ हमारे प्रजातंत्र ने इस लंबे और कष्टकारी सफर में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। लेकिन जैसे-जैसे हमारा प्रजातंत्र बूढ़ा होता जा रहा है उसका ताना-बाना भी बिगड़ता जा रहा है। संविधान की मूल भावना और प्रजातांत्रिक प्रणाली के गुण अब इतने दागदार हो चुके हैं कि एक बार देश की जनता ये सोचने लगी है कि देश में प्रजातांत्रिक व्यवस्था के स्थान पर 'आर्मी रूल' हो जाए तो बेहतर है। एक-एक करके जिस प्रकार लाखों-करोड़ों रुपये के घोटालों ने आम आदमी का विश्वास ही इस व्यवस्था और प्रणाली से डिगा दिया है। देश की जनता मन ही मन ये जरूर सोचती है कि आखिरकर प्रजातंत्र में प्रजा को राजा क्यों कहा जाता है जबकि उसके पास वोट देने के अलावा कोई अधिकार है ही नहीं। और उसकी वोट की ताकत से कोई व्यक्ति इतना अधिक शक्तिशाली कैसे हो जाता है कि वो पूरे देश को अपनी बपौती या फिर खानदानी संपत्ति समझ लूटने, खाने लगता है। प्रजातंत्र में तो प्रजा का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, बौद्धिक, शारीरिक स्तर ऊंचा और श्रेष्ठ होना चाहिए, लेकिन हमारे यहाँ तो विषम दशा है। प्रजातंत्र में प्रजा केवल एक वोट बन कर रह गई है। देश के कर्णधारों ने आदमी-आदमी में बंटवारा कर डाला है। जितने भेद, मतभेद, विषमता, बंटवारा देश में स्वतंत्रता से पूर्व नहीं था जितना आज हमारे देश में तुच्छ और स्वार्थी राजनीति और नेताओं के कारण हो चुका है। वोट बैंक की ओछी और तुच्छ राजनीति ने देश की शांति, भाईचारे, आपसी सदभाव, प्रेम, साधुवाद, सहृदयता, समता, परोपकार जैसे अनेक मानवीय और सभ्य समाज के वांछित एवं प्रधान गुणों का गला घोंट डाला है। स्वतंत्रता पूर्व हिन्दू-मुसलामान वर्तमान पाकिस्तान में हंसी-खुशी रचते-बसते थे। लेकिन आज एक अखण्ड भारत के अंदर ही अंदर कितने छोटे-छोटे खण्ड और पाकिस्तान बन चुके हैं, इसका आंकड़ा किसी सरकारी या गैर-सरकारी एजेंसी या संस्था के पास उपलब्ध नहीं है।

देश के गणमान्य राजनीतिक नेताओं, मनीषियों तथा देशभक्तों ने मिलकर अखिल भारतीय कांग्रेस के सन 1929 के लाहौर अधिवेशन में 26 जनवरी को सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास किया था कि 'पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करना ही हमारा ध्येय है।' पवित्र दरिया रावी के किनारे पर समस्त देशभक्तों ने यह प्रतिज्ञा ली थी। तभी से यह दिन स्वराज्य दिवस के नाम से देश के कोने कोने में मनाया जाता है। सन् 1950 में जब भारतीय संविधान बनकर तैयार हो गया, तब यह विचार किया गया कि किस तिथि से इसे भारतवर्ष में लागू किया जाये। अनेक विचार-विमर्श के पश्चात् 26 जनवरी ही उसके लिए उपयुक्त तिथि समझी गई। अतः 26 जनवरी 1950 को भारतवर्ष संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न गणतंत्र घोषित कर दिया गया। सवंधिान की उद्देशिका स्पष्ट शब्दों में यह घोषित करती है कि संविधान के अधीन सभी प्राधिकारों के स्रोत भारत के लोग हैं। इसका अर्थ यह है कि जनता के द्वारा जनता के लिए बनाई गई सरकार। लेकिन इन छः दशकों में प्रजातंत्र की मूल भावना को इस तरह कुचल-मसल दिया गया है कि प्रजातंत्र शब्द उपहास का पात्र बन गया है। आज हमारे देश में प्रजातंत्र वो अपाहिज व्यवस्था और प्रणाली बन चुका है जिसकी बैसाखिया देश की जनता नहीं बल्कि जनता के वो चंद तथाकथित प्रतिनिधि हैं जो अपनी इच्छा और लाभ के लिए देश का संविधान रचते, पढ़ते, और अपनी तरह से पुर्नभाषित करते रहते हैं।

www.terapanthinfo.com

और प्रजा वो दीन-हीन प्राणी है जो चुपचाप वोट देने के बाद किसी भी स्तर पर अपना मुंह खोलने की शक्ति और सामर्थ्य नहीं कर सकती है क्योंकि वोट देने के बाद उसके पास कोई ताकत उसका संविधान उसे देता नहीं है और जिन्हें संविधान प्रदत्त शक्तियां प्राप्त हैं वो इसका प्रयोग देश, समाज व प्रजा के हित में करने की बजाए निजि हितों को साधने में खुले आम कर रहे हैं उन्हें इसकी चिंता बिल्कुल भी नहीं है कि देश की जनता, गरीब, किसान, महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग किस दशा में जीवन यापन कर रहे हैं। क्यों देश में बालश्रम, बालविवाह रोके नहीं रुक रहा है। दहेज का दानव यहाँ-वहाँ स्वच्छंद विचरण कर रहा है, किसान और बेरोजगार आत्महत्या करने को विवश हैं, महिलाओं के प्रति होने वाले घरेलु हिंसा और अत्याचार अनवरत रूप से जारी हैं, देश के बुजुर्ग घर व बाहर अपने को एकाकी, असुरक्षित महसूस कर रहे हैं, रूढ़ियां, असंख्य कुप्रथाएं, अनाचार, अत्याचार, कानून का उल्लंघन देश में आम बात है। पर्यावरण, वन्य जीवों, जंगलों, पहाड़ों व देश के अन्य प्राकृतिक संसाधनों व स्रोतों का दिनों-दिन हो रहा विघटन आदि-आदि अनेक ऐसी समस्याएं है जो इस प्रजातांत्रिक देश को आजादी के 63 वर्षों के उपरांत भी भोगनी पड़ रही हैं लेकिन हमारे कर्णधार कान में तेल डाले बैठे हैं। फाइव स्टार सुविधाएं भोगने वाले हमारे प्रतिनिधि और जनप्रतिनिधि वास्तिवक भारत की हकीकत भी नहीं जानते हैं। चुनावों के समय ही उन्हें आम भारतीय की याद आती है। और हर बार नई नौटंकी कर वो अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं और फिर हर बार की भांति भोली-भाली प्रजा को उसके हाल पर घुट-घुट कर अभावों में मरने के लिए छोड़ देते हैं। भारत की आत्मा गांवों, छोटे कस्बों और शहरों में रमती-बसती है, लेकिन असल भारत में झांकने की हिम्मत कोई नहीं करता है उनके इण्डिया और हमारे भारत में भारी अंतर है।

भ्रष्ट देशों की सूची में हमारा स्थान जहाँ काफी ऊपर है वहीं मानव सूंचकाक के क्रम में हम निचले पायदान पर खड़े हैं। हमारे कर्णधारों और संस्थापकों ने ऐसे प्रजातंत्र की कल्पना तो नहीं की थी। जो दशा और दिशा वर्तमान में संविधान के रक्षक और कर्णधार हमें दे रहे हैं वो प्रजातंत्र की मूल भावना और स्वरूप से खिलवाड़ ही तो है। प्रजातंत्र का सीधा-सादा और सरल अर्थ तो प्रजा का शासन होता है लेकिन हमारे प्रजातंत्र में तो प्रजा हाशिये पर ही खड़ी दिखाई दे रही है। प्रजा तो तिल-तिल कर मरने को विवश है। इन साठ वर्षों में और कुछ चाहे न हुआ हो लेकिन भारत और इण्डिया नाम के दो देश एक ही देश के भीतर जरूर बने हैं, एक ही हिन्दुस्तान में सैंकड़ों पाकिस्तान का निर्माण अवश्य हुआ है, धर्म, भाषा, जात-पात का भेदभाव, क्षुद्र राजनीति, आपसी मतभेद सिर लांघने लगे हैं। प्रजातंत्र में प्रजा मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं और रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पीने का पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, सुरक्षा आज भी देश के वो अहम मसले हैं जिनके के लिए हम आज से सौ साल पहले भी युद्ध लड़ा करते थे।

प्रजातंत्र में प्रजा को अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक होना चाहिए लेकिन हमारे कर्णधारों ने प्रजातंत्र को अपनी सुविधा के अनुसार ऐसे चलाया कि देश की जनंसख्या के एक बड़े भाग को संविधान प्रदत्त अधिकारों और कर्त्तव्यों की जानकारी ही नहीं है। और हमारे प्रतिनिधि भी यही चाहते हैं कि प्रजा अधिकारों और कर्त्तव्यों से अनभिज्ञ रहे ताकि वो प्रजा की आँखों में सरेआम धूल झोंक सकें और वो मनमुताबिक राज कर सके और जनता का शोषण जारी रख सकें। इसी क्रम में कभी भी कोई राजनीतिक दल अधिक से अधिक संख्या में वोट डालने के लिए प्रजा से आग्रह नहीं करता है क्योंकि उन्हें अपनी वास्तविकता का भली-भांति ज्ञान है कि अगर पढ़ी-लिखी प्रजा वोट की ताकत को पहचान जाएगी और वोट डालने चली आएगी तो उनकी दुकान उसी दिन बंद हो जाएगी। इसलिए प्रजा जब तक अंधेरे में है, अशिक्षित है, अभाव और गरीबी में जीवन-यापन कर रही है, अपने कानूनी अधिकारों और कर्त्तव्यों से अनजान है तभी तक उनकी सत्ता कायम रहेगी। इसी दुर्भावना और कुनीति ने प्रजातंत्र के परम पुनीत उद्देश्यों, सिद्धांतों और संकल्पों को चकनाचूर कर दिया है। लेकिन परिवर्तन तो प्रकृति का अपरिवर्तनीय नियम है, और धीरे-धीरे ही सही परिवर्तन की सुगंध आने भी लगी है। बिहार के चुनावों मे जिस प्रकार प्रजा ने तुच्छ, ओछी और घटिया राजनीति करने वाले नेताओं और दलों को सबक सिखाया है वो काबिलेतारीफ है। प्रजा ने अपने निर्णय से अपने मनोभावों को प्रदर्शित किया है कि अब कोई लंबे समय तक उनको अंधेरे और अज्ञान की काली कोठरी में नहीं रख पाएगा। ये शुभ संकेत है कि प्रजा अपना भला-बुरा अब थोड़ा-बहुत ही सही समझने तो लगी है। और जिस दिन प्रजा जाग जाएगी और अपने अधिकारों के साथ ही साथ कर्त्तव्यों को भी भली-भांति समझ लेगी उसी दिन प्रजातंत्र की सार्थकता सिद्ध हो जाएगी और प्रजातंत्र की विजय पताका भी लाल किले की प्राचीर पर लहराने लगेगी।

26 जनवरी 1950 को भारतवर्ष संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न गणतंत्र घोषित कर दिया गया। सवंधिान की उद्देशिका स्पष्ट शब्दों में यह घोषित करती है कि संविधान के अधीन सभी प्राधिकारों के स्रोत भारत के लोग हैं। इसका अर्थ यह है कि जनता के द्वारा जनता के लिए बनाई गई सरकार।

स्वतंत्र पत्रकार, बी-96,
इंदिरा नगर, लखनऊ-226016 (उ.प्र.)

भारतीय गणतंत्र : एक आत्मप्रेक्षा

प्रो. प्रेममोहन लखोटिया

तिथि-गणना के अनुसार 26 जनवरी 2011 के दिन भारत अपनी स्वतंत्रता के 63वें साल के मध्य में अपने सार्वभौमिक गणतंत्र के 61 वर्ष पूरे करेगा। ऊंचे विशाल गगन में फहराता हमारा राष्ट्रीय ध्वज जहाँ एक ओर हमारी महत्त्वाकांक्षा का संकल्प हमें स्मरण कराएगा, वहीं दूसरी ओर हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक तथा आत्मसात की हुई संवैधानिक आस्था की प्रेक्षा के लिए प्रेरित करेगा।

जब 61 वर्ष पूर्व हमने हमारे संविधान के जरिए गणतांत्रिक एवं लोकतांत्रिक प्रशासन प्रणाली को अंगीकार और आत्मसात् करने का निर्णय किया था, तब हमने यह भी स्वीकार किया था कि जब 'लोकतंत्र में कर्त्तव्यपरायणता नहीं होती, अनुशासनबद्धता नहीं होती, तो लोकतंत्र का देवता विनाश अथवा मृत्यु को प्राप्त हो जाता है'।[1] लोकतंत्र में प्रशासक जनता ही होती है। जनता के द्वारा निर्वाचित व्यक्ति ही शासन संभालता है। जनता के द्वारा ही जनता का शासन होता है'।[2] जनता सरकार को चुनती है और ऐसी सरकार की 'स्थिरता' और 'स्वच्छता' ही किसी लोकतंत्र को विकास के सही मार्ग पर ले जाती है।

61 वर्षों में बहुपक्षीय और विलक्षण प्रगति के बावजूद इसी मूल्य बोध के शनैः शनैः होते क्षरण का इतिहास रचा गया है पिछले कुछ दशको में प्रजा और राजा दोनों के द्वारा ही--मेरी धारणा में समान रूप से। अब हम एक अनहोने से द्वंद्व के सम्मुख बेबश से खड़े हैं। भ्रमित हैं कि इस दिन जश्न मनाएं कि खोई हुई संस्कृति या गंवाई हुई राष्ट्र-चेतना की मातमपुर्सी करें।

ऐसे में 61 वर्ष की समाप्ति पर हम एक त्रिपथ पर खड़े हैं। हम उत्फुल्ल भी हैं और स्तब्ध भी। अभी-अभी गुजरे वर्ष के लाभ-हानि के ब्यौरे हमारे सब प्रकार के संवाद और समाचार सूत्रों ने प्रस्तुत किए हैं। **61वें वर्ष में अपनी प्रगति के चरम आयामों पर पहुँचने की विशिष्ट उपलब्धि की है हमारे देश ने; हमारे देश ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी श्रेष्ठता और समुज्ज्वल भावी संभावना की स्थापना कर ली है। तब भी हम आंतरिक उलझनों के विकट व्यूह में घिरे हैं। दबी जुबान से लोग मानने को तय्यार हैं कि गणतंत्र का 61वां वर्ष विशेष रूप से हर प्रकार के षड़यंत्र के हादसे झेलते हुए हमारी राष्ट्रीय लज्जा का वर्ष बना है। अब हमारे पास अतीत का महान गौरव भी है, भावी की प्रदीप्त और उल्लास प्रेरक आश्वस्ति है किन्तु उद्विग्न, अशान्त और उलझनों से लिपटा वर्तमान भी है। यह 'आम आदमी' के लिए शर्मनाक है, दर्दनाक है; उसके अंग-अंग पर घपलों ओर घोटालों के घाव हैं।**

भारतीय गणतंत्र की स्वर्ण-जयन्ती के प्रारम्भ वर्ष के अवसर पर एक मंथन प्रधान प्रकाशित लेख[3] से मैं यहाँ कुछ उद्धृत करना चाहूँगा।

- **इस बात पर गर्व करना बहुत आसान है कि भारत में गणतंत्र की परम्परा बहुत पुरानी है लेकिन इस बात का जबाब देना बहुत मुश्किल है कि फिर क्या कारण है कि एक लोकतांत्रिक देश के रूप में हमारी आत्मछवि बहुत ही धूमिल है।**
- **जिस अतीत पर हम गौरवान्वित होते हैं वह या तो हमारा स्वतंत्रता संघर्ष है जिसकी परम्परा का कोई विकास न हो सका या फिर मध्य-युग के पूर्व का भारत जिसका कोई दस्तावेजी इतिहास नहीं मिलता।**
- स्वतंत्रता के बाद से हमारी सामाजिक रचनात्मकता एवं सांस्कृतिक गत्यात्मकता की उपलब्धियां ऐसी नहीं कही जा सकती जिसके बारे में हम उत्कृ ष्टता के भारत के आध्यात्मिक पैमाने पर प्रफुल्लता के अधिकारी बनें।

अब लगता है कि तकनीकी, आर्थिक और कूटनीति के क्षेत्र में हमारे विकास को लेकर हम राजनैतिक स्तर पर संतुष्ट या असन्तुष्ट होने की आदत से गहरे घिर चुके हैं। सरकार की तरफ़ होते ही (जिन्हें पिछले दो दशकों में हमने उलट पुलट और सिक्का उछाल पद्धति में आजमा कर देखा है) हम स्व-उत्सवी खेमे में आ जाते हैं और विपक्ष से प्रभावित होते ही हम आतंकी आलोचना के वशीभूत हो जाते हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में लोकतंत्रीय अनुशासन और दायित्व की परम्परा हम सबने समान रूप से ही तजी है--चाहे वे हमारे सांसद हो, विधायक हों, हमारे न्यायकर्ता हों, संवादतंत्र के खोजी बड़बोले हों, चाहे वे हमारे सभाकक्षों में विवाद करने वाले भद्र लोक हों या गांव की चौपाल पर बैठ कर चिन्ता करने वाले हों। अब हम सभी वायुयानों, आधुनिक बाजारों, डिजिटल दृश्य श्रोतव्य संवादों और उलझनों की रैम्प पर ठुमकती नवीनतम संसाधनों की सौन्दर्य-साम्राज्ञियों के दीवाने बनना पसंद करते हैं हमारे साधु संत समेत, क्योंकि उन्नति के ये उपादान ही हमारे विकास और वर्तमान की खुशहाली के प्रमाण-पत्र बांट देते हैं। ऐसे में पूरे सत्र संसद न भी चले तो 'आम आदमी' अपनी रोटी जलाकर क्यूं खाए? स्थितप्रज्ञता के देश में यह नवीनतम मिसाल क्यूं खोए?

हमने उदारीकरण चाहा, भूमंडलीकरण का सक्रिय अनुभव चाहा, हर क्षेत्र में उन्मुक्तता चाही। उस चाह में हमने अपने सपने बदल लिए, अपने संकल्प बदल लिए, अपने पुरुषार्थ बदल लिए। उसी चाह में हमने हमारे संविधान को कोसा--

इतना कोसा कि शताधिक बार बदल डाला, और इतना बदला कि अब प्रणीत अनुशासन तार-तार हो गया। देश की मनोहारी विविधता साम्प्रदायिक (चाहे पांथिक हो या वर्गिक हो) खंडों के प्रति वफ़ादार होने लगी। खंडों के अखंड बने रहने की प्रक्रिया में कई बार हमारी अखंडता खंड-खंड होती सी दीखने लगी।

बाहरी आतंकों के अलावा हमने भीतरी आतंक की त्रासदी का अनुभव बहुत बार किया है। गनीमत है कि अभी प्रान्त ही बंटे हैं और राष्ट्र अभी तक एक है। कम से कम कुछ गद्दार आवाजों को छोड़ कर एक रहने की हमारी तन्मयता अब भी सजीव है। यही रही है हमारे गणतंत्र की असली शक्ति जिसे हमारा जन गण मंगलदायक भारत भाग्य विधाता सर्वदा अक्षय रखे।

हमने जो चाहा, उसकी कुछ कीमतें थी जिनको हम आसानी से भूलते रहे और कड़वाहट में विरोधी स्वर उछालते रहे। उदारीकरण और भूमण्डलीकरण की अधीरता में हम यह भूल गए कि जहाँ विश्वभर के लोग होंगे, उनका निवेश होगा, वहाँ मुद्रा मुक्त ही नहीं, विशाल भी होगी। पुराने घरेलू नियम बदलने की अत्याज्यता भी होगी। उत्पादन या विक्रय योग्य वस्तुओं की उपलब्धता का समीकरण धीमा और अन्य घटकों के आधार पर होगा। हमारे प्राकृतिक और भौतिक संसाधनों का दोहन होगा और पर्यावरण पर प्रदूषण आघात भी होगा।

उपभोक्तावादी संस्कृति में विक्रय की लागत अधिक होगी। दाम भी बढ़ेंगे और धन की गम्यता विवरण रखे जाने की क्षमता से अधिक होगी। इसका परिणाम हमने पिछले दो सालों में खूब साफ़-साफ़ देखा है। जब विकास-सम्पन्न देशों में अर्थ-व्यवस्था औंधे मुंह पड़ी हो, तब भारत का स्थिरता से खड़े रहना एक अजूबा ही है पर 'आम आदमी' का नाम लेकर 'मौका-परस्त राजनीतिवाले' हंगामे पर आमादा रहते हैं। ऐसे में हम भ्रमित होकर विकास और विनाश के द्वंद्व झेलें या उबरें - यह हमारी गणतांत्रिक परिपक्वता की बात है। अभी शायद हम वांछित स्तर तक परिपक्व नहीं हुए।

वैसे सत्य यह है कि भूमंडलीकरण और तकनीकीकरण तथा नव-शिक्षा विधान के सफलतम प्रायोजन का साक्ष्य विश्व में अब तक कहीं नहीं दिखा। ये अपने सांस्कृतिक मूल से कटने के उपादान बन कर अनेक प्रकार के सामाजिक विघटन के स्रोत बनते रहे हैं। भारत लम्बे समय से एक सांस्कृतिक मूल्य-बोध का हिमायती रहा है। यहाँ एक और दुर्गमता है।

हमारे धर्माधिकारियों ने इस सांस्कृतिक मूल्य-बोध को बहुधा अपनी पंथानुग्रहीता के कारण संकीर्ण भी बनाया है। इस कारण हमारे सदभाव और हमारी सहिष्णुता का भंजन हुआ है और वैमनस्य बढ़ा है। नवाचार को ग्रहण करने की सभ्यता और संस्कृति में कुछ अंतर है। हम इस विषय पर समुचित नीति का निर्धारण नहीं कर पाए हैं। यह अनेकान्त में समन्वय की स्थिति डांवाडोल होती हुई दिशा लेती सी दीख तो रही है। जहाँ हमारा सारा ध्यान संसाधन सम्पन्नों पर केन्द्रित होता रहा है, वहाँ हमें हमारे हितकारी मनीषियों को आदर देना सीखना होगा। यह नितान्त आवश्यक है कि हम आधुनिकता के जिस किसी भी धरातल पर उच्चस्थ दीखें, हमें नैतिक मूल्यों वाले आचरण के साथ ही विकास को अपनाना चाहिए और गणतंत्र हमारा सामाजिक एवं प्रशासनिक संविधान ही नहीं है, हमारा सच्चा आत्म-संविधान भी होना चाहिए। जब तक हमारा आचरण शुद्ध और नैतिक नहीं होगा, कोई भी प्रकार का संविधान या लोकतंत्र संचालन का उपादान हमारे काम नहीं आने का।

भारतीय गणतंत्र के आगे एक और विपद संभावना आ खड़ी हुई है जो दिनों दिन व्यापक ही हो सकती है यदि हम अब भी सावचेत नहीं हुए। हमने बराबरी की होड़ में चमक-धमक वाले शहरीकरण को विकास यात्रा का ध्येय सोपान बना लिया है। हमारी कृषि भूमि न्यूनतम होती जा रही है, हमारा आकाशी और मुक्त परिवेश ऊंचाई तक आछन्न होता जा रहा है, गति की आपाधापी में ज़मीन पटने लगी है। हम बच्चों की संख्या पर निर्मम होने के कग़ार पर हैं पर वाहनों की संख्या के लिए ''शत् वाहन सम्पन्नाः भव'' के आशीर्वाद के लिए लालायित। अब एक गणना यह भी है कि अगले 40-50 साल में यदि हम अपनी जनसंख्या के आधे भाग के लिए ही विवाह-संस्था को सीमित कर दें तो भी हमारे पास खाद्यान्न का अभाव हो सकता है। ग्राम्य-जीवन शायद पुरा ऐतिहासिक अभिलेख बन जाए। जलवायु और वातावरण की चिन्ता जग-व्यापी बन चुकी है और अब हमें भी समय रहते ही सचेत होना पड़ेगा। संभव है कि या तो हम नई कारगर तकनीकें ईज़ाद करें या नुकसानदेह अब तक अपनाई गई तकनीकों का मोह त्यागें। गत वर्ष में भारत ने विश्व को एक अच्छा संदेश दिया है और हमें यह उपलब्धि बनाए रखनी है।

हमारे गणतंत्र के दो शुभ संकेत उल्लेखनीय हैं क्योंकि वे हमें हमारी सच्ची प्रगति के प्रति आशावान रखते हैं। एक है हमारी सुधरती चुनाव प्रक्रिया जिसमें कार्य-निष्पादन का आधार पहली बार गत वर्ष में प्रखर हुआ। दूसरा संकेत है नारी की इयत्ता का। इस दिशा में भारत गति के साथ सार्थक होता दीख रहा है। शिक्षा का प्रसार हमारा एक अहम् साधन बना है।

शिक्षा की भौतिक गुणवत्ता में चारित्रिक सुगठन और राष्ट्रीय चेतना के प्रकरण संयुत् करने के प्रयास यदि हम कारगर बना पाए तो हमारे गणतंत्र की अगले कुछ दशकों में अभिभूत कर देने वाली प्रगति हमें हमारे वर्तमान के नैराश्य से निकाल कर भावी के गौरव केन्द्र में अवश्य ला खड़ा करेगी। ऐसी शुभास्था के साथ भारत और भारतीयों का वंदन!

संदर्भ :

1, 2. स्वस्थ लोकतंत्र के चार आधार, आचार्य महाश्रमण, युवादृष्टि, दिसम्बर 2010

3. भारतीय गणतंत्र का भविष्य, दैनिक भास्कर, जयपुर, 24 जनवरी, 1999

स्मृति, 141/ए, गणेश नगर,
इस्कॉन रोड, मानसरोवर,
जयपुर 302020 (राजस्थान)

बयानों से उपजते विवाद

नरेन्द्र देवांगन

उनकी तो जुबान फिसल गई और देश में हंगामा मच गया। अक्सर नेताओं के कई भड़काऊ बयान देश की जनता को भयभीत कर देते हैं। समय-समय पर अनेक नेता अपना निजी हित साधने के लिए ऐसे भड़काऊ बयान दे देते हैं, जिससे लोग तनाव में आ जाते हैं और अपना आपा खो देते हैं। अक्सर वे सार्वजनिक सम्पत्ति को अपना निशाना बनाते हैं और कई बार प्रदर्शन हिंसक रूप ले लेता है। हमारे देश में ऐसे आंदोलनों से निपटने में राजस्व का एक बड़ा हिस्सा खर्च हो जाता है। उस राशि से लाखों लोगों के लिए रोजी-रोजगार की व्यवस्था की जा सकती है, अनेक बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराई जा सकती है। लेकिन दुर्भाग्य तो यह है कि इस बात को समझते हुए भी राजनीतिक दल इस प्रवृत्ति पर रोक लगाने का कोई गंभीर प्रयास नहीं कर रहे। एकदूसरे पर बयानों का स्तर कई बार इतना छिछला हो जाता है कि जनता खुद शर्म से पानी-पानी हो जाती है। कभी जात-धर्म के तो कभी वोट के नाम और कभी क्षेत्र-भाषा के नाम पर बयानबाजी होती है। उसके बाद विरोध-बंद और प्रदर्शन। आखिर एक्शन का रिएक्शन भी तो होना है। हाल ही में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पूर्व प्रमुख के.एस.सुदर्शन ने कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी पर इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की हत्या का षड़यंत्र रचने का आरोप लगाया। सुदर्शन ने सोनिया को सीआईए की एजेंट भी बताया। सोनिया को अपनी मां की अवैध संतान तक कह दिया। बयान पर बवाल मचा तो विरोध में कुछ लोग अदालत पहुँच गए तो कुछ ने विरोध प्रदर्शन किया। कुल मिलाकर बयान ने पूरे देश की जनता को अशांत और विचलित कर दिया।

आज से नहीं पिछले कई बरसों से हिंदुस्तान में बयान एक अहम हथियार के रूप में इस्तेमाल हो रहा है। भड़काऊ होने के बाद भी जब कोई कार्रवाई न हो तो हौसला बढ़ेगा ही और यही हो भी रहा है।

हाल में न्यायपालिका ने इस दिशा में जरूर पहल की है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर के.टी.थॉमस कमेटी का गठन हुआ, जिसका साफ कहना है कि नेता लोगों को भड़काऊ बयान के माध्यम से हिंसक कार्रवाई के लिए भड़काते हैं और खुद नदारद हो जाते हैं। इसलिए सार्वजनिक सम्पत्ति के नुकसान के लिए इन नेताओं को सजा देना जरूरी है। कमेटी ने इसके लिए 'प्रिवेंशन ऑफ डैमेज टू पब्लिक प्रॉपर्टीज एक्ट' में संशोधन की सिफारिश की। कुछ राज्य इस मामले में नियम बनाने की तैयारी में लगे हैं। ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि जो सार्वजनिक नुकसान पहुँचाए, वह उसकी क्षतिपूर्ति भी करे। अगर इस तरह के मामलों में दोषियों को आर्थिक दंड देने का सिलसिला शुरू हुआ तो लोग खुद ही इस तरह की हरकतों से बाज आएंगे। लेकिन इसके लिए राजनीतिक नेतृत्व और समाज में भी दृढ़ इच्छाशक्ति की जरूरत है।

अमेरिका में 11 सितंबर, 2001 को हुए आतंकी हमले की बरसी पर कुरान जलाने की धमकी देने वाले फ्लोरिडा चर्च के पादरी टेरी जोन्स को 1.80 लाख डॉलर का जुर्माना अदा करना पड़ेगा। दरअसल अमेरिकी प्रशासन ने तय किया कि उनकी धमकी से उत्पन्न तनाव के मद्देनजर की गई सुरक्षा व्यवस्था का खर्च उनसे वसूल किया जाए। जोन्स को यह बात बुरी लगी। संभव है कई और लोग उनसे पैसे वसूले जाने के निर्णय को गलत ठहराएं, पर जोन्स को अपनी जवाबदेही स्वीकार करनी चाहिए। उनके एक निर्णय ने उनके मुल्क में ही नहीं, पूरी दुनिया में तनाव पैदा कर दिया। आखिरकार उन्हें अपना फैसला वापस लेना पड़ा, लेकिन अपनी जिद के चलते जोन्स ने एक बड़े वर्ग के जीवन को कुछ समय के लिए संकट में डाल दिया। उनके कारण समाज और पुलिस प्रशासन को भारी परेशानी उठानी पड़ी। इसकी भरपाई उन्हें ही करनी चाहिए।

केंद्रीय गृहमंत्री पी. चिदम्बरम ने पिछले दिनों कहा था कि भड़काऊ भाषण देने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने यह बात अलगाववादी नेता सैयद अली शाह गिलानी व अन्य नेताओं की ओर से दिल्ली में आयोजित सेमिनार में कथित भड़काऊ भाषण के संदर्भ में कही थी। उन्होंने कहा कि इसकी पुलिस ने समीक्षा शुरू कर दी है। चिदम्बरम ने एक बयान में कहा है कि भड़काऊ बयान देने वाले सभी नेताओं के खिलाफ कानून सम्मत समीक्षा के बाद विभिन्न धाराओं के तहत दिल्ली पुलिस मुकदमा दर्ज करेगी।

अधिकतर नेता हों या कोई और, भड़काऊ भाषण के बाद यही होता है,

बयान पर बवाल मचने के बाद इसे मीडिया की साजिश करार देते हुए तोड़-मरोड़कर पेश करने वाला बयान बता देते हैं। अमूमन बयान के बाद जब कभी विवाद इन नेताओं के भी गले पड़ जाता है। कई बार कानूनी कार्रवाई तो कई बार जनता के बीच अपनी बिगड़ती छवि को लेकर जब होश आता है तो मीडिया पर बरस पड़ते हैं। पहले नपा-तुला बयान देने वाले राजनेता हमेशा एक ही जुगलबंदी में कहते हैं कि उनका बयान तोड़-मरोड़कर पेश किया गया है या फिर उनके बयान का संदर्भ वो नहीं था जो दिखाया गया है। जनता के बीच अपना दोष मीडिया के सिर मढ़ने की कोशिश कई बरसों से चली आ रही है। तकनीकी युग में जब इलेक्ट्रॉनिक तकनीक के चलते सीडी और रिकॉर्डिंग को ही ये झूठा साबित करने लग जाते हैं। कभी वोट बटोरने तो कभी अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के चलते एक भीड़ को अपने पक्ष में करने का अजीब खेल ही ऐसे बयानों को जन्म देता है। राजनीति के पर्दे पर खुद को सफल सितारा साबित करने की मुहिम ने कई बार अखबार और चैनलों के दफ्तरों को निशाना बनाया है।

कुछ दिनों पहले राज्य सरकार ने कश्मीर में एक केबल टीवी नेटवर्क 9 टीवी के प्रसारण पर पाबंदी लगा दी है। प्रशासन ने यह कार्रवाई टीवी चैनल द्वारा केबल टेलीविजन नेटवर्क नियामक अधिनियम 1995 के उल्लंघन पर की है। श्रीनगर के जिला मजिस्ट्रेट ने नोटिस जारी करते हुए एसएसपी श्रीनगर से कहा कि 9टीवी पर पाबंदी को तत्काल प्रभाव से लागू किया जाए। मजिस्ट्रेट ने कहा कि उक्त चैनल पर अलगाववादी तत्वों की गतिविधियों और उनकी भड़काऊ बयानबाजी को अनावश्यक रूप से ज्यादा कवरेज दी जा रही थी। इसके अलावा कुछ ऐसे प्रसारण हो रहे थे, जिससे कई लोगों की भावनाएं भी आहत हो रही थीं। मजे की बात तो यह कि बयान देने वालों के खिलाफ कार्रवाई नहीं हुई।

शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर बरस पड़े हैं। उनके मुख पत्र सामना के संपादकीय का शीर्षक ही है 'बदनामी करेंगे तो सबक सिखाएंगे।' राज ठाकरे के मामले में पूरे महाराष्ट्र को उत्तर भारतीयों के खिलाफ खड़ा करने की मुहिम हिंदी न्यूज चैनलों ने चलाई है, जिससे नाराज होकर शरद पवार ने पहले हिंदी चैनल से बात न करने का निर्णय लिया था। सामना ने शरद पवार के इस रवैये का समर्थन किया था। संपादकीय में कहा गया था कि हिंदी न्यूज चैनल वाले अपने चैनलों पर ऐसा चित्र पेश कर रहे हैं जैसे मराठी लोग जानवर हैं, जिनकी वजह से उत्तर भारतीय लोगों का घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। नए पत्रकारों की वजह से मीडिया वाले मराठी लोगों को बदनाम कर रहे हैं।

नरेन्द्र फोटो कॉपी, पोस्ट - खरोरा 493225, जिला-रायपुर (छ.ग.)

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- पश्चिम बंगाल में चुनाव के पहले रेलमंत्री ममता बनर्जी ने 2 लाख 27 हजार नयी नौकरियां देने का आश्वासन दिया है। उन्होंने कहा कि रेलवे में 2 लाख 27 हजार पद खाली पड़े हैं। सभी पदों पर बहाली की जायेगी। जनवरी 2011 के मध्य में रेलवे में खाली पड़े पदों पर नियुक्ति के लिए अखबारों में विज्ञापन जारी किया जाएगा।

- जल्द ही दिल्ली वालों को एसएमएस के जरिए मौसम की पल-पल की जानकारी मिलेगी। लंबे समय से इस योजना पर काम कर रहा मौसम विभाग अब इसके अंतिम चरण में पहुँच गया है। विभाग के अधिकारियों के मुताबिक दिल्ली में इस सेवा का लाभ उठाने के लिए लोगों को एक एसएमएस के जरिए अपना नंबर दर्ज कराना होगा और कुछ नॉमिनल मासिक शुल्क पर रोजाना के अधिकतम, न्यूनतम तापमान और अगले दिन के मौसमी अनुमानों के अलावा हर एक-दो घंटे में आने वाले मौसमी बदलावों मसलन तेज धूप, घने बादल, आंधी चलने या बारिश आने के आसार जैसी जानकारी भी दी जाएगी। पहला चरण सफल होने के बाद बाकी महानगरों में यह सेवा शुरू की जाएगी और उसके बाद सारे राज्यों की राजधानियों में सेवा दी जाएगी। अंतिम चरण में बाकी मुख्य शहरों को भी इससे जोड़ा जाएगा।

- पूणे की एक स्थानीय अदालत ने 11 वर्षीय एक लड़के के पक्ष में निर्णय देते हुए तलाकशुदा पिता से कहा है कि घरेलू हिंसा अधिनियम के तहत वह बच्चे की पढ़ाई के लिए 1500 रुपये हर महीने दें। लड़के के वकील ने दावा किया कि ऐसा शायद कभी कभार होता है लेकिन पहली बार इस अधिनियम के तहत किसी बच्चे ने इस तरह का भत्ता मांगा है। आमतौर पर माना जाता है कि इस अधिनियम का फायदा महिलाओं को ही मिलता है। यह फैसला एक बच्चे द्वारा दायर उस याचिका पर दिया है जिसमें उसने कहा था कि उसका पिता उसकी पढ़ाई के लिए पर्याप्त धन राशि नहीं देता है। 2005 में माता-पिता के अलग होने बाद से लड़का अपनी मां के साथ रह रहा है।

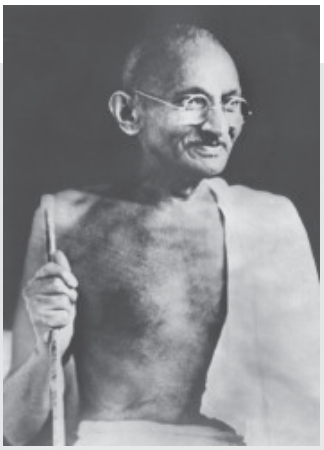

आजादी के जब्त शुदा तरानें

डॉ. बी.एन. पांडेय

वो शहीदे-तेगे-जफा हूँ मैं, जिसे आसमां ने मिटा दिया,
मेरे मुंह से निकली न आह तक, मुझे गोलियों से उड़ा दिया।

वो बहाई खून की नदियां कि पुकारा अर्श भी अलअमां,
वो पलट-पलट के सितम किए कि हलाकू खां को भुला दिया।

हमीं जांनिसार हैं हिन्द के, हमीं दिलफिगार हैं हिंद के,
हमें पास मेहरो-वफा का है, उन्हें जान दे के दिखा दिया।

कोई बैठकर न संभल सका, कोई दौड़कर न उछल सका,
वो सपूत पाठे जवान थे, तहे-खाक जिनको सुला दिया।

कोई कुरता कुरते पे बेकफन, कोई लोट-पोट या खस्ता तन,
जो किसी में बांकी रमक भी थी तो पलट के चरका लगा दिया।

भला कौन करता था हकरसी कि सिरहाने रोती थी बेकसी,
जिसे चाहा, उसको दबा दिया जिसे चाहा उसको जला दिया।

करें क्या किसी की शिकायतें, बयां किससे करते हिकायतें,
की जो हिंद वालों ने चूंचरा, उन्हें मार्शल लॉ सुना दिया।

वही लोग नाज के थे पले, जो गली में पेट के बल चले,
पड़ी मार कोड़ों की इस कदर कि तमाम जिस्म सुजा दिया।

वो यतीम करते हैं जारियां, हैं नसीब जिनको बधाइयां,
वो घरों में रोती हैं, बीवियां, जिन्हें हाय बेवा बना दिया।

यहाँ सबको जान का बीम है वहाँ मांटेग्यू स्कीम है,
न तो सब्र है, न करार है, यह बताओ तो हमें क्या दिया।

उन्हें याद रखना खलीफ तुम, कहीं दिल से करना न इनको गुम,
ये शहीदे कौम के लाल हैं, इन्हें हक ने इतना बढ़ा दिया।

प्रेषक : बी-68, हरदेव नगर, दिल्ली-110084

भारतवर्ष की वर्तमान दशा

प्रो. महेन्द्र रायजादा

वर्तमान समय में भारत की दशा
अत्यन्त सोचनीय स्थिति में है,
जिसे देखकर अन्तरमन खिन्न है।
भ्रष्टाचार देश के अधिकांश क्षेत्रों में
अपने चरमोत्कर्ष पर व्याप्त है।
प्रान्तवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद,
स्वार्थपरता, धर्मान्धता तथा अनाचार
की घटनाएं नित्यप्रति घटती हैं।
आतंकवादी, माओवादी, नक्सलवादी
निरपराध और असहाय जनों को
आये दिन मृत्यु के घाट उतार कर
निर्भय एवं जघन्य हत्यायें करते हैं,
बहुत प्रयत्न करने पर भी हमारे सैनिक
उन्हें पूर्णतः रोकने में सफल नहीं हुए हैं।

●●●

दूसरी ओर भाषा और प्रान्त के नाम पर,
राष्ट्रीय एकता पर खतरा मंडरा रहा है।
सुभाष चन्द्र बोस, लाला लाजपतराय,
बालगंगाधर तिलक, महात्मा गांधी
तथा दयानन्द सरस्वती भारत के सपूत,
ये सभी अहिन्दी प्रान्तों के निवासी थे,
पर वे सभी राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत
हिन्दी भाषा के समर्थक देश भक्त थे,
हिन्दी को राष्ट्रभाषा चाहते थे।
हमारे संविधान में हिन्दी को राजभाषा
या राष्ट्रभाषा की मान्यता प्रदान की है,
किन्तु कुछ लोग राष्ट्रभाषा का
अपमान कर अपनी मनमानी कर रहे हैं,
हमरे प्रबुद्ध नेता, राष्ट्र के कर्णधार
मौन हैं! देश को तोड़ने वाली इन
अराष्ट्रीय प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाना होगा।
देश में बढ़ते भ्रष्टाचार, महंगाई, घूसखोरी,
हिंसा, विषमता तथा अलगाव की प्रवृत्ति को
तिरोहित करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है।

5-ख-20, जवाहरनगर
जयपुर - 302004 (राजस्थान)

यह कैसा लोकतंत्र है

डॉ. हीरालाल छाजेड़ 'जैन'

आजादी के परवानों ने कभी सोचा तक नहीं होगा कि स्वतंत्रता के कुछ ही दिनों बाद अनैतिकता इस कदर पसर जायेगी, लूट का तंत्र खड़ा हो जायेगा और एक दिन भारत के लोग भ्रष्ट होकर घोटालों का कीर्तिमान स्थापित करने की होड़ में एक-दूसरे से आगे निकलने के लिए देश की स्वाधीनता को भी दांव पर लगाने में संकोच नहीं करेंगे। सत्ता गरीबों की दयनीय स्थिति को दूर करने की जगह भ्रष्ट तंत्र के संरक्षण में खड़ी हो जायेगी। भ्रष्टाचार रूपी दीमक राष्ट्र को खोखला कर रही है, उससे कैसे कौन बचायेगा? एक युगपुरुष के चिंतन में यह बात आई थी कि भविष्य में ऐसा कुछ होने वाला है, लोग आजादी का मतलब गलत लगाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए अनैतिकता और भ्रष्टाचार में लिप्त हो जायेंगे। इसलिए युगद्रष्टा आचार्य तुलसी ने इस बीमारी से बचने के लिए एक आंदोलन का सूत्रपात किया था, जिसका नाम ''अणुव्रत'' आंदोलन रखा। किन्तु दुःख इस बात का है कि स्वार्थ में डूबी जनता व सत्ता ने गौर नहीं फरमाया और आंदोलन कुछ लोगों तक सिमट कर रह गया। काश! अगर वह आंदोलन व्यापक रूप ले लेता तो देश का नक्शा ही कुछ और होता। वे दूरद्रष्टा थे आचार्यश्री तुलसी जिनके दिये गये अनेक अवदानों में प्रमुख अवदान था ''अणुव्रत आंदोलन''। इस आंदोलन का एक मात्र उद्देश्य था नैतिक व सदाचारी मानव का निर्माण।

पिछली सदी के साठ के दशक में देश में नैतिकता व आजादी की विरासत का ह्रास होना शुरू हो गया था। जीप घोटाले ने देश में पहली बार भ्रष्टाचार और नैतिकता का प्रहसन दिखाया था। यहीं से भ्रष्टाचार और अनैतिक भारत की शुरुआत। जीप घोटाले में शामिल राजनीतिज्ञों, नौकरशाहों को एक बड़ी राशि घूस में मिली थी जो विदेशी बैंकों में जमा कराई गयी थी। इमरजेंसी के बाद देश में सत्ता परिवर्तन हुआ। राजनीति में परिवर्तन के दौर चले। इंदिरा गांधी के पतन के बाद नौकरशाही अचानक मजबूत होकर उठी। राजनेता पीछे रह गये। इसलिए कि पाँच साल बाद राजनीतिक प्रक्रिया को जनादेश के लिए जनता के बीच जाना और मंत्रियों के विभागों का कपड़े की तरह बदलना। इसका नतीजा निकला कि राजनीति प्रक्रिया कमजोर होती चली गई। नौकरशाही निरंकुश और अराजक हो गयी।

आज सर्वाधिक भ्रष्ट नौकरशाही ही है। विदेशी बैंकों में जमा काले धन की आंधी से अधिक राशि नौकरशाही संवर्ग की ही मानी जा रही है। नौकरशाही तबका भ्रष्ट आचरण से कमाये काले धन का निवेश आखिर कहाँ करेगा। रियल स्टेट जैसे उद्योगों में काले धन की खपत की शुरुआत तो हाल के दिनों की है।

जैसा कि मैंने उल्लेख किया जीप घोटाला। उससे प्रारंभ हुआ सिलसिला रुकने का नाम ही नहीं लेता। अब तो प्रत्येक दिन किसी न किसी विभाग में घोटाले की चौका देने वाली खबर पढ़ने-सुनने को मिल जाती है। स्पेक्ट्रम समेत विभिन्न घोटालों की इतनी बड़ी श्रृंखला है कि किस-किस का इस छोटे से लेख में गुणगान करें। अब करोड़ों के घोटाले तो बहुत साधारण श्रेणी में आते हैं। कीर्तिमान स्थापित करने के लिए अरबों के घोटालों की गूंज सुनाई दे रही है।

काले धन का मतलब भ्रष्टाचार की आंधी। गरीब तंगहाल आबादी के खून-पसीने की कमाई की लूट, विकास-उत्थान की योजनाओं-परियोजनाओं का बंटाधार। भारतीय जनता के खून-पसीने की कमाई को लूटकर विदेशी बैंकों में जमा काला धन अगर देश में आ जाये तो देश का काया-कल्प हो जायेगा। देश की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए बाहर से न तो हमें कर्ज लेने की जरूरत होगी और न ही आंतरिक संसाधानों को भूख-बेकारी। तंगहाली की कीमत पर विकसित करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। केवल फिर एक मात्र जरूरत रहेगी भ्रष्टाचार और अनैतिकता को भगाने के लिए अणुव्रत जैसे नैतिक आंदोलन की ताकि फिर से कालेधन की समस्या उत्पन्न न हो सके।

यह कैसा लोकतंत्र :

प्रतिदिन एक नया घोटाला उजागर हो रहा है। पक्ष-विपक्ष एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिए अपनी राजनीति की रोटियां सेक रहे हैं। विपक्ष के हाथ मुद्दा लग जाता है और वह मौके का फायदा उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता किन्तु भ्रष्टाचार को पूरी तरह से मिटाने की किसी को कोई चिंता नहीं क्योंकि सभी एक ही नाव में सवार हैं। कोई इस रोग से मुक्त नहीं है। मौका मिलने पर किसी को परहेज नहीं है। जो भी पार्टी सत्ता में आती है। उसके शासन काल में सब कुछ चलता है तब भ्रष्टाचार को मिटाने की चिंता किसी को कैसे होगी।

साधारण जनता हम और आप भी मौके का फायदा उठाने में पीछे कहाँ रहते हैं। ट्रेन में टी.टी. को ले-देकर अपनी सीट रिजर्व करा लेते हैं। जहाँ भी पैसे से काम बनता है, अपना काम पीछे की खिड़की से निकलवाने का प्रयत्न सबसे पहले करने का प्रयत्न करते हैं। पैसे टेबुल के नीचे से देने का और लेने का काम धड़ल्ले से चलाने में कोई झिझक महसूस नहीं होती फिर हम दूसरों को क्या दोष दें। जो जितना बड़ा व्यक्ति उसका उतना ही बड़ा हाथ और उतना ही बड़ा घोटाला। तभी तो किसी को आश्चर्य नहीं होता, रोजाना क्रमबद्ध नया घोटाला मीडिया के माध्यम से सुनते पढ़ते हैं और भूल जाते हैं।

संसद का पूरा शीतकालीन सत्र इन घोटालों की भेंट चढ़ गया। राष्ट्र को करोड़ों का नुकसान हो रहा है। पक्ष-विपक्ष अपनी बात पर अटके हुए हैं, कोई झुकने को तैयार नहीं। सबको अपनी पार्टी व अपने स्वार्थ की चिंता है। देश के भविष्य की चिंता किसी को नहीं है। जनता मूक बैठी तमाशा देख रही है। यह कैसा लोकतंत्र है।

जयश्री टी. कंपनी, चौधरी बाजार,
नन्दीशाही, कटक-1 (उड़ीसा)

लालबहादुर शास्त्री अणुव्रत सम्मेलन में

मुनि राकेशकुमार

दिल्ली का शिक्षा जगत् अणुव्रत के साथ प्रारम्भ से ही भावात्मक रूप से जुड़ा हुआ है। दिल्ली प्रशासन, दिल्ली नगर निगम व नई दिल्ली नगरपालिका के शिक्षा विभागों ने अणुव्रत की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में उल्लेखनीय सहयोग प्रदान किया है। सन् 1962 में दिल्ली प्रशासन के सहयोग से लगभग 3 हजार शिक्षकों का एक विराट अणुव्रत सम्मेलन आयोजित किया गया। इसकी सारी व्यवस्था दिल्ली प्रशासन ने की। वहाँ के तत्कालीन चीफ कमिश्नर श्री भगवान सहाय नैतिक एवं आध्यात्मिक आदर्शों के प्रति आस्थावान थे। उन्होंने अणुव्रत अभियान को आगे बढ़ाने में विशेष रूप से सहयोग दिया। यह सम्मेलन उनकी भावना एवं प्रेरणा से आयोजित हुआ। सम्मेलन के लिए दिल्ली प्रशासन की ओर से समस्त विद्यालयों में एक परिपत्र प्रसारित किया गया, जिसमें सभी प्रधानाध्यापकों को अपने सहयोगी शिक्षक के साथ सम्मेलन में समय पर उपस्थित होने का निर्देश दिया गया। लगभग दो हजार विद्यालयों के शिक्षक इसमें सम्मिलित हुए। कार्यक्रम की सारी व्यवस्था प्रशासन की ओर से हुई। भारत के तत्कालीन गृहमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। शास्त्रीजी ने पहले आधा घण्टे का समय इस कार्यक्रम के लिए निर्धारित किया था। पर वहाँ के वातावरण को देखकर वे इतने प्रसन्न और प्रभावित हुए कि पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहे। लुडलो कौशल हायर सेकेन्डरी स्कूल के विराट प्रांगण में आयोजित यह कार्यक्रम लगभग दो घण्टे में संपन्न हुआ।

सम्मेलन का प्रारम्भ छात्रों द्वारा अणुव्रत गीत के सामूहिक गान से हुआ। शास्त्रीजी ने अणुव्रत गीत की प्रत्येक पंक्ति को ध्यान से सुना। अणुव्रत पुस्तिका को हाथ में लेकर वे स्वयं छात्रों के साथ

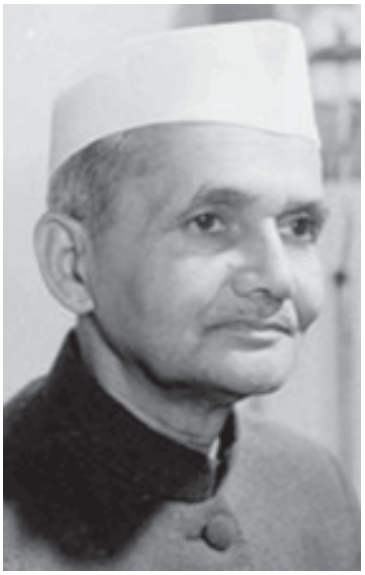

अणुव्रत गीत को बोलने लगे। इस कार्यक्रम में शिक्षा विभाग से सम्बन्धित सभी प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे। सम्मेलन का संयोजन एक वरिष्ठ प्रधानाचार्य ईश्वर चंदजी ने किया। उन्होंने अणुव्रत का परिचय देते हुए सम्मेलन की भूमिका पर प्रकाश डाला। श्री भगवान सहायजी ने कहा स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण हेतु अणुव्रत के आदर्शों को अपनाना आवश्यक है। आज चारों ओर नैतिकता का संकट है। इसे मिटाये बिना हम किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी और उनके शिष्य परिवार की प्रेरणा से इस संकट को दूर करने का प्रशंसनीय काम हो रहा है। यह मानव मात्र के लिए कल्याणकारी अभियान है। शिक्षक राष्ट्र के सच्चे निर्माता हैं। उन पर हमारा भविष्य निर्भर है। वे अणुव्रत के आदर्शों को अपनाकर छात्रों का चरित्र निर्माण करें। दिल्ली प्रशासन ने इस भावना से इस सम्मेलन का आयोजन किया है। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री गोपीनाथ 'अमन' ने कहा--अणुव्रत असाम्प्रदायिक मानव धर्म का प्रतीक है। यह सर्वधर्म समन्वय का संदेशवाहक है। नैतिकता के नाम पर छात्रों के दिमाग में साम्प्रदायिकता के जहरीले संस्कार भरना उचित नहीं है। अणुव्रत के मंच से अहिंसा, सत्य और संयम प्रधान धर्म का प्रशिक्षण दिया जाता है। देश में नैतिक शिक्षा के लिए सरकार की ओर से नाना प्रकार के प्रयास हो रहे हैं। इसके लिए कई आयोग भी गठित किए गए हैं। पर जब तक शिक्षकों के मन में चारित्रिक मूल्यों के प्रति आस्था नहीं होगी तब तक इस दिशा में सफलता नहीं मिल सकती।

शिक्षकों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए मैंने अपने भाषण में कहा-- शिक्षक अध्यापक ही नहीं गुरु होता है। समाज के निर्माण में शिक्षकों का बहुत बड़ा योगदान है। विद्यार्थी का मानस अपने माता-पिता और शिक्षकों से विशेष प्रभावित होता है। अणुव्रत के मंच पर शिक्षकों की उपस्थिति को सदा महत्व दिया जाता है। लोकमान्य तिलक ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा था-- मैं स्वतंत्रता के

सभी शिक्षकों ने खड़े होकर अणुव्रत के नियमों को दोहराया और उन्हें संकल्प के रूप में स्वीकार किया। गृहमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री अणुव्रत गीत और संकल्प ग्रहण से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने अपने भाषण का प्रारंभ ''संयममय जीवन हो'' इस पंक्ति के उच्चारण से किया। उन्होंने कहा--आज हमारे लिए संयम और अनुशासन के संदेश की सबसे अधिक आवश्यकता है। उसके अभाव में हमारा भविष्य कभी उज्जवल नहीं हो सकता।

बाद मंत्री नहीं, प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक बनना अधिक पसन्द करूंगा। बच्चों का जीवन निर्माण करना राष्ट्र की महान सेवा है। मुझे मंत्री बनने की अपेक्षा शिक्षक बनने में अधिक संतोष और प्रसन्नता का अनुभव होगा। आज बहुत से शिक्षकों के मन में निराशा और कुंठा का कुहरा छाया हुआ है। तिलकजी के विचारों से उन्हें नई प्रेरणा प्राप्त हो सकती है। यदि कुम्हार के हाथ कांपेंगे तो अच्छे घड़ों का निर्माण नहीं हो सकेगा। शिक्षकों के प्रति समाज में जो सम्मान होना चाहिए, वह आज दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। इसमें सुधार और बदलाव की जरूरत है पर, जब तक शिक्षक वर्ग में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान का भाव नहीं जागेगा तब तक इस परिस्थिति में सुधार नहीं हो सकता।

मेरे भाषण के बाद संकल्प ग्रहण का कार्यक्रम रहा। सभी शिक्षकों ने खड़े होकर अणुव्रत के नियमों को दोहराया और उन्हें संकल्प के रूप में स्वीकार किया। गृहमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री अणुव्रत गीत और संकल्प ग्रहण से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने अपने भाषण का प्रारंभ ''संयममय जीवन हो'' इस पंक्ति के उच्चारण से किया। उन्होंने कहा--आज हमारे लिए संयम और अनुशासन के संदेश की सबसे अधिक आवश्यकता है। उसके अभाव में हमारा भविष्य कभी उज्जवल नहीं हो सकता। इन दिनों अनेक नगरों में विद्यार्थियों द्वारा तोड़फोड़ की घटनाएं हुई हैं। यदि शिक्षा के साथ अनुशासन और कर्त्तव्यनिष्ठा का भाव नहीं जागा तो हमारे लिए बहुत चिन्ता की बात होगी। अभी शिक्षकों ने जो संकल्प ग्रहण किए हैं वे बहुत उपयोगी हैं। हर स्कूल में अणुव्रत गीत और इन नैतिक संकल्पों का प्रतिदिन और विवेचन करना चाहिए। शास्त्रीजी ने खेद के साथ कहा--मैंने सुना है विद्यार्थी जो तोड़फोड़ की विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों का आचरण करते हैं, उनमें शिक्षकों का हाथ होता है। यदि कोई भी शिक्षक इस प्रकार का व्यवहार करता है वह राष्ट्र के प्रति गद्दारी करता है। शास्त्रीजी ने अपने एक घंटे से अधिक लम्बे भाषण में शिक्षकों और विद्यार्थियों से संबंधित नियमों का पुस्तक से वाचन किया और उनका विवेचन भी किया। स्कूलों में नैतिक शिक्षा प्रदान करने के लिए कई प्रकार की योजनाएं प्रस्तुत की जाती हैं। पर जिन योजनाओं में अपने संप्रदाय का प्रचार करने की दृष्टि होती है, उन्हें सरकार मान्य नहीं कर सकती। अणुव्रत की शिक्षाएं राष्ट्रीय चरित्र को सबल बनाती हैं। इनका हर शिक्षक को अपने विद्यालयों में उपयोग करना चाहिए तथा विद्यार्थियों को इनका महत्व समझाना चाहिए। शास्त्रीजी ने अपने भाषण में आचार्य श्री तुलसी का स्मरण करते हुए कहा--आचार्यश्री ने अपने शिष्य वर्ग को अणुव्रत के कार्य में नियोजित कर राष्ट्र का महान उपकार किया है।

अपने भाषण के अन्त में लाल बहादुर शास्त्री ने दिल्ली प्रशासन के अधिकारियों को इस प्रकार का उपयोगी कार्यक्रम आयोजित करने के लिए धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर वरिष्ठ कार्यकर्ता प्रभुदयाल डाबडीवाल और राज्यसभा के सदस्य पन्नालाल सरावगी भी उपस्थित थे। सरावगी ने अणुव्रत महासमिति की ओर से दिल्ली प्रशासन का आभार मानते हुए इस कार्यक्रम को अत्यन्त प्रेरणादायक और महत्वपूर्ण बताया।

सुख प्राप्ति की कला

शिवचरण मंत्री

जन्म-दिवस, विवाहोत्सव, विवाह-तिथि आदि अवसरों अथवा वृद्ध गुरुजनों को अभिवादन करने पर वृद्धजन, मित्र, शुभचिंतक, परिजन 'सुखी रहो' अथवा शुभकामनाएं देते हैं। आज समाज का हर व्यक्ति सुखी होने को बहुत ही आतुर, व्यग्र है, इच्छुक है। पर यह सुख क्या है? किस व्यक्ति को सुखी कहा जाए? सुख में कौन-कौन से तत्त्वों का समावेष है? आदि प्रश्नों का उत्तर देना कोई सरल काम नहीं है।

वैसे सुख मानसिक स्थिति है और यह बाह्य स्थितियों से प्राप्त करना संभव नहीं है। सुखी होने का मूल स्त्रोत अंतस में समाहित है। सुख की तो अनुभूति ही होती है। अतएव जब तक व्यक्ति स्वयं मानसिक रूप से उनकी प्राप्ति की इच्छा नहीं करता तब तक उसे सुख नहीं मिल सकता। अतः मानव यदि हर स्थिति में मानसिक रूप से सुख की अनुभूति करे तो उसे दुनियां की कोई शक्ति दुःखी नहीं कर सकती।

सुख यहाँ-वहाँ सर्वत्र बिखरा पड़ा है, पर इसको देखना और इसकी अनुभूति करना सीखना होगा। सुख आपकी किसी प्रिय पुस्तक, मौलिक भाव या किसी की मधुर वाणी में समाहित है। सुख का निवास, आवास प्रेम पूरित हृदय में है। इसको कहीं ढूंढने, तलाश करने की आवश्यकता नहीं है। इसकी हमें पुष्प की मधुर सुवास के समान हर श्वांस में अनुभूति करनी है। जो सुख हमारे अंतर में है उसे हम अनुभव करें और व्यर्थ का भटकना बंद करके इसे पहचाने। हमें 'कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग ढूंढे वन माही' की तरह अपने अंतस में छिपे सुख को पहचान कर, अनुभूति करके सुखी रहना सीखना होगा। जीवन के प्रति हमें अपना दृष्टिकोण बदलना होगा। सुख प्राप्ति एक कला है। सुख का स्त्रोत है--मानव मन। अतः अपने अंतस में छिपे सुख को पहचानें एवं सुख-शांति प्राप्त करें।

मुख्य पोस्ट - श्रीनगर, जिला-अजमेर, (अजमेर-राजस्थान)

उजली चादर का मौन

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

अध्यक्ष : भारतीय विदेश नीति परिषद्

जरूरी यह है कि भ्रष्टाचार के दैत्य की गर्दन तत्काल मरोड़ी जाए। क्या यह काम हमारे नेता करेंगे? कैसे करेंगे? वे आज जहां हैं, क्या भ्रष्टाचार किए बिना वहां हो सकते थे? किसकी चादर उजली है? इसीलिए सबका ध्यान संसदीय समितियों, बयानबाजियों और चुनावों में लगा रहता है। जिसकी चादर उजली है, वह मौन है। चुपचाप चादर में लिपटे रहने से क्या दैत्य का दलन हो जाएगा?

संसद का यह सत्र जितना निष्फल रहा, पहले कोई सत्र नहीं रहा। संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) को लेकर पहले भी हंगामे हुए, लेकिन सरकारों ने आखिरकार विपक्ष की बात मान ली। इस बार सरकार अड़ी रही, क्योंकि उसे पता है कि संसद में चाहे उसके गठबंधन का बहुमत है, लेकिन जेपीसी में वह अल्पमत में ही रहती। उसे अपने गठबंधन के सभी दलों पर विश्वास नहीं है। जेपीसी शायद ढाई- तीन साल तक चलती और एन चुनाव के पहले सरकार के मुंह पर कालिख पोत देती। यह खतरा अभी टला नहीं है। इसका एक तोड़ यह भी सुझाया जा रहा है कि अभी ही मध्यावधि चुनाव क्यों नहीं करवा लिया जाए? अगर साढे तीन साल इंतजार किया जाएगा तो उस अवधि में भारतीय जनता पार्टी गठबंधन पहले की तरह सबल हो सकती है। मध्यावधि चुनाव की पतंग रंगीन तो बहुत है, लेकिन यह उड़ने वाली नहीं है, क्योंकि कांग्रेस के पास नेहरू या इंदिरा की तरह न तो कोई कद्दावर नेता है और न ही गठबंधन के साथियों पर उसका कोई भरोसा है। इसके अलावा यदि जेपीसी के मुद्दे पर संसद भंग की गई तो कांग्रेस को लेने के देने पड़ सकते हैं।

यह ठीक है कि पिछली बार जब भी कांग्रेस हारी तो उसके शीर्ष नेताओं-इंदिरा, नरसिंहराव, राजीव गांधी का नाम भ्रष्टाचार के साथ सीधा जुड़ा हुआ था, लेकिन इस बार न तो कांग्रेस अध्यक्ष, न उनके पुत्र और न ही प्रधानमंत्री का नाम किसी भी घोटाले से सीधा जुड़ा है। इसके बावजूद सारा देश स्तब्ध है कि एक के बाद एक घोटाले पर घोटाला उछलता चला आ रहा है। स्वतंत्र भारत में पिछले जितने भी घोटाले हुए हैं, वे सब मिलकर भी उन घोटालों के बराबर नहीं हैं, जो पिछले छह माह में हुए हैं। यह भी ठीक है कि इन घोटाले के लिए जिम्मेदार मंत्री शशि थरूर, मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण, महासचिव सुरेश कलमाडी और मंत्री ए. राजा के इस्तीफे भी हो गए हैं, लेकिन सारा देश पूछ रहा है कि क्या यह काफी हैं? इन इस्तीफों का देश क्या करें? क्या इन्हें चाटे? इन इस्तीफों के कारण क्या कारगिल के शहीदों के साथ जो धोखा हुआ है, उसकी भरपाई होगी? आदर्श सोसायटी के समस्त गैर -सैनिक फ्लैट-मालिकों को अभी तक बेदखल क्यों नहीं किया गया? क्या कलमाडी के इस्तीफे के फलस्वरूप भारत की जनता को उसके खून-पसीने की कमाई के 70 हजार करोड़ रुपए वापस मिल रहे हैं? राष्ट्रकुल खेलों के चोरों और लुटेरों को अभी तक पकड़ा क्यों नहीं गया हैं? उनकी संपत्तियां जब्त क्यों नहीं की गई हैं? ए. राजा के इस्तीफे से क्या पौने दो लाख करोड़ रुपए सरकारी खजाने में वापस आ रहे हैं? यदि नहीं, तो इन सारे इस्तीफों को भारत की जनता नौटंकी के अलावा

क्या समझेगी? अभी उत्तरप्रदेश के अनाज घोटाले की परतें खुलते-खुलते खुल रही हैं। पता नहीं, वह कितने लाख करोड़ का होगा?

इन घोटालों से आम लोग जितने हतप्रभ हैं, उससे ज्यादा चकित हैं हमारी केंद्र सरकार के रवैये से! केन्द्र सरकार की चिंता सिर्फ यह दिखाई पड़ रही थी कि किसी भी तरह संसद चल पड़े। घोटालेबाज पकड़े जाएं या नहीं, यह कोई खास मुद्दा नहीं है। घोटालेबाजों के सरगना अपने आप इस्तीफे दे रहे हैं। उन्हें बर्खास्त क्यों नहीं किया गया? सरकार कुछ भी करती हुई क्यों नहीं दिखाई पड़ती है? उसका यह पिटा-पिटा-सा तेवर लोगों के दिमाग में शक पैदा करता है। लोग सोचते हैं इस्तीफे देने वालों के तार कहीं ऊपर से तो नहीं जुड़े जुए हैं? कांग्रेस अध्यक्ष अपने संसदीय दल को कहती है कि वे भ्रष्टाचार को कतई बर्दाश्त नहीं करेंगी? ऐसा वे क्यों कहती हैं? इसीलिए न कि भ्रष्टाचार को खत्म करना उनकी जिम्मेदारी है। उस जिम्मेदारी को निभाने की बजाय वे हुंकार लगाती हैं कि प्रधानमंत्री की टांग-खिचाई मत कीजिए। आखिर संसदीय लोकतंत्र में सबसे बड़ी जिम्मेदारी किसकी होती हैं? क्या प्रधानमंत्री की नहीं होती? क्या इतिहास में यह नहीं लिखा जाएगा कि डॉ. मनमोहन सिंह देश की सबसे भ्रष्ट सरकार के सबसे स्वच्छ प्रधानमंत्री थे? धन्य है यह स्वच्छता! यह कैसी स्वच्छता है, जिसकी ओट में भ्रष्टाचार दनदना रहा है? यह स्वच्छता तो भ्रष्टाचार को ढंकने की चादर बन गई है। क्या इस चादर को ओढ़कर कांग्रेस मध्यावधि चुनाव में कूद सकती हैं?

पिछले चुनाव में इस उजली चादर ने अपना चमत्कार जरूर दिखाया, लेकिन अब घोटालों की धुंध के बीच वह दिव्य उजलापन तो दूर, लोगों को वह चादर ही दिखाई नहीं पड़ रही है। कांग्रेस के लिए अब भी आशा की एक तेज किरण थी या यों कहिए कि अब भी है। वह है राहुल गांधी! राहुल चाहते तो घोटालों पर यमराज की तरह टूट पड़ते। विपक्ष का विरोध फीका पड़ जाता युवा नेता के आक्रोश के आगे! वे देश द्वंद्वात्मक (डायलेक्टिकल) नेतृत्व प्रदान करते। अपना विरोध खुद करते! भ्रष्टाचार का एंटी-थीसिस बनते! देश में एक नए नेतृत्व का सूत्रपात होता, लेकिन लगता है नीतिश के धोबीपाट का असर अभी तक बना हुआ है। राहुल की चुप्पी कांग्रेस को लगी दहशत की दहाड़ है। यदि भ्रष्टाचार से लड़ने के सवाल पर कांग्रेस गठबंधन बिखर जाता और सरकार गिर जाती तो भारत की जनता उसे स्पष्ट बहुमत से लौटाती। यह अवसर कांग्रेस ने अगर अपने हाथ से निकल जाने दिया तो साढ़े तीन साल बाद उसकी गति उससे भी बुरी होगी, जो पिछली तीन कांग्रेस सरकारों की हुई थी।

यह ठीक है कि अभी भाजपा गठबंधन और तीसरे मोर्चे में इतना दम दिखाई नहीं पड़ता कि वे कांग्रेस गठबंधन को सीधी टक्कर दे सकें, लेकिन चुनाव की बेला में पार्टी समीकरण को बदलते कितनी देर लगती है। हवा का रुख भांपने में नेतागण देर क्यों करेंगे? अगर लोकमत का प्रभंजनकारी झंझावात आज भ्रष्टाचार के विरुद्ध नहीं बह रहा होता तो क्या संसद के बहिष्कार में आज हमारे दक्षिण और वाम पंथ साथ-साथ होते? आज देश के मानस को मथने वाले इस भ्रष्टाचार का समाधान न तो जेपीसी से होने वाला है, न मध्यावधि या आम चुनाव से! पिछले भ्रष्टाचारों के विरुद्ध बनीं चार-चार संयुक्त संसदीय समितियों ने कौन-सा पहाड़ उखाड़ लिया? यह पांचवीं प्रस्तावित समिति अपना कार्यकाल पूरा करेगी, तब तक सारे पंछी या तो उड़ लेंगे या उनके पंख ही झर जाएंगे। आज जरूरी यह है कि भ्रष्टाचार के दैत्य की गर्दन तत्काल मरोड़ी जाए। क्या यह काम हमारे नेता करेंगे? कैसे करेंगे? वे आज जहां हैं, क्या भ्रष्टाचार किए बिना वहां हो सकते थे? किसकी चादर उजली है? इसीलिए सबका ध्यान संसदीय समितियों, बयानबाजियों और चुनावों में लगा रहता है। जिसकी चादर उजली है, वह मौन है। चुपचाप चादर में लिपटे रहने से बना दैत्य का दलन हो जाएगा? मौका तो ऐसा है कि चादर गले और तलवार बन जाए। यह तलवार ऐसी चले कि हर भावी भ्रष्टाचारी की हड्डियों में कंपकंपी दौड़ जाए और 21वीं सदी में एक नए भारत का उदय हो।

देश में व्याप्त चारों ओर खुल रहे घोटालों से आम लोग जितने हतप्रभ हैं, उससे ज्यादा चकित हैं हमारी केंद्र सरकार के रवैये से! केन्द्र सरकार की चिंता सिर्फ यह दिखाई पड़ रही थी कि किसी भी तरह संसद चल पड़े। घोटालेबाज पकड़े जाएं या नहीं, यह कोई खास मुद्दा नहीं है। घोटालेबाजों के सरगना अपने आप इस्तीफे दे रहे हैं। उन्हें बर्खास्त क्यों नहीं किया गया?

- दैनिक भास्कर से साभार
15 दिसम्बर 2010 अंक से

जाग हिन्दुस्तानी जाग

पाबूराम गिटाला

जाग हिन्दुस्तानी थोड़ा सचेत हो जा वरना हिन्दुस्तान में फिर अंधेरा छा जायेगा पूंजीपति और अधिक पूंजीपति हो रहे हैं। गरीब और गरीब हो रहा है। जो मनचाहा वो हिन्दुस्तान ये बना रहे हैं और आम आदमी दर-दर की ठोकरें खा रहा है। आने वाले कल में ठोकरों से बदतर जिन्दगी जीनी पड़ेगी, यदि आपने सिर ऊपर नहीं उठाया तो।

भारत की राजनीति ''जीओ और जीने दो'' सर्वे भवन्तु सुखिनः परमहित सरिस धरम नहिं भाई जैसे अमूल्य और स्वर्णिम सिद्धान्तों पर टिकी है, जिसे सभी धर्मों ने ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने सर्वमान्य कर अपनी श्रद्धा और स्वीकृति की मोहर लगाई थी। जिसमें सभी ने सहायता एवं सहयोग के आदान-प्रदान का मार्ग साफ हो सके। धन एवं पद के घमण्ड से दूर हट कर समाजवादी भावना सभ्य व्यवहार एवं अच्छा आचरण से सामाजिक सफलता का निर्माण कर स्वार्थ प्रवृति को त्याग कर देश का निर्माण करें। जिससे सभी लोगों को आगे बढ़ने का मौका मिल सके। परन्तु हमारे नेता एवं धनाढ्य लोग ऐसे हैं कि उन्हें दो कदम आगे बढ़कर चार कदम पीछे हटने की मानो आदत सी पड़ गई है। शासक ही शोषण का सफेद चोला धारण कर लेता है और अपने समर्थकों एवं धनाढ्यों के लिए अलग नियम और आम जनता के लिए अलग नियम। अपने लिये सारी सुख सुविधायें तथा आम जनता के लिए कुछ भी नहीं, इस सत्ता के दंगल में इन्हें कोई भी नहीं पछाड़ सकता। अपराधियों से दोस्ती भी और पीड़ितों की अगुवाई भी। इसका सीधा असर हिन्दुस्तान की अर्थ व्यवस्था पर पड़ रहा है। आज धन व राजनीति कुछ ही लोगों पर केन्द्रित होती जा रही है, बाकी लोगों के पास कुछ भी नहीं, स्वतंत्रता केवल और केवल अमीर वर्ग के लिए है।

चारों ओर लूटतंत्र और भ्रष्टाचार का बोलबाला नजर आ रहा है। सरकारें बड़ी जोर-जोर से बढ़ती विकास एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि का ढिंढ़ोरा पीट रही है। लेकिन पिछले 10 वर्षों की तुलना में महंगाई पचास गुना बढ़ गई। कीमतों का बेतहाशा बढ़ने का लाभ देश के कुछ चुनिन्दा परिवारों को ही हो रहा है जो कि राष्ट्र के 80 प्रतिशत संसाधनों पर कुण्डली मार कर बैठे हैं। जब-जब कीमतें बढ़ती है तो उसका सम्पूर्ण लाभ इन चुनिन्दा लोगों की जेब में जाता है। यही वे लोग हैं जो राजनीतिज्ञों को मोटी-मोटी रुपयों की थैलियां थमाकर अपने हिसाब से ही देश की रीति व नीतियां बनवाते हैं। ये लोग ही किंग मैकरों की भूमिका अदा कर रहे हैं। मैंने प्रत्यक्ष रूप से इस परम्परा को देखा है, 125 करोड़ की आबादी वाले हिन्दुस्तान में 1.20 लाख लोगों ने ही देश की एक तिहाई सम्पत्ति पर कब्जा कर रखा है और आने वाले समय में यह संख्या 1.00 लाख ही रह जायेगी।

नेताओं की वोट बैंक की राजनीति से प्रभावी होकर आर्थिक नीतियों ने देश का ढांचा बिगाड़ रखा है। यह मुझे किशनगढ़ मार्बल एसोसियेशन में रह कर सब कुछ प्रत्यक्ष रूप में न केवल देखने को ही मिला, बल्कि यह मेरा स्वयं का कटु अनुभव भी रहा है। किशनगढ़ मार्बल एसोसियेशन में रहते हुए मैंने गलत नीतियों का विरोध किया उसका नतीजा मैं आज भी भोग रहा हूँ। इन मुट्ठीभर लोगों अर्थात रईसों की रहनुमाई और अरबपतियों को खरबपति बनाना इनके आचरण में शामिल हो चुका है।

एक ही देश में दो देश नजर आ रहे हैं। यह बात थोड़े दिनों पहले बिहार विधानसभा चुनाव में राहुल गांधी ने की थी, परन्तु सफेद मकड़े इस बात का और ही अर्थ निकाल रहे हैं--वे सब जानते हुए भी भ्रष्टाचार की तरफ आँखें मूंदकर इसे और अधिक बढ़ावा दे रहे हैं।

एक हिन्दुस्तान वह है जो चमक-दमक से आदान-प्रदान करके जिसमें ग्लैमर की चकाचौंध बेशकीमती जेवर, महंगे जूते, बेश कीमती पोशाकें, विलासिता के तमाम

आज देश में गरीबी, बेरोजगारी व जातिवाद बढ़ रहा है, गरीब और अमीर की खाई बढ़ती ही जा रही है। महंगाई की मार से आम जनता परेशान हो गयी है। देश में कालाबाजारी, मुनाफाखोरी, सट्टेबाजी और भ्रष्टाचार के कारण महंगाई अनियंत्रित हो गई है, इनके तार ऊंचे स्तर के सफेद पोशों से जुड़े हैं। काले धन की समान्तर व्यवस्था अधिक आक्रामक हो गई, क्योंकि यह हमारे भ्रष्ट राजनेताओं और अधिकारियों की मेहरबानी का मिलाजुला रूप है।

साधनों का भरपूर उपभोग करते और पंच सितारा सुविधाएं भोगते हुए इनका फिर भी पेट नहीं भर रहा है। काले धन की कमाई से इतने साधन सम्पन्न हो चुके होते हैं कि अगर इनके कुत्ते को भी छींक आ जाये तो डॉक्टरों की फौज मौके पर ही हाजरी देने पहुंच जाती है। दूसरी ओर देश का 85 प्रतिशत लोगों का जीवन तनावग्रस्त, भूखमरी व बीमारियों से ग्रस्त है। वे भी इन्सान है तथा हिन्दुस्तान के सम्मानीय नागरिक हैं तथा जितना अधिकार उन चन्द अमीरों का बनता है उतना इनका भी है। लेकिन इनके लग्गू-भग्गू देश के नीतिनिर्धारक देश की बहुसंख्यक जनता को लाभ से वंचित रखते हैं। जिन्हें मैं जानता ही नहीं बल्कि मैंने बखूबी इन लोगों के व्यवहार व कारगुजारियों को नजदीक से देखा है और विरोध करने पर अंजाम भुगता है। मैंने भी उसी 80 प्रतिशत जनसंख्या में जन्म लिया है। प्रातः 4 बजे से लोगों की सरकारी नलों की लाईन, राशन की लाईन और न जाने कहाँ-कहाँ सरकारी कार्यालयों में दिनभर की हाड़तोड़ मेहनत करने के बावजूद भी शाम को थाली से रोटी भी गायब रहती है। हम यह कदम-कदम पर देख रहे हैं कि बहुसंख्यक लोग किस प्रकार अपना अभावग्रस्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सर्दियों में ठण्ड से, गर्मियों में लू से, बरसात में वर्षा से बचने का कोई उपाय तक नहीं होने के कारण असमय ही मौत के मुंह में चले जाते हैं तथा जिनको देखने वाला कोई नहीं होता है। ये सब देश व समाज की विषम परिस्थितियां ही हैं जो कि अपराधियों को जन्म देती है। देश का भविष्य माने जाने वाले युवकों की हालत इतनी दयनीय है कि वे आज रोजगार की तलाश में दर-दर की ठोकरें खाने के बाद आत्महत्या जैसे कदम उठा लेते हैं। ये ऐसे यक्ष प्रश्न हैं जिनका उत्तर तत्काल मिलना मुश्किल है। हर गांव यह दंश अब भी झेल रहा है, शहर और कस्बों में यह देखने को मिलता है कि कूड़े के ढ़ेर से रोटी का टुकड़ा बीनना व पॉलिश करना, भीख मांगना तथा पढ़ने-लिखने की उम्र में खतरनाक कल कारखानों में कार्य कर अपने बचपन खो रहे हैं।

मैं स्वयं की कड़ी मेहनत से साधन सम्पन्न होकर भी नेताओं की मेहरबानी से जेल गया तथा जेल में जाकर देखा कि 70 प्रतिशत लोग इस देश के पूंजीपतियों एवं नेताओं की वजह से जेल में हैं, जिनका कोई दोष नहीं है, अपराध केवल मात्र उनका इतना ही है कि वे गरीब हैं जिनकी गरीबी व मजबूरी का ये सफेद पोश नेता व धनाढ्य वर्ग फायदा उठाकर इनका दिन और रात येनकेन प्रकारेण शोषण करते रहते हैं। जब ये गरीब लोग अपनी आवाज को बुलन्द करते हैं तो उनको उठवाकर जेल में डलवा दिया जाता है अथवा उनकी आवाज को दफन कर दिया जाता है। हिन्दुस्तान में कानून के रखवाले नेता और पूंजीपति को देखते ही टेबल पर कानून बदल जाता है जिसकी लोकसभा या विधानसभा में स्वीकृति लेने की आवश्यकता नहीं होती है। इसका मैं जीता जागता छः फुट का इन्सान स्वयं भुक्तभोगी हूँ।

कमजोर और वंचित परिवारों की हिन्दुस्तान के विकास में सही भूमिका निश्चित करने के लिए आरक्षण व्यवस्था लागू की गयी, परन्तु शेषनागों (नेताओं) ने उसे अपना वोट बैंक का हथियार बना लिया जिसके कारण न तो वह अपना मूल उद्देश्य हासिल कर पाये और न ही समाज में कोई विशेष परिवर्तन आ पाया है।

आज देश में गरीबी, बेरोजगारी व जातिवाद बढ़ रहा है, गरीब और अमीर की खाई बढ़ती ही जा रही है। महंगाई की मार से आम जनता अब परेशान हो गयी है। देश में कालाबाजारी, मुनाफाखोरी, सट्टेबाजी और भ्रष्टाचार के कारण महंगाई अनियंत्रित हो गई है, इसके तार ऊंचे स्तर के सफेदपोश लोगों से जुड़े हैं। काले धन की समान्तर व्यवस्था अधिक आक्रामक हो गई, क्योंकि यह हमारे भ्रष्ट राजनेताओं और अधिकारियों की सांठ-गांठ है।

हम सभी जानते हैं कि नेता लोकसभा या विधानसभा में जो एक बार चुनकर चला जाता है तो उसे आम जनता से मिलने का समय नहीं है तथा आम जनता में से कोई व्यक्ति अपनी समस्या का निवारण करवाने के लिए राजधानी में आकर नेताओं के चक्कर काट-काट कर कई रातें स्टेशन या धर्मशाला में व्यतीत करता है। उनकी मजबूरी का फायदा उठाकर चुनावों में फिर वे धन्ना-सेठों से जो पैसा लेते हैं, उस गैर तरीके से लिये गये धन को चुनाव के समय देश की भोली-भाली जनता को शराब व रुपयों के दम पर वोटरों को खरीद लेते हैं तथा भोली-भाली जनता इनके चंगुल में फंस जाती है। इसके बाद नेता मंत्री बन जाता है तथा उनके समभागों में अफसरों को मनमाने तरीकों से पैसा वसूलने की खुली छूट मिल जाती है। इसलिए सरकारी ऑफिसों की हर खिड़की का दरवाजा पैसा मांगता है।

प्रश्न है? भ्रष्टाचार कहाँ से शुरू होता है, मेरा मानना है कि भ्रष्टाचार ऊपर से आता है जब हमारे राजनेता मोटी-मोटी रकमें लेकर अफसरों की नियुक्ति और ट्रांसफर करेंगे तो जिसने एक करोड़ दिया है उसकी निगाहें हर समय सौ करोड़ इकट्ठा करने पर होगी, उसे किसका भय होगा वह जनता या देश का कार्य क्यों करेगा। इसका उदाहरण प्रशासन के बड़े पदाधिकारी एवं सरकारी महकमें के आला अफसर एवं पूंजीपतियों के उदाहरण आज राजधानी में देखने को मिल जाते हैं। ऐसे लोग कानून को जेब में रखकर धूमते हैं, कानून है तो सिर्फ गरीबों के लिए।

आज रिश्वत शब्द ही समाप्त हो गया है, उसका नाम बदलकर सेवा भत्ता हो गया है, बिना सेवा भत्ता के इस देश में कोई काम नहीं होता है चाहे आप सरकारी कार्यालयों के चक्कर काटने में दर्जनों जोड़ी जूतों को घिस दो, लेकिन निराशा ही हाथ लगती है। क्या हमारे देश के वीर जवानों एवं महान नेताओं ने आजादी इसलिए हासिल की थी कि हमें यह दिन देखना पड़े।

युवाओं जागो और खड़े हो जाओ। नेताओं के कहने पर हमेशा धरना, प्रदर्शन

राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान मत पहुंचाओ। इससे ये भ्रष्ट नेता अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। देश की तरक्की और विकास हेतु धरना, प्रदर्शन शुरू करो। भ्रष्टाचार, मिलावट एवं सरकारी सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाने वालों का डटकर विरोध करो। ऐसा कानून बनवाओ, अभी हमारे देश की न्याय प्रणाली जीवित है, देश में यदि कानून कहीं है तो वह है हमारी न्याय पालिका। मेरे जागरूक देश के नौजवानों इस लेख के माध्यम से सचेत करता हूँ कि यदि आपने समय रहते अपनी आवाज को बुलन्द नहीं किया तो जिस प्रकार कार्यपालिका व व्यवस्थापिका का पतन हो चुका है उसी प्रकार अपनी न्याय प्रणाली का भी यही हाल बना देने पर आतुर हैं। इन राज नेताओं और पूंजीपतियों के भरोसे आम आदमी का विश्वास उठ गया है।

हाल ही में विश्व का तथाकथित ताकतवर थानेदार (ओबामा) हिन्दुस्तान में आया तो संसद में 35 मिनट के भाषण के दौरान 34 बार नेताओं ने तालियां बजाई, जबकि हम आज से नहीं यह वर्षों से जानते हैं कि अमेरिका की कथनी और करनी में रात-दिन का फर्क है। हमारे इन्हीं नेताओं को अमेरिका में प्रवेश करते समय एयरपोर्ट पर कपड़े उतरवाये जाते हैं। इन समाचारों से आप और हम सभी भलीभांति परिचित हैं।

लिखते-लिखते

मेरे प्रिय देशवासियों! पता नहीं आप कब जागोगे। परन्तु देश आजाद होने के बाद सबसे बड़े घोटाले से सरकार का संचार मंत्री घोटालों का राजा बन गया। आदरणीय प्रधानमंत्रीजी चुप क्यों बैठे हैं? इसे चुप्पी या निष्क्रियता न समझें हुजूर ये तो सरकार बनाते समय हुए वायदों का गठबन्धन धर्म निभा रहे हैं।

''तीन नेताओं में दो बेईमान तो भी मेरा भारत महान।''

कितने साल रहेगा महान, जरा सोचो?

जय हिन्द!

तेजा सरेमिक
मदनगंज-किशनगढ़ (अजमेर)

अणुव्रत के उपहार

कल्याणकारी काम का सत्कार करता चल
अणुव्रत के जरिये जन-जन का उपकार करता चल
धरम करम के आंगन चमके, जब धीरज का धन
कंचन सी काया में आये, निर्मल निश्चल मन
संतोषी मन का संयम से, सत्कार करता चल
अणुव्रत के जरिये जन-जन का उपकार करता चल
अणुव्रत की झोली में मोती वतन परस्ती के
सत्य अहिंसा और सादगी अमन परस्ती के
सेवा समर्पण से सुखी संसार करता चल
अणुव्रत के जरिये जन-जन का उपकार करता चल
अपनापन कर दे मन पावन, नैतिकता के बोल
भाईचारा मीठा कर दे, अणुव्रत मिसरी घोल
जन भावना में भक्ति के भण्डार भरता चल
अणुव्रत के जरिये जन-जन का उपकार करता चल
जितना जीवन यापन करना, उतना रख लो पास
बाकी दे दो दीन दुःखी को, जो कर बैठा आस
मुरझाई जीवन बगिया को गुलजार करता चल
अणुव्रत के जरिये जन-जन का उपकार करता चल
कभी किसी पे क्रोध न करना, धीरज धरना वीर
सच का साथ निभाते रहना, निर्भय हो गंभीर
राही अहिंसा की डगर तैयार करता चल
अणुव्रत के जरिये जन-जन का उपकार करता चल
नशा, नशेमन को बिक वादे दे ये कर दे कंगाल
तम्बाकू जीते जी कर दे सुन्दर तन कंकाल
बिन रोग जीवन जीने की मनुहार करता चल
अणुव्रत के जरिये जन-जन का उपकार करता चल
रिश्वत लेना देना जग में काम बुराई का
जैसे अफसर बाबू कर ले काम कमाई का
इनको जतन से जेल का हकदार करता चल
अणुव्रत के जरिये जन-जन का उपकार करता चल
प्राणी प्राण बचाने वाला वो क्यों लेगा प्राण
लालच खुदगर्जी फैला कर हिंसा हरती प्राण
बारूद की बुनियाद को मिसमार करता चल
अणुव्रत के जरिये जन-जन का उपकार करता चल
हर जान को जी जान से प्यार कर प्यारे
वो जानवर जो जानवर को जान से मारे
हारेगी हिंसा एक दिन ललकार करता चल
अणुव्रत के जरिये जन-जन का उपकार करता चल
भिक्षु महा तपस्वी तुलसी महाप्रज्ञ का साथ
सदा रहे इन्सान के सर पे महाश्रमण का हाथ
'जब्बार' इन पे जिन्दगी निसार करता चल
अणुव्रत के जरिये जन-जन का उपकार करता चल

■ **अब्दुल जब्बार,** *नूर निकेतन, 48, कुम्भानगर बाजार, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)*

अपराध संस्कृति और राजनीति

अशोक सहजानन्द

मनु कहता है कि दण्डनीय अपराधी को सजा देनी चाहिए, अगर वह छूट जाता है तो अधर्म होगा लेकिन आज का पीनल कोड़ (आई.पी.पी., सी.पी.पी.) कहता है कि अपराधी दण्ड पाये बिना रह जाये तो दोष नहीं पर निरपराधी दण्ड का शिकार हो जाए तो बड़ा अधर्म होगा और इसी की आड़ में अपराधी आज बचकर निकल जाते हैं।

जैसे बुद्धिमानी एक 'वैल्यू' है, बेवकूफी भी एक वैल्यू है और मूल्यहीनता के दौर में यह वैल्यू काफी प्रचलित है। आज के माहौल में यह वैल्यू ज्यादा लाभदायक है। आज लालबत्ती की या बिना बत्ती की महंगी कारें, साथ में चार आदमी चाहिएं। कुछ खास किस्म के नारे हों तो कहना ही क्या? ऐसे आवरण के सामने अच्छे-अच्छे अक्लमंद ही अपनी अक्लमंदी भूल जाते हैं। और यह मान्यता है कि खोटा सिक्का खरे सिक्के को बाजार से बाहर कर देता है। इस प्रकार सामाजिक जीवन में अपराध स्थापित होते रहते हैं।

राजनीति में चरित्र और सेवा के मूल्यों के नितांत अभाव में अपराधीकरण के जाल को और फैला दिया है। देश में माफिया गिरोह की ताकत और नियंत्रण इतना ज्यादा हो गया है कि समानान्तर सरकारें चला रहे हैं। राजनीतिज्ञों, अपराधियों और प्रशासनिक अधिकारियों के बीच सांठ-गांठ है। इनके पास मजबूत तंत्र है। पाँच सितारों का आतिथ्य है। जीवित या मुर्दा मांस है। इस प्रकार लूट-खसौट का अपना ही एक 'नेटवर्क' बन गया है।

जमीन को हड़पने वाले भू-माफिया की अपनी एक दुनिया है। ऐसे किस्सों की संख्या करोड़ों में है। बुद्धिबल के आधार पर भी एक माफियागिरी पनपी है, जो दिन-पर-दिन नये-नये घोटालों के रूप में सामने आ रही है। आज कन्याओं और महिलाओं के साथ बलात्कार एक आम बात हो गई है। बच्चियों और महिलाओं को जब हम सुरक्षा नहीं दे सकते तो मानव-अधिकारों की बात करना मात्र ढोंग ही है।

कुर्सी संस्कृति में मनुष्य छोटा और कुर्सी बड़ी हो गई है। दोष कुर्सी का नहीं, कुर्सी पर बैठने वालों का है और उनसे कहीं बढ़कर, कुर्सी पर बैठे गलत लोगों के आगे सिर झुकाने वालों का है। राजनीतिक लोगों को सरलता से अपराधी सुलभ हो जाने का एक बहुत बड़ा कारण देश में सुरसा के मुँह की तरह बढ़ती हुई गरीबी भी है। गरीबी की मार से पीड़ित लोग जब समाज में चारों ओर फैला भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद धनी-व्यक्तियों का विलासितापूर्ण जीवन, अपराधियों को मिलता राजनैतिक संरक्षण देखते हैं तो चाहे-अनचाहे उनके कदम भी अंधेरी दुनिया की ओर बढ़ जाते हैं। देश के कर्णधारों को इस बात की कोई चिंता नहीं है कि देश की जनता को मूलभूत सुविधायें मिल रही हैं या नहीं। वे तो केवल अपनी तिजौरियां भरने में ही व्यस्त हैं।

आज की राजनीति में पैसा ही सबकुछ बनकर रह गया है। यदि चोर उच्चके, जेब-कतरे, डकैत अपने ढंग से धन उगाही में मशगूल हैं तो देश के राजनेता भी राष्ट्र की अस्मिता पर कालिख पोतकर अपनी अनूठी शैली से धनोपार्जन में मशगूल हैं। राजनीतिज्ञ पैसे के बल पर ही अपनी राजनैतिक दुकान चलाते हैं और इस दुकान के बल पर अंधाधुंध पैसा बटोरते हैं। बड़े-बड़े आर्थिक घोटाले करने वाले ये ही राजनीतिक धुरंधर या उनका वरद-हस्त प्राप्त उनके चहेते होते हैं और जिसका दुष्परिणाम समाज का प्रत्येक तबका दूषित संस्कार के रूप में भोगता है।

शिक्षा-साहित्य-कला-संस्कृति, समाज का कोई भी क्षेत्र शेष नहीं रहा जहाँ राजनीति के अपराधिक चरण न पड़े हों। आज पाश्चात्य संस्कृति का भूत तथाकथित सुसंस्कृत भारतीय समाज पर हावी है। फिल्मों में, टी.वी. सीरियलों में अपराधियों की इन जमातों का जो चित्रण किया जाता है, वास्तविकता उससे कहीं अधिक भयावह और खतरनाक है। अपहरण, फिरौती, हत्याओं, तस्करी का ग्राफ निरंतर ऊपर की ओर बढ़ता ही जा रहा है। अपराधों पर नियंत्रण पर खर्च होने वाली राशि ने जनहित की दूसरी योजनाओं का गला घोंट दिया है। और अपराध हैं कि ज्यों-ज्यों दवा की गयी, मर्ज बढ़ता जा रहा है।

वर्तमान परिवेश में राजनीति से सर्वथा पृथक समाज के हित में लगे समाज सुधारक, धार्मिक, सांस्कृतिक आध्यात्मिक नेता ही कुछ कर सकते हैं क्योंकि आज राजनैतिक नेतृत्व तो पूर्णतः असफल हैं, अपने दायित्वों के निर्वाह में। किसी भी राजनीतिक दल के नेतृत्व में भीतरी ईमानदारी और कर्मठता जैसे आवश्यक गुणों का सर्वथा अभाव है। उनसे किसी भी प्रकार की अपेक्षा तो अब बेमानी और आत्म-प्रवंचना जैसी लगती है। फिर.....?

मेरे अपने विचार से इन कर्णधारों को प्रेरित करने के लिए भी राजनीति से परे रहकर कार्यरत लोगों को ही आगे आना होगा। हमारे संत, महात्मा तथा मुल्ला-मौलवी यदि सच्चे मन से चाहें तो बहुत कुछ कर सकते हैं। आज भी समाज पर उनकी पकड़ है। आम आदमी वैसे भी शांतिप्रिय और सबके सुख-दुख का सहभागी होकर जीना चाहता है। पर वर्ग और जाति के नाम पर राजनैतिक नेताओं ने उसे बांट ही दिया है। शांति और एकता में आखिरी कील ठोकने का काम हमारे धर्म के ठेकेदार कर रहे हैं।

प्रधान संपादक : 'सहज आनन्द' (त्रैमासिक)
239, गली कुंजस, दरीबा कलां,
चांदनी चौक, दिल्ली-110006

"आचार्य श्री तुलसी कहा करते थे कि ''अणुव्रती व्यक्ति उपलब्धियों से फूलता नहीं है और असफलताओं पर धैर्य नहीं खोता है।'' जिस किसी ने भी 24 नवंबर 2010 को दूरदर्शन के किसी भी चैनल पर नीतिश को देखा होगा वह इस बात से सहमत होगा कि दो तिहाई बहुमत मिलने पर भी वे सम रहे। उन्होंने तो यहाँ तक कहा कि यह विजय किसी नेता विशेष की न होकर बिहार की जनता की विजय है।"

बिहार चुनाव : अणुव्रत मूल्यों की विजय

डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी

24 नवंबर 2010 का दिन अणुव्रत के मूल्यों की विजय का दिन कहा जा सकता है। बिहार चुनाव के परिणाम बता रहे थे कि अब जाति, सम्प्रदाय, वर्ग एवं धर्म आधारित राजनीति के दिन लद गये हैं। लालू प्रसाद यादव और रामविलास पासवान के जाति आधारित राजनीति की हवा निकल गयी। परिवारवाद का तो मानों जनाजा ही निकल गया। लालू यादव जो कभी (1990 से 2005 तक) बिहार के भाग्यविधाता बने हुए थे, की पत्नी और सालों का हारना परिवारवाद के मुंह पर जोर का तमाचा समझा जा सकता है। पत्नी राबड़ी देवी अपने दोनों क्षेत्रों राधोपुर और सोनपुर से चुनाव हार गयी। कांग्रेस के टिकट से लड़े लालू के साले साधु यादव और निर्दलीय रूप में लड़े सुभाष यादव अपनी अपनी जमानत जब्त करा बैठे। परिवारवाद के दूसरे सिपहसालार रामविलास पासवान के दोनों भाई पारस पासवान जिन्हें उपमुख्यमंत्री बनाने की लालू ने घोषणा की थी कि साथ रामचन्द्र पासवान भी चुनाव हार गये। जाति और परिवारवाद के बल पर पूर्व में चुनाव जीतने वाले लालू और रामविलास की पार्टी को करारी शिकस्त खानी पड़ी। भला हो बीजेपी का जिन्हें सद्बुद्धि आयी, भले ही नीतीश के दबाव में आयी हो, ने अपने दोनों नेता गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी और यू.पी. के सांसद वरूण गांधी को बिहार के चुनाव से दूर रखा। नीतिश के समक्ष राहुल गांधी का भी जोर न चला। अपने 22 चुनावी दौरों में केन्द्र के पैसे से बिहार के विकास की बात करते रहे किन्तु बिहार की जनता को लुभा नहीं पाये। कहते हैं जिन 22 चुनाव क्षेत्रों में राहुल गांधी ने जनसभाएं की उनमें से दो विधायक ही जीत पाये।

मुख्यमंत्री नीतिश कुमार की स्वच्छ, साफ-सुथरी छवि ने जो ऐतिहासिक सफलता अर्जित की है उससे जाति और धर्म की राजनीति करने वाले नेताओं के कान अवश्य खड़े हुए हैं। उन्हें जोर का झटका धीरे से लगा कहने की अपेक्षा जोर का झटका जोर से लगा कहना अधिक उपयुक्त होगा। नीतीश और भाजपा के जनतांत्रिक गठबंधन को 243 में से 206 सीटें (जनता दल यू. को 115 और भाजपा को 91) प्राप्त होना विपक्षियों को धराशायी कर देना है। यों कहना उपयुक्त होगा कि इस चुनाव में अणुव्रत के मूल्यों की विजय हुई है। अणुव्रत की आचार संहिता में एक सूत्र है-- **''मैं चुनाव में अनैतिक साधन नहीं अपनाऊंगा।''** कभी भय और बूथ-कैप्चरिंग से चुनाव जीतने वालों की इस चुनाव में दाल नहीं गली। भ्रष्ट और माफिया लोगों की एक नहीं चल पायी। बाहुबलियों के पैरों तले जमीन भी खिसक गयी। पप्पू यादव और आनन्द मोहन जैसे बाहुबलियों की पत्नियों का हारना इस बात को सिद्ध करता है कि नीतिश के बिहार में गुण्डों और बाहुबलियों के दिन अब लद गये।

विगत पाँच वर्षों में नीतिश कुमार की पहचान एक विकास पुरुष के रूप में बनी है। 15 वर्षों के लालू के राज के बाद नीतिश को अशान्त, भयाक्रान्त, भूखा और पिछड़ा हुआ बिहार मिला था, जहाँ सूर्यास्त के बाद महिलाओं का घर से निकलना मुश्किल हो गया था। आये दिन अपहरण और बलात्कार तथा फिरौती की घटनाएं सुनायी पड़ती थी। इस विषम स्थिति से बिहार को निकालना आसान नहीं था। किन्तु इसके लिए नीतिश की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। उन्होंने अपने पाँच वर्ष के सुशासन से अपहरण और फिरौती को इतना नीचे दफन कर दिया कि अब इनका नामलेवा भी नहीं रह गया। 50 प्रतिशत आरक्षण महिलाओं के लिए पंचायत में देकर उन्होंने

घर की चारदीवारी में कैद महिलाओं को स्थानीय स्तर पर शासन करने का अवसर दिया। प्रत्येक कन्या को साइकिल देकर घर से स्कूल जाने के लिए प्रेरित किया। महिला विकास के लिए किये गये नीतिश के कार्य भारतीय राजनीति के स्वर्णाक्षरों में अंकित होंगे। नीतिश की सफलता का राज अणुव्रत का वह सूत्र है जिसमें कहा गया है कि **'मैं आचरण और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा।''** नीतिश की यह मान्यता है कि राजनीति लूट के लिए नहीं, सात पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए नहीं अपितु राजनीति जनता-जनार्दन की सेवा के लिए है। नीतिश की विजय का एक कारण उनका सामाजिक न्याय भी माना जा सकता है। उन्होंने गरीब से गरीब को भी राज्य की मुख्यधारा से जोड़ा। उनके क्षेत्रों में उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर योजनाओं का अम्बार लगा दिया और उन्हें खुशहाल जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। ये महादलित लोग पहले चुनाव को समझते भी नहीं थे। संभवतः पहली बार वोट भी दिये। लालू के राज्य में सड़कों की जो दुर्दशा थी उसका शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। वहाँ आज बेहतर सड़कों से जनता खुशहाल है। बिहार के श्रमिकों एवं किसानों को समय पर बीज और खाद-पानी के प्रबन्ध से नीतिश शासन की खूब सराहना हुई है।

आचार्य श्री तुलसी कहा करते थे कि ''अणुव्रती व्यक्ति उपलब्धियों से फूलता नहीं है और असफलताओं पर धैर्य नहीं खोता है।'' जिस किसी ने भी 24 नवंबर 2010 को दूरदर्शन के किसी भी चैनल पर नीतिश को देखा होगा वह इस बात से सहमत होगा कि दो तिहाई बहुमत मिलने पर भी वे सम रहे। उन्होंने तो यहाँ तक कहा कि यह विजय किसी नेता विशेष की न होकर बिहार की जनता की विजय है। बिहार की जनता ने इस प्रकार का बहुमत देकर मेरी चुनौती भी बढ़ा दी है और हमारी कोशिश होगी कि हम बिहार की जनता की आशाओं पर खरा उतरें। इस प्रकार का संतुलित जवाब कोई अणुव्रती नेता ही दे सकता है। मुझे नहीं मालूम की नीतिशजी अणुव्रत और अणुव्रत के मूल्यों को जानते हैं या नहीं किन्तु इतना अवश्य कहूँगा कि इन मूल्यों के आधार पर ही उन्होंने एक नये बिहार की कल्पना की है। आगे के पाँच साल जहाँ उनके लिए चुनौतीपूर्ण होंगे वहीं यदि वे पूरी तरह से शान्त, समृद्ध और खुशहाल बिहार का मूर्तरूप दे दिये तो भारतीय राजनीति की दिशा बदल जायेगी। जरूरत भी है भारतीय राजनीति को भ्रष्टाचारियों, भू-माफियाओं, अपहरणकर्ताओं, मिलावटखोरों, तस्करियों, बाहुबलियों आदि से मुक्त कर स्वच्छ, साफ-सुथरी एवं ईमानदार छवि वाले व्यक्तियों को जोड़ने की ताकि एक नये भारत का निर्माण हो सके।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय,
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
लाडनूं - 341306 (राजस्थान)

पाठक दृष्टि

- 'अणुव्रत' के सभी अंक यथा समय प्राप्त हो रहे हैं। उत्कृष्ट कोटि की इस पत्रिका के सभी आलेख ज्ञानवर्द्धक एवं सारगर्भित होते हैं। यात्रा के मनोरम वृतांतों को पढ़कर भी जानकारी प्राप्त होती है। आपकी अगाध निष्ठा एवं लगन नमनीय है। आप स्वस्थ पत्रकारिता को आगे बढ़ाने में तत्पर हैं।

  -- लक्ष्मीरानी लाल, जमशेदपुर

- 'अणुव्रत' पाक्षिक 1-15 दिसंबर 2010 अंक पढ़ने का अवसर मिला। पहले भी अनेक बार पत्रिका पढ़ी है। आज की उपभोक्तावाद संस्कृति ने समाज में एक ऐसी प्रतिस्पर्द्धा पैदा कर दी है कि आज आदमी में नैतिकता और मानवीय संवेदना सुप्त सी हो गयी है। आज जातिवाद, साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयवाद के घुण ने समाज को खोखला कर दिया है। चहुँओर बेईमानी, मिलावट और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। लेकिन अणुव्रत की यह पत्रिका कीचड़ की दलदल में भी एक कमल के फूल की चमक बनाए हुए है। पत्रिका पढ़कर मन प्रफुल्लित हो गया। ऐसा लगता है कि आज भी पीत पत्रकारिता के दौर में अणुव्रत पत्रिका भारतीय समाज को स्वस्थ मार्गदर्शन दे रही है। आपका संपादकीय भी बहुत सुंदर लगा। पत्रिका के सभी लेख पठनीय एवं मननीय हैं। इस हेतु आपको साधुवाद।

  -- अभिमन्यु, दिल्ली

- 'अणुव्रत' पाक्षिक 16-30 नवंबर 2010 में बालपीढ़ी पर प्रस्तुत लेख पढ़े। विशेष तौर पर बच्चों पर किया गया एक प्रयोग ''बच्चों से छीन ली बंदूक - दिया प्रेम का सबक'' अत्यन्त रोचक तो है ही साथ ही एक अच्छा समाधान भी है जो बच्चों में हिंसा की प्रवृत्ति को खत्म करने की दिशा में सफल प्रयास है। बच्चों के हंसते-खेलते चित्रों ने इस अंक को नया रूप दिया है। कवर पृष्ठ पर विभिन्न खिलौनों के साथ दिया गया बच्चों का चित्र अनुशासित हो अपनी भोली-भाली भाव-भंगिमा से आकर्षित कर रहा है। संपादकीय में बच्चों के दर्द और उनकी बाल मानसिकता को बहुत बारीकी और सटीकता से प्रस्तुत किया है जो वास्तविकता दर्शाती है। सभी लेख प्रेरणास्पद हैं, जिसके लिए सभी लेखकों ने बच्चों को लेकर बड़ी गहनता से बाल-मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया है, वह प्रशंसनीय है। आशा है पत्रिका नैतिक एवं स्वस्थ पत्रकारिता की दिशा में अहम भूमिका निभाती रहेगी।

  -- देवेन्द्र मोहन, दिल्ली

देशभक्ति के संस्कार :1:

कैलाश वर्मा

कड़कड़ाती सर्दी भरी रात! घर से बाहर पैर रखना तो दूर रजाई से अगर कोई अंग बाहर रह जाए तो मानो लकवा मार गया हो। दांतों को भींचकर रखने पर भी उनकी किटकिटाहट बन्द नहीं हो पा रही थी। ऐसी जाड़े की रात में भी सीमा की सुरक्षा पर तैनात सैनिक पूर्ण जागरूक थे और उनके अलावा सारे सैनिक अपने-अपने कैम्प में आराम के लिए जा चुके थे।

एक सैनिक टुकड़ी का निरीक्षक, सैनिक नेता अक्षय सिंह। जिसका दृढ़ निश्चय, देशप्रेम, गहन आत्मविश्वास, तीव्र दृष्टि और शरीर सौष्ठव देखने वाले को बरबस ही मन्त्रमुग्ध कर लेता था। स्वस्थ शरीर व प्रसन्नमन का धनी अक्षय नेतृव की कला में बेजोड़ था। उसका रोब-रवैया शत्रुओं के छक्के छुड़ाता था और यही कारण था कि वह बहुत कम समय में ही एक बहुत बड़ी टुकड़ी का नेता बन गया था। उसके आदेश की अवहेलना करना कोई मामूली बात नहीं थी। गत पाँच दिन पहले हुई एक मुठभेड़ में अक्षय बुरी तरह घायल हो गया था। बचने की आशा नहीं थी पर डाक्टर ने आत्मविश्वास से इलाज शुरू किया। सर्जू नामक एक व्यक्ति अक्षय की देखरेख के लिए उसके ही कैम्प में रहता था, वह अब भी सिगड़ी के ताप से अक्षय के घायल बदन को सेंक रहा था।

अक्षय ने ज्योंही करवट ली उसके मुख से दर्द के मारे चीख निकल पड़ी। वह कराह उठा।

सर! लगता है आपका दर्द बहुत बढ़ रहा है। कुछ और उपाय करूं? सिगड़ी पर हाथ सेकते हुए सर्जू ने कहा।

सर्जू! शरीर के एक-एक अंग में दर्द का आभास हो रहा है। और ऊपर से यह कड़ाके की ठण्ड। आखिर तुम मुझे कब तक ताप पहुँचाते रहोगे। सो जाओ सर्जू! सो जाओ! तुम भी तो थके हुए हो।

सर! आप मेरी चिन्ता न करें। मैं तो सिगड़ी के सहारे रात बिता दूंगा। अगर आपको कुछ आराम दे पाया तो मेरा जीना सार्थक हो जाएगा।

अक्षय की कंपकंपी बढ़ती जा रही थी। सर्जू ने एक और गर्म कम्बल बैग से निकाला और उस पर डाल दिया। ज्योंही अक्षय ने कम्बल ओढा, उसके मुख पर कोई चीज गिरी। अक्षय ने देखा कम्बल की तह में रखा हुआ यह पत्र आज से पाँच साल पहले उसे मिला था जो उसकी मां का लिखा हुआ था और उसके पुत्र-जन्म के उपलक्ष्य में मां ने बधाई स्वरूप दिया था। पत्र पर मां के हाथ की लिखावट को देखते ही उसे अतीत की स्मृतियां ताजा हो आई। वह सारे दर्द को भूल कर खो गया अपने सुनहरे अतीत में। बचपन से लेकर आज तक का जीवन चलचित्र की भांति उसके सामने था।

अक्षय के पिता गोविन्द सिंह उसकी शादी से पहले ही देश के लिए बलिदान हो चुके थे। अक्षय अपनी माता निशादेवी की चौथी संतान था। लेकिन उसके तीन भाई उसके जन्म से पहले ही भारतमाता की गोदी में समा चुके थे। इन सबका श्रेय था अक्षय की माता निशादेवी को। एक ही घर के चार-चार सदस्य देश की धरती को अपने खून का अर्घ्य चढ़ा चुके थे और यह पाँचवां सदस्य भी देश पर मर-मिटने के लिए दृढ़ संकल्पी था।

निशादेवी ने अक्षय के भीतर भी देशभक्ति के संस्कारों का वपन किया और उसे सैनिक प्रशिक्षण की ओर अग्रसर कर दिया।

प्रतिभा सम्पन्न अक्षय ने बहुत जल्दी ही सैनिक शिक्षण कोर्स को पूरा कर लिया और अब उसकी शादी की तैयारियां की जाने लगी।

निशादेवी के निर्देशन में खूब धूमधाम के साथ शादी सम्पन्न हुई। शादी में आए सभी पारिवारिक लोग विदा ले चुके थे। अब घर में केवल तीन सदस्य थे--अक्षय उसकी पत्नी जया और उसकी मां निशादेवी।

अत्यधिक उल्लास के साथ अक्षय और जया ने अपना नव-जीवन शुरू किया। सात दिन ही वह पत्नी के साथ रह पाया था कि उसके भीतर एक तूफान उठ खड़ा हुआ।

पोस्टमैन ने वह टेलीग्राम जब निशादेवी के हाथ में थमाया तो निशादेवी भीतर तक सिहर उठी। उस तार में तत्काल सीमा पर ड्यूटी देने के लिए अक्षय को आदेश मिला था। निशादेवी के सामने जया का मासूम चेहरा घूम गया। वही निशादेवी जो आज से पहले इस रूप में कभी कम्पित नहीं हुई थी, जिसके पति व तीन पुत्र इसी प्रकार मोर्चे पर जाते रहे थे, आज न जाने क्यों वह उद्विग्न सी हो रही थी। उन्हें शंका थी कि जया अक्षय के बिना कैसे रह पाएगी। क्या अक्षय की अनुपस्थिति में वह उसे अच्छी तरह से सम्भाल लेगी?

अक्षय के सामने भी एक बहुत बड़ा द्वन्द्व खड़ा हो गया। एक तरफ कर्त्तव्य का पालन, देशप्रेम की भावना तो दूसरी तरफ पत्नी का प्यार, उसका नया जीवन। अक्षय ने मन ही मन सोचा-- अगर ऐसा पता होता तो अभी शादी ही क्यों करता?

अक्षय की उदासी छुपी नहीं रही। उसे उदास देख जया ने पूछ ही लिया क्या बात है? आज आप कुछ उदास नजर आ रहे हो।

अक्षय चुपचाप खड़ा सोच रहा था- क्या कहूँ, इस पर क्या बीतेगी? उसने बोलने के लिए मुंह खोलना चाहा पर शब्द निकल नहीं पा रहे थे। जया ने पुनः दबाव डालते हुए कहा---लगता है मुझ पर ही विश्वास नहीं है जो आप मुझसे भी छिपाये जा रहे हो।

अक्षय फिर भी शब्दों का चुनाव नहीं कर पाया। उसने जेब से तार निकाला और जया के हाथों में थमा दिया।

जया ने ज्योंही तार पढ़ा तो आश्चर्य भरी नजरों से पूछ बैठी--- ''इसमें उदास होने की क्या जरूरत है? यह तो खुशियां मनाने का अवसर है। देश के दरवाजे से आपको निमन्त्रण आया है। आप कितने सौभाग्यशाली हैं। मातृभूमि ने आपको याद किया और आप उदास हो गये?''

नहीं जया नहीं! मैं इसलिए उदास नहीं हुआ था। मैं तो.....तुम्हें लेकर चिन्तित हूँ, तुम्हारा क्या होगा जया!

''आप मेरी चिन्ता न करें। मैं इतनी कायर नहीं हूँ। इस देश के लिये मैं अपना सर्वस्व न्यौछावर कर सकती हूँ। काश! मैं भी युद्धभूमि में आपके साथ उतर पाती और शत्रुओं को भगाकर देश की सुरक्षा कर पाती।''

''जया! तुम कितनी महान् हो! मैं तो तुम्हारे बारे में कुछ और ही सोच रहा था पर तुम्हारी उच्चता और देश प्रेम के आगे मैं भी हतप्रभ हूँ।''

शुभ मुहूर्त्त में मंगलगीतों के साथ माता निशादेवी ने अक्षय के माथे पर तिलक किया और सौ-सौ आशीर्वाद देते हुए कहा--पुत्र! भारतमाता की लाज को सुरक्षित रखना। उसके स्वतंत्रता सुहाग को अमर रखने के लिये सतत संघर्ष करना। आज मैं अपनी चौथी सन्तान को भी देश के सुपुर्द करते हुए धन्यता का अनुभव कर रही हूँ।

माँ से विदा ले अक्षय जया के पास पहुँचा। जया ने स्वयं अपने हाथों से उसकी कमर में हथियार बांधे और कन्धे पर बंदूक देते हुए कहा--आप मेरी चिन्ता कभी मत करना। मैं मांजी के साथ बहुत आनन्द से रह लूंगी। वह दिन दूर नहीं जब आपकी सन्तान भी आपके साथ होगी। आप अतिशीघ्र विजयश्री का वरण करें यही मेरी हार्दिक मंगल भावना और कामना है।

अक्षय आज विशेष सुन्दर नजर आ रहा था। उसके सौष्ठव शरीर पर यह फौजी वर्दी कितनी आकर्षक लग रही थी। किसी की नजर न लग जाये इसके लिए माता ने एक काला टीका भी लगा दिया था।

और उसके बाद पाँच साल हो गए। वह अन्तिम पत्र जो उसकी मां ने पुत्र जन्म के उपलक्ष में दिया था आज उसकी स्मृतियों को ताजा कर रहा था।

उसके बाद....उसके बाद क्या हुआ? अक्षय नहीं जानता। उसने अपनी सोच पर दबाव डाला ताकि वह जान सके कि उसके बाद क्या हुआ? पर.....पर वह नहीं जान पाया।

स्मृति-पटल पर भी वही उभरता है जो अनुभूत होता है। जो अनुभूत नहीं वह चाहे कितना भी जोर डालो स्मृति में नहीं आ सकता।

अक्षय बेचैन सा हो गया। पाँच साल से उसके घर से कोई भी समाचार क्यों नहीं आ रहे हैं? उसने यहाँ से कितने पत्र दिए पर एक का भी जवाब क्यों नहीं मिला?

जया का चेहरा और मां का आशीर्वाद उसे बार-बार याद आ रहा था। उसका बच्चा....च्चा....च्चा। तड़प उठा वह अपने बच्चे को देखने के लिए जिसका वह पिता तो है पर आज तक उसने देखा नहीं। अक्षय डूब गया अपने परिवार के मोह में।

इधर तन की वेदना, उधर मन का ज्वार। दोनों बढ़ते ही गए और अक्षय उनसे कराहता रहा।

वह भी तो कितना विवश है। अपने अफसर के सामने कितनी बार घर जाने की अनुमति मांगी पर अफसर अवकाश नहीं दे रहा था। उसका कुशल नेतृत्व उसे बांधे हुए था।

पर आज अक्षय का बांध टूट गया। गिरते मनोबल ने कर्त्तव्य पर गहरा आवरण डाल दिया।

उसने सोचा-क्या पाया इस फौज में भर्ती होकर? समय पर खाना नसीब नहीं, नींद को तो कोई स्थान हीं नहीं। दिन-रात भागदौड़, चिन्ता, आशंका, भय। बीमारी की हालत में भी लावारिश की भांति पड़े रहना। क्या यही सब कुछ मिलता है देशप्रेमियों को? क्या यही हालत होती है देश के लिए समर्पित सेनानियों की? मोह का भूत उस पर बुरी तरह से सवार हो गया।

उसने निश्चय किया वह अब और ज्यादा नहीं रहेगा। वह अपने घर जाकर मां, पत्नी व बच्चे की सम्हाल लेगा और उनके साथ जीवन के आनन्द का उपभोग करेगा।

मगर....मगर....वह जाएगा कैसे? बिना अफसर की अनुमति के जाना असम्भव है। वह एक उच्चपद प्राप्त, कुशल नेतृत्व का धनी, सुरक्षा सेना का नेता है। देश को संकट की घड़ी में छोड़कर जाना क्या उचित है? उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह कैसे जाए।

मैं छुपकर चला जाऊंगा, पर जाऊंगा अवश्य। मन के कोने ने कहा।

अगर तुम छुपकर जाओगे तो दुनिया तुम्हें कायर कहेगी, प्रत्युत्तर मिला।

भले कोई कुछ भी कहे, मैं इसकी परवाह नहीं करता और वह उठ कर खड़ा हो गया। उसके भीतर एक स्फूर्ति पैदा हुई, परिवार का मोह उसे धीरे-धीरे खींचने लगा।

उसने एक नजर सर्जू पर डाली जो बैठे-बैठे ही लुढ़क गया था और सिगड़ी का सेक पा गहरी नींद में चला गया था।

उसने अपना कम्बल उठाया और सर्जू पर डाल दिया ताकि वह बहुत देर तक सोता रहे और वह वहाँ से निकलने में सफल हो जाए।

उसने खूंटी पर टंगे सर्जू के कपड़े पहने, अपनी फौजी ड्रेस उतारी ताकि कोई भी उसे पहचान न सके और साधारण व्यक्ति समझ किसी को भी उस पर संदेह न हो पाए।

वह चुपके से दबे पैर तंबू में से बाहर आ गया। चारों तरफ से नजरें बचाता हुआ वह धीरे-धीरे चलता जा रहा था। वह जल्दी से जल्दी खतरे से बाहर हो जाना चाहता था ताकि आगे बढ़ने में कोई दिक्कत न आए।

(अगले अंक में लगातार.....)

72, कैलाश पार्क-अर्थला
पोस्ट-मोहननगर 201207, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संसद में बढ़ा धनकुबेरों का तादाद

मंजरी चतुर्वेदी ॥ नई दिल्ली

मौजूदा लोकसभा के कुल सांसदों में से 25 फीसदी (लगभग 128 सदस्य) सांसद उद्योगपति, कारोबारी या बिल्डर्स हैं जबकि राज्यसभा में यह आंकड़ा 10 फीसदी (लगभग 25 सदस्य) है। इससे इनके हितों के टकराव की संभावना बढ़ती है। इसी तरह संसद के दोनों सदनों में रईस सांसदों की तादाद में खासा इजाफा हुआ है। इतना ही नहीं, पिछले कुछ वर्षों में सांसदों की परिसंपत्ति में आश्चर्यजनक ढंग से बढ़त देखने को मिली है।

संसद के बेहतर परफॉर्मेंस नैशनल न्यूज चैनलों पर अपनी खास उपस्थिति दर्ज नहीं करा पाए, जबकि न्यूज चैनलों पर छाए रहने वाले स्टार सांसद टॉप टेन सांसदों की सूची में

लोकसभा में 25 पर्सेंट सांसद उद्योगपति : रिपोर्ट

ऐसे ही कुछ दिलचस्प पहलू समाज में वॉच डॉग का काम करने वाली संस्था नैशनल इलेक्शन वॉच की एक रिपोर्ट के जरिए सामने आए। संस्था द्वारा शासन व विकास पर जारी इस सिटीजन रिपोर्ट में शासन के चार प्रमुख अंगों संसद, न्यायपालिका, कार्यपालिका और स्थानीय सरकार का मूल्यांकन किया गया है। संस्था के राष्ट्रीय संयोजक अमिताभ बेहर का मानना है कि इससे शासन के चारों अंगों का न सिर्फ मूल्यांकन होगा, बल्कि इससे जुड़े सभी लोगों को भविष्य में बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरणा व प्रोत्साहन मिलेगा। रिपोर्ट के अनुसार, 14वीं लोकसभा के सर्वश्रेष्ठ पांच सांसद 15वीं लोकसभा में अपनी जगह बनाने के लिए वोटर का दिल जीतने में नाकाम रहे जबकि पिछली लोकसभा के टॉप टेन सांसदों में से सिर्फ चार सांसद ही अपनी वापसी दर्ज करा पाए।

सदन में हिट सांसद नहीं जीते चुनाव

लोकसभा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले दस में से पांच सांसद नहीं जीत सके चुनाव

विशेष संवाददाता

नई दिल्ली

सदन में जनता की समस्याओं को लेकर सरकार से सवाल पूछने और विपक्षियों पर चर्चा में बढ़ चढ़कर सक्रियता प्रदर्शित करने वाले कई सांसद दुबारा चुनाव जीतकर मौजूदा लोकसभा में पहुंचने में असफल रहे हैं। नेशनल वॉच

वॉच की एक रिपोर्ट के मुताबिक, 14वीं लोकसभा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले 10 सांसदों में से पांच अब दुबारा जीतकर 15वीं लोकसभा में नहीं पहुंच पाए।

रिपोर्ट में कहा गया है कि विपक्ष से सरकार के पूर्व कोयला मंत्री के. सी. पोकरण, पेट्रोलियम व अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री सांसद मुरलीकांत किकटी, कांग्रेस के कुरुक्षेत्र से नवीन जिंदल और मिर्जापुर से सपा के सांसद रामकेवाल सुमन देवे सांसद थे, जिनका सदन में प्रदर्शन जो

सोशल वॉच की रिपोर्ट

- सर्वे में आंकड़ों की मनोवैज्ञानी में आई खामी
- लॉबिंग, डर्टी सांसदों की संख्या बढ़ी

अच्छा रहा लेकिन वे दुबारा चुनकर नहीं आ सके। सांसदों के प्रदर्शन का आकलन सदन में उनकी हाजिरी, सदन में डिस्कशन, कानून बनाने और सदन में निजी विधेयक पेश करने जैसे पैमाने के आधार पर किया गया है।

प्रकाशित सामग्री का फिर से प्रकाशन दुष्प्रचार नहीं

चुनाव प्रचार में बांटे गए पर्चों में घोटालों और आय से अधिक संपत्ति का जिक्र था

श्याम सुमन

शीर्ष अदालत का फैसला

- सुप्रीम कोर्ट ने विधायक के रद्द निर्वाचन को बहाल किया
- मानहानि के कानून से अलग है चुनाव कानून

हल्दी घाटी में भी हैं कई वीरप्पन

मंजरी चतुर्वेदी ॥ राजसमंद से लौटकर

महाराणा प्रताप और मुगलों के युद्ध की साक्षी रही हल्दी घाटी में आजकल छोटे-मोटे वीरप्पनों का बोलबाला है। यहां के 150 हेक्टेयर से ज्यादा इलाके में फैला चंदन वन आजकल चंदन तस्करों के निशाने पर हैं। यहां चंदन के दो ताल से ज्यादा पेड़ हैं। प्रशासन की नजर बचते ही तस्कर इन पर हाथ साफ करने में लगे हुए हैं।

चीली बतुई चट्टानों से घिरी पांच किलोमीटर में फैली हल्दी घाटी महाराणा प्रताप, उनके घोड़े चेतक, चंदन वृक्षों और पैली गुलाबों की खेती के लिए मशहूर है। इस इलाके की जलवायु और मिट्टी पैली गुलाब और चंदन के लिए काफी मुफीद है। इस वन के अलावा यहां प्राइवेट बंगलों और घरों में भी चंदन के काफी पेड़ नजर आते हैं। मजे की यह बात

चंदन के तस्करों पर लगाम कसने में पुलिस नाकाम

है कि बंगलों में लगे चंदन के पेड़ों पर भी तस्कर हाथ साफ करने से बाज नहीं आते। हल्दी घाटी वन सुरक्षा समिति के अध्यक्ष मोहन श्रीमाली के अनुसार, यहां के चंदन की क्वॉलिटी बहुत ज्यादा अच्छी नहीं है। बढ़िया चंदन जहां सात से आठ हजार रुपये प्रति किलो बिकता है, तो यहां के चंदन की कीमत बाजार में दो हजार रुपये के आसपास है। यहां के चंदन का इस्तेमाल पाउडर बनाने व ब्यूटी प्रॉडक्ट्स में ज्यादा होता है। ऐसा नहीं है कि प्रशासन को इस तस्करी की जानकारी न हो। राजसमंद के जिला वन अधिकारी अशोक मैनारिया मानते हैं कि चंदन की तस्करी होती है। तस्कर कभी-कभार ही पुलिस की पकड़ में आते हैं। तस्करों का बड़ा गैंग है, जो स्थानीय लोगों के साथ मिलकर अपना काम करता है, इसीलिए ये लोग आसानी से पकड़ में नहीं आते।

पाक को जवाब देना चाहते थे मोरारजी

तत्कालीन प्रधानमंत्री ने अमेरिकी राजदूत के समक्ष दी थी चेतावनी

एजेंसियां

वाशिंगटन

■ मोरारजी देसाई – पूर्व प्रधानमंत्री

पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने 1979 में अमेरिकी राजदूत से कहा था कि यदि इस्लामाबाद ने परमाणु विस्फोट किया तो भारत इसका कड़ा जवाब देगा। अमेरिका द्वारा गोपनीय दस्तावेजों को सार्वजनिक किए जाने पर यह बात सामने आई है।

दस्तावेज के अनुसार, मोरारजी ने यह चेतावनी भारत में अमेरिका के तत्कालीन राजदूत रॉबर्ट एफ गोहीन के साथ एक बैठक में दी थी। गोहीन के आग्रह पर हुई थी। अमेरिका सरकार ने गोहीन से कहा था कि वह मोरारजी देसाई के साथ एक अनौपचारिक मुलाकात करें जिसमें किसी प्रकार की वचनबद्धता न हो। दस्तावेज में कहा गया है कि देसाई की परमाणु हथियारों के इस्तेमाल और विकास नहीं करने के मुद्दे पर किसी संयुक्त समझौते में रुचि नहीं थी।

इलाज पर फूंके 14 करोड़, ऐसा कौन बीमार था

इलाज के अधिकार से हुआ लोगों, कुल 3665 मरीजों का इलाज किया गया

नई दिल्ली

राजधानी में खेल खेलों को लेकर एक नया रिकॉर्ड सामने आया है। सरकार ने खेलों के दौरान मरीजों के इलाज के लिए अधिकम 14 करोड़ रुपये खर्च किए। सूचना के अधिकार के तहत मिली जानकारी के मुताबिक, यह राशि 3,665 मरीजों के इलाज पर खर्च की गई। उनमें खेलगांव में तैनात मेडिकल कर्मचारी और चिकित्सा केंद्र बनाए। आयोजनकर्ता मनीष सिसोदिया ने खेलों के दौरान मरीजों के इलाज पर सरकार द्वारा खर्च की गई धनराशि की जानकारी मांगी थी। दिल्ली सरकार की स्वास्थ्य सेवाओं के सार्वजनिक सूचना अधिकारी प्रवीण कुमार के मुताबिक, कुल 14,99,79,200 रुपये इलाज पर खर्च किए गए। सिसोदिया ने कहा कि इस हिसाब से एक आदमी पर यह खर्च 40 हजार रुपये पड़ता है। इस खेल महाकुंभ के दौरान किसी के गंभीर हो या घायल होने की कोई जानकारी नहीं है। इन मरीजों का ऐसा क्या इलाज किया गया जो इतनी बड़ी धनराशि खर्च हो गई।

दरबारी, महुंद की हत्या की साजिश

नई दिल्ली। तिहाड़ जेल में बंद दो कैदियों ने दावा किया है कि कॉमनवेल्थ गेम्स में भ्रष्टाचार के आरोपी दो अधिकारियों की हत्या के लिए जेल अधिकारियों ने उन्हें हथियार मुहैया कराए थे।

हत्या के मामले में जेल में बंद अमित और निशांत ने मंगलवार को तीस हजारी स्थित चीफ मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट विनोद यादव के समक्ष दायर याचिका में कहा, जेल अधिकारियों ने 20 दिसंबर को उनसे संपर्क साधकर आयोजन समिति से जुड़े टीएस दरबारी और संजय महुंद को मारने का दबाव बनाया।

हत्या की साजिश को अंजाम देने के लिए दोनों को सामान्य वार्ड से अतिसुरक्षित वार्ड में स्थानांतरित किया गया, जहां दरबारी और महुंद कैद हैं। हालांकि अमित और निशांत ने संबंधित जेल अधिकारियों के नाम का खुलासा नहीं किया। अदालत ने कैदियों के दावे को गंभीरता से लिया है। (का.सं.)

हिन्दुस्तान दैनिक, नई दिल्ली : दिसंबर 2010

ताकि हथियार न उठाएं लोग

यामिनी अय्यर

कोई भी आम व्यक्ति अगर यह समझे कि भारत में लोकतंत्र गंभीर खतरे में है, तो उसे गलत नहीं ठहराया जा सकता। हाल ही में प्रकाश में आए घोटाले इस बात के लिए बहुत कम संदेह छोड़ते हैं कि हमारे लोकतांत्रिक ढांचे में भ्रष्टाचार रच-बस गया है। उत्पादकता या परिणाम के लिहाज से संसद का शीतकालीन सत्र सबसे फिसड्डी रहा है, संसद इस पूरे सत्र में मात्र 6 घंटे 53 मिनट तक बैठी और अपना अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन किया। हम केवल संसद या राजनेताओं को ही क्यों दोष दें, न्यायपालिका हो या मीडिया, सब विवादों से घिरे रहे हैं। समाज के विभिन्न हिस्सों में बेचैनी के लक्षण गहराते जा रहे हैं। ये सब बातें हमारे लोकतंत्र के गहरे पतन की एक कहानी बयान करती है।

जब लोकतांत्रिक संस्थाओं पर सवाल खड़े हो गए हैं, तब कोई आश्चर्य नहीं, देश में लोग हिंसक तरीकों से ही अपनी आवाज उठाने लगे हैं। यहां हम कश्मीर में सड़कों पर पिछले दिनों हुई हिंसा की बात करें या देश के विभिन्न क्षेत्रों में फैले नक्सलवाद की। अनेक लोगों ने हिंसा को ही अपनी मांग रखने का तरीका मान लिया है। चिंता की बात है, नक्सलवाद फैल रहा है। भारत के ज्यादातर हिस्सों में असंतोष दर्शाने के लिए हिंसा का सहारा लिया जा रहा है।

फिर भी, अंधकार के इस पूर्वानुमान के बावजूद लोकतंत्र वास्तव में जीवित है और भारत को आगे बढ़ा रहा है। भारत के लोगों के लिए उम्मीद की एकमात्र किरण भी यही है कि हिंसा का सहारा न लिया जाए और अहिंसक तरीकों से अपनी आवाज उठाई जाए। इसका

सरकारों को ऐसे आंदोलनों द्वारा की जा रही मांगों को आगे बढ़ाकर मानना चाहिए। अहिंसक आंदोलन को प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए, तभी लोग हिंसक आंदोलन का रास्ता छोड़ेंगे। निःस्संदेह, भारत में लोकतंत्र जीवित और मुखर है। चुनौती यह सुनिश्चित करने की है कि यह मुखरता बरकरार रहे, सरकारें अपने फैसलों से लोकतंत्र का सम्मान करें, ताकि अहिंसक लोकतंत्र की जड़ें और गहरी हों।

एक उदाहरण विगत दिनों हमें राजस्थान के जयपुर में देखने को मिला था। सूचना एवं रोजगार का अधिकार अभियान के बैनर तले एक अहिंसक सत्याग्रह चला, इसे मजदूर हक सत्याग्रह का नाम दिया गया था। 42 दिन तक चले इस सत्याग्रह में हजारों किसानों और दैनिक मजदूरों ने अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए भाग लिया। उनकी मांगों में भ्रष्टाचार को खत्म करने की मांग भी शामिल थी। सत्याग्रहियों की मांगों में मुख्य मांग मनरेगा के क्रियान्वयन को दुरुस्त बनाने की थी। उनकी मांगों को यदि एक तरफ भी रख दिया जाए, तो इस सत्याग्रह से इस तथ्य को मजबूती मिलती है कि इसने गरीबतम और सर्वाधिक हाशिए पर रखे गए समुदाय को एक मंच मुहैया कराया ताकि वे अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए आवाज बुलन्द कर सकें। राष्ट्रीय सलाहकार परिषद की मुखिया की हैसियत से सोनिया गांधी ने लिखित सहमति जताई है कि मनरेगा मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी का भुगतान किया जाना चाहिए। इस सिलसिले में सोनिया गांधी के जरिए प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को एक पत्र भी भेजा गया है। पत्र के साथ एक सूची भी संलग्न है, जिन बिन्दुओं पर उन्होंने सहमति जताई है। उल्लेखनीय है कि केन्द्र ने नरेगा के तहत सौ रुपए मजदूरी तय की है जबकि कई राज्यों में न्यूनतम मजदूरी की दर इससे ज्यादा है। सत्याग्रहियों और राजस्थान सरकार के बीच लिखित में यह समझौता हुआ है कि सरकार उनके अधिकार के मानकों के क्रियान्वयन के लिए प्रतिबद्ध है।

सरकारों को ऐसे आंदोलनों द्वारा की जा रही मांगों को आगे बढ़ाकर मानना चाहिए। अहिंसक आंदोलन को प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए, तभी लोग हिंसक आंदोलन का रास्ता छोड़ेंगे। निःस्संदेह, भारत में लोकतंत्र जीवित और मुखर है। चुनौती यह सुनिश्चित करने की है कि यह मुखरता बरकरार रहे, सरकारें अपने फैसलों से लोकतंत्र का सम्मान करें, ताकि अहिंसक लोकतंत्र की जड़ें और गहरी हों।

- राजस्थान पत्रिका से साभार
15 दिसम्बर 2010 अंक से

बढ़ें संयम पथ पर

Golchha Organisation
INDUSTRY • COMMERCE • WELFARE

लोकमान्य गोल्छा
अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)
फोन नं. : 4250001/4249939 (D)
फैक्स : 00977-1-4249723

रासीसर में किसान सम्मेलन

अणुव्रत नियमों को अपने जीवन में अपनायें : आचार्य महाश्रमण

रासीसर, 17 दिसंबर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसमें बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित हुए। आचार्यश्री ने जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा--जीवन अमूल्य है। इसका मूल्यांकन करते हुए इसे पूर्ण रूप से नशामुक्त बनाए रखें। जो भीतर से स्वयं को कमजोर महसूस करते हैं, वे ही नशे का सहारा लेते हैं। लेकिन यह एक भ्रान्ति है। नशा व्यक्ति को भीतर से ही नहीं बाहर से भी बहुत कमजोर कर देता है। यह अपने साथ अन्य बुराइयों को भी लेकर आता है, इसलिए व्यक्ति को यथासंभव किसी भी प्रकार के नशे से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसान को अन्नदाता कहा गया है। उसका जीवन श्रमप्रधान होता है। उसे नशे के प्रति विशेष रूप से सचेत रहना चाहिए। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और नैतिकता के विकास में बहुत सहायक बनते हैं। ग्रामीण जन उन नियमों को अपने जीवन में स्थान देने का लक्ष्य बनाएं।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने वक्तव्य में कहा--'संतों का आभामण्डल त्याग, तप और संयम से परिपूर्ण होता है। उनके क्षण भर का पावन सान्निध्य भी व्यक्ति के सौभाग्य का सूचक होता है।

इससे पूर्व देशनोक से 7 किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण रासीसर पधारे। प्रवास सभा भवन में हुआ। पूरा पंडाल ग्रामीण जनों से खचाखच भरा था। सैकड़ों लोग बाहर भी खड़े थे। कार्यक्रम का प्रारंभ स्थानीय महिला मंडल और कन्यामंडल के स्वागत गीत से हुआ। मोनिका सुराणा, गरिमा सुराणा, रुचि पुगलिया, सोनू जैन, रेखा चोरड़िया, हरिराम, हेतराम व छाजेड़ परिवार ने गीत और वक्तव्य के द्वारा आचार्यश्री का अभिनंदन किया। सुनील सुराणा ने मुनि जितेन्द्रकुमार द्वारा प्रेषित भावपूर्ण पत्र का वाचन किया। मुनि नयकुमार ने अपने पैतृक गांव की ओर से आचार्य महाश्रमण का अभिनंदन किया। साध्वी विश्रुतविभा ने अपने वक्तव्य में गुरु की महत्ता को प्रतिपादित किया। कार्यक्रम का संयोजन लूणकरण छाजेड़ ने किया।

18 दिसम्बर। रासीसर से ग्यारह किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण भामटसर पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में श्रद्धालुओं को उद्बोधित करते हुए कहा--अविनीत शिष्य मृदु स्वभाव वाले गुरु को भी कुपित कर देते हैं। जबकि विनीत शिष्य अपने शान्त स्वभाव से रुष्ट गुरु को भी शान्त कर देते हैं। शिष्य को विनीत होना चाहिए। उसका विनय गुरु के लिए पोषण होता है। जबकि अविनीत और उद्दण्ड शिष्य का व्यवहार गुरु के मानसिक उत्पीड़न का कारण बन जाता है। गुरु ज्ञान के प्रदाता हैं, इसलिए उनके प्रति विशेष रूप से विनय का भाव होना चाहिए। विनम्रता से पात्रता आती है।

विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा--विद्यार्थी को पुरुषार्थी और पराक्रमशील होना चाहिए। उसमें एकाग्रता का भी विकास होना चाहिए। बच्चों के सामने लम्बा भविष्य होता है। उनमें ज्ञान के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी जागें, इस दृष्टि से शिक्षक और अभिभावक विशेष रूप से प्रयत्न करें। चिकमंगलूर से समागत श्रद्धालुओं ने गंगाशहर से नोखा तक आचार्य महाश्रमण के साथ पदयात्रा में भाग लिया।

19 दिसम्बर। भामटसर से नौ किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण नोखा गांव पधारे। आचार्य महाश्रमण ने अपने प्रवास स्थल सुराना गेस्ट हाउस में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा--'जीवन में संयम बहुत जरूरी है। इन्द्रिय, मन व वाणी का संयम साधु के लिए ही नहीं, गृहस्थ के लिए भी आवश्यक है। महाव्रत अंगीकार करने से सर्वविरति संयम होता है। गृहस्थ महाव्रती नहीं होता, लेकिन भोगोपभोग का संयम उसे साधक की श्रेणी में ला सकता है। वाणी विचार-संप्रेषण का माध्यम है। भाषा की यह विशेषता है कि वह समस्या को समाहित करती है तो समस्या की जनक भी होती है। इसलिए बहुत जरूरी है कि जो कुछ बोलें, विवेकपूर्वक बोलें। वाणी-संयम का प्रयोग हो तो परिवार में सुख-शान्ति रह सकती है। संयोजन मुनि दिनेशकुमार ने किया। जैविभा के अध्यक्ष सुरेन्द्र चोरड़िया, प्रधान ट्रस्टी रणजीत कोठारी सहित अनेक पदाधिकारियों और सदस्यों ने आचार्य महाश्रमण के दर्शन किए।

अणुव्रत आंदोलन के नींव के पत्थर

प्रताप सिंह बैद का निधन

सिलीगुड़ी। अणुव्रत आंदोलन के प्रारंभिक कार्यकर्ताओं की अग्रिम पंक्ति के समर्पित अणुव्रत कार्यकर्ता श्री प्रतापसिंह बैद का लम्बी उम्र प्राप्त कर सिलीगुड़ी में आकस्मिक निधन हो गया। श्री प्रतापजी बैद शरीर से स्वस्थ एवं सदैव हंसमुख, युवाओं जैसा उत्साह तथा बेबाक वाणी के धनी थे। राजस्थान के चुरु जिले में जन्में श्री बैदजी का कार्यक्षेत्र सिलीगुड़ी रहा। वे संघ एवं सघपति के प्रति पूर्ण समर्पित थे। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

श्री बैदजी स्वयं प्रबुद्ध व बहुआयामी व्यक्तित्व वाले, सौम्य स्वाभावी एवं अच्छी सोच व सलाह देने वाले व्यक्ति थे। कई संस्थाओं से जुड़े हुए एवं उनको पोषण व सहायता करते थे। श्री प्रतापजी स्वयं अणुव्रती थे एवं उसके प्रचार-प्रसार व कार्यों में रुचि रखते थे। पूरे जैन समाज की संस्था भारत जैन महामण्डल के अध्यक्ष पद पर सराहनीय मार्गदर्शन दिया।

मुझे तो व्यक्तिगत रूप से अति स्नेह देते थे, एवं इसी सितम्बर माह में सरदारशहर में मिलकर अति प्रसन्नता अनुभव हुई। वे कहते थे कि सौ वर्ष जिऊंगा, लेकिन अचानक ही इस तरह स्वर्गवास का समाचार सुनकर मन में काफी दुःख हुआ। सिलीगुड़ी में एक वृहद शिक्षण संस्थान खड़ा करने का उनका स्वप्न था, उसे पूरा करने में श्री राजेन्द्रजी आप सहित हम सभी सहभागी बनेंगे तो उनकी आत्मा को अति प्रसन्नता होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

परमपिता परमेश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे एवं परिवार को उनके बिछोह को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। अणुव्रत परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

-- ***विजयराज सुराणा,*** *महामंत्री*

आचार्य महाश्रमण का नोखामंडी में भव्य स्वागत

नोखामंडी, 20 दिसम्बर। नोखामंडी में दुलीचन्द भूरा के आवास पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा--'प्रश्न हो सकता है--दुनिया में सुखी कौन? इसका एक उत्तर यह हो सकता है--आत्मा का दर्शन करने वाला सुखी होता है। आत्मदर्शन के लिए आत्मसंयम जरूरी है। क्रोध, मान, माया, लोभ तथा राग-द्वेष को कम करना आत्मसंयम है। सुख की चाह रखने वाले को इसका अभ्यास निरंतर करते रहना चाहिए।'

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा--आज हम नोखामंडी शासनश्री साध्वी मोहनाजी से मिलने के लिए आए हैं। साध्वी मोहनाजी मूर्ति के समान लगती हैं। ये हमारे संघ में आज दीक्षा पर्याय और अवस्था में सबसे ज्येष्ठ साध्वी हैं। दायित्व-संभाल के बाद मैंने स्थाविर साधु-साध्वियों से मिलने की घोषणा की थी। इसे तीर्थयात्रा कहा था। उसी तीर्थयात्रा के क्रम में आज नोखामंडी आए हैं। नोखा के मुनि नयकुमार और मुनि मननकुमार का उल्लेख करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा--मुनि मननकुमार और मुनि नयकुमार दोनों युवा संत हैं। परिश्रमी और अध्ययनशील हैं। दोनों मुनि अपना अच्छा विकास करें। समणी नीतिप्रज्ञा भी अच्छा विकास करती रहे। नोखा में यह दो दिन का प्रवास साध्वी मोहना के लिए है। यहां के श्रावकों में अनुकंपा की चेतना, सरलता और सहिष्णुता का विकास हो। यहां के लोगों में भक्ति भावना है। इतनी ही भावना त्याग, तपस्या और संयम के प्रति भी होनी चाहिए। अच्छा जीवन जीने के लिए धर्म की कला का ज्ञान जरूरी है। नोखावासी नशामुक्ति एवं स्वयं के नैतिक विकास के लिए संकल्पित हों तो इस मंडी की यह विशिष्ट पहचान होगी।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा--भारत अध्यात्म प्रधान देश है। यहां धर्मपरायण जनता का साधु-संतों के प्रति सहज श्रद्धाभाव होता है। आज लोगों में उमड़ रहा श्रद्धा का ज्वार इस बात का प्रतीक है। आचार्य महाश्रमण का यह प्रवास नोखावासियों के लिए चरित्र-निर्माण की दृष्टि से उत्प्रेरक बने, यह मंगलकामना है।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने अपने वक्तव्य में कहा--तेरापंथ ऐसा धर्मसंघ है जहां वृद्धावस्था में साधु-साध्वी निश्चिंत रहते हैं। हमारे सभी आचार्यों ने सेवा को बहुत महत्त्व दिया, इसीलिए यह संघ दीर्घजीवी बना हुआ है।

स्वागत कार्यक्रम का प्रारंभ स्थानीय महिला मंडल के मंगल संगान से हुआ। सभा के मंत्री जयचन्दलाल भूरा ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। कन्यामंडल ने गीत प्रस्तुत किया। साध्वी मोहना की ओर से साध्वी कनकश्री ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। मुनि नयकुमार, मुनि मननकुमार एवं समणी नीतिप्रज्ञा ने अपनी जन्मभूमि में आराध्य का स्वागत किया। मुमुक्षु गुणश्री, भंवरलाल बैद, तेयुप के मंत्री सुनील बैद, विधायक कन्हैयालाल झंवर आदि अनेक वक्ताओं ने गीत, कविता व वक्तव्य के द्वारा आचार्य महाश्रमण का अभिनंदन किया। रोटरी क्लब की ओर से यातायात निर्देशिका भेंट की गई। इससे पूर्व नोखा गांव से विहार कर अनेक घरों का स्पर्श करते हुए विशाल जुलूस के साथ आचार्य महाश्रमण नोखामंडी पधारे। यहां सभा भवन में ईश्वरचन्द दूगड़ ने नागरिक अभिनंदन पत्र का वाचन करते हुए उसे आचार्य महाश्रमण को भेंट किया। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी निर्मलयशा एवं इन्द्रचन्द बैद ने किया।

राजनीति का शुद्धिकरण जरूरी

नई दिल्ली, 16 दिसंबर। भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी के निवास पर आयोजित विशेष संगोष्ठी में चर्चा करते हुए कहा--राजनीति लोकतंत्र की रीढ़ है, पर राजनेताओं की स्वार्थपरायणता और सिद्धांतहीनता के कारण राजनीति के स्तर में बहुत गिरावट आई है। कुछ छिछले राजनेता देश की नशों में जातिवाद और सांप्रदायिकता का जहर घोलते हैं तथा हिंसा और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं, इससे लोकतंत्र की शक्ति कमजोर पड़ रही है। आज व्यापक स्तर पर राजनीति का शुद्धिकरण जरूरी है। इस हेतु राजनेताओं के लिए आध्यात्मिक प्रशिक्षण भी अपेक्षित है। अणुव्रत आंदोलन जाति-पंथ, संप्रदायविहीन नैतिकता का संवाहक है जिसके सूत्रों की प्रतिष्ठा जीवन के हर क्षेत्र में जरूरी है। मुनिश्री ने उन्हें आचार्य महाश्रमण की पदयात्रा की जानकारी देते हुए कार्यक्रमों से अवगत करवाया।

पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा--धर्म का राजनीति पर अनुशासन होना चाहिए पर धर्म का राजनीति के लिए उपयोग नहीं होना चाहिए। सभी राजनीतिज्ञों को आचार्य महाश्रमण जैसे महापुरुषों से आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त करना मैं अपेक्षित मानता हूं। लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए लोकतंत्र जिनके हाथों में हैं उनके विचार व्यापक, संतुलित और सही दृष्टि से अनुप्राणित होना जरूरी है। स्वयं पर नियंत्रण रखने वालों को ही सत्ता का अधिकार होना चाहिए। वरना सत्ता का दुरुपयोग होता है। प्रजातंत्र की प्रणाली में चुनाव जरूरी है किन्तु येन-केन प्रकारेण चुनाव जीतना ही है यह मनोभाव विकृतियां पैदा कर रहा है जिससे देश में भ्रष्टाचार की बाढ़ आ रही है। उन्होंने मुनिश्री के विचारों पर सहमति प्रकट करते हुए कहा--मैं भी राजनेताओं के लिए आध्यात्मिक प्रशिक्षण अपेक्षित मानता हूं।

उन्होंने आगे कहा--अणुव्रत आंदोलन मानवता के लिए कल्याणकारी है और संतों के मार्गदर्शन से ही देश में नैतिक व चारित्रिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा संभव है। आचार्य महाप्रज्ञ सर्वश्रेष्ठ विचारक थे। उनके साहित्य व चिंतन में हमें युगीन समस्याओं का समुचित समाधान मिलता है। इस अवसर पर मुनि सुधाकर, मुनि दीपकुमार, अरविंद दूगड़ व संदीप डूंगरवाल उपस्थित थे।

प्रादेशिक समिति की संगठन यात्रा

भीलवाड़ा। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा एवं अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा द्वारा रतनगढ़, पड़िहारा, छापर, राजलदेसर की संगठन यात्रा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा की पूर्व तैयारी हेतु अणुव्रत समितियों को दिशा-निर्देश देने हेतु निम्न स्थानों की यात्रा की गयी।

● **रतनगढ़ :** राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा 11 दिसंबर 2010 सायं रतनगढ़ पहुंचे। यहां विराजित साध्वी राजीमति के दर्शन किये। 12 दिसंबर 2010 को प्रातः प्रवचन में अणुव्रत कार्यकर्ताओं को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के प्रवास काल में अणुव्रती बनो अभियान, अणुव्रत पाक्षिक ग्राहक अभियान, मानसिक शांति -- स्वाध्याय केन्द्रों की स्थापना, अणुव्रत आचार संहिता प्रचार-प्रसार का आह्वान किया गया।

अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा ने अणुव्रत समिति रतनगढ़ द्वारा 12 दिसंबर 2010 को वृहद व्यापारी सम्मेलन 19 दिसंबर 2010 को अहिंसक चेतना का जागरण विषय पर व्याख्यानमाला आयोजित करने की जानकारी दी। स्थानीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष डॉ. बी.के. गोस्वामी भी पधारे। मंत्री महावीर प्रसाद मेवाड़ा, प्रमोद, कुलदीप, रमेश ने भी चर्चा में भाग लिया। वृहद व्यापारी सम्मेलन में पास के कस्बों के व्यापारियों को भी आमंत्रित करने का निर्णय हुआ। इस क्रम में बाबूलाल गोलछा ने राजलदेसर, पड़िहारा, छापर की अणुव्रत समितियों से सम्पर्क कर वहां के व्यापारियों को सम्मेलन में भाग लेने का दायित्व दिया।

● **पड़िहारा :** नारायण बोरड़ एवं समिति के अध्यक्ष जोशी से अणुव्रत कार्यक्रमों पर विस्तृत चर्चा हुई। साध्वी संघप्रभा के दर्शनों का लाभ प्राप्त हुआ। साध्वीश्री के सान्निध्य में यहां अणुव्रत का अच्छा वातावरण है एवं आपके सान्निध्य में कई कार्यक्रम आयोजित हुए हैं।

● **छापर :** रणजीत दूगड़, पूर्व अध्यक्ष प्रदीप सुराणा, पत्रकार विनोद नाहटा से अणुव्रत पर विस्तृत चर्चा हुई। मुनि विनयकुमार 'आलोक' के दर्शनों का लाभ प्राप्त हुआ। मुनिश्री सेवा केन्द्र में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं देते हुए भी छापर में अणुव्रत की अलख जगा रहे हैं। प्रदीप सुराणा की सजगता से स्थानीय प्रिन्ट मीडिया में कार्यक्रमों का निरंतर प्रकाशन होता है। कार्यकर्ताओं को केन्द्र में भी रिपोर्ट भेजने के लिए प्रेरित किया गया।

● **राजलदेसर :** 13 दिसंबर 2010 को सुबह हम राजलदेसर पहुंचे। यहां अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में मर्यादा महोत्सव का आयोजन होगा। मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति के कार्यकारी अध्यक्ष मंगतमल दूगड़, अणुव्रत समिति के सरंक्षक डॉ. गोविन्द नारायण शर्मा, अध्यक्ष गोविन्द राम पुरोहित, संगठन मंत्री जीवनमल बैद, चम्पालाल पाण्डे, सभा के मंत्री नवरतन मल बैद महिला मंडल की मंत्री भी उपस्थित थे। राजलदेसर अणुव्रत समितियों के सद्प्रयास से लूणासर व जोरावरपुरा में देहात समितियों का गठन भी किया गया। अणुव्रत अनुशास्ता के प्रवास काल में अणुव्रत के कार्यक्रम आयोजित करने एवं अणुव्रत का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने का आह्वान किया गया।

सभी अणुव्रत समितियों को प्रदेश समिति द्वारा बोर्ड, बैनर, स्टीकर आदि प्रचार-प्रसार सामग्री उपलब्ध करवाई गयी एवं इसे अपने स्तर पर प्रकाशित कर बैनर, भित्ती अंकन एवं होर्डिंग्स प्रचारित-प्रसारित करने की प्रेरणा प्रदान की गयी। सेवा केन्द्र में सेवारत साध्वी ज्योतिप्रभा एवं साध्वीगण का दर्शन लाभ किया।

शरदकुमार 'साधक' का निधन

वाराणसी, 20 दिसंबर। आचार्य कुल के पूर्व अध्यक्ष, जय जगत संस्थान के अध्यक्ष एवं प्रमुख गांधीवादी विचारक शरदकुमार 'साधक' अब हमारे बीच नहीं रहे। 20 दिसंबर प्रातःवेला में 79 वर्ष की अवस्था में हृदयाघात के कारण राष्ट्रीय विचारक हमारे बीच से अचानक चले गये। साधकजी सर्वोदय एवं अणुव्रत के जाने-माने हस्ताक्षर थे। शिक्षण, स्वाध्याय, ध्यान, सेवा तथा अहिंसक समाज संरचना में आप जीवन पर्यंत संलग्न रहे। आपके हाथों अनेकों ग्रंथ एवं पत्र-पत्रिकाओं का संपादन हुआ। जिनमें प्रमुख हैं--राजनीति का विकल्प, जय जगत संदेश, शिक्षा का शुक्ल पक्ष तथा आचार्य कुल, श्रमण पत्रिकाएं प्रमुख हैं। अणुव्रत पाक्षिक में भी आपकी रचनाए प्रकाशित हुईं। वर्ष 2008 में अणुव्रत महासमिति द्वारा गांधी सेवा सदन राजसमंद में आयोजित राष्ट्रीय अहिंसा कार्यशाला की साधकजी ने अध्यक्षता की थी।

साधकजी ने अपनी वसीयत में क्रिया-काण्ड न करने, प्रचलित सामाजिक परंपराओं को तोड़ने का परिजनों को निर्देश दिया एवं बनारस विश्वविद्यालय मेडिकल कॉलेज में अपने पार्थिव शरीर को दान करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया। उनकी वसीयत के अनुसार साधकजी की देह मेडिकल विश्वविद्यालय को सौंप दी गयी है।

दिवंगत आत्मा को अणुव्रत परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

जयपुर पुस्तक मेले में आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य

जयपुर, 12 दिसंबर। राजस्थान पत्रिका द्वारा जयपुर में आयोजित पुस्तक मेले में आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण का साहित्य उपलब्ध कराया गया। उक्त साहित्य का प्रकाशन जैन विश्व भारती द्वारा कई वर्षों से किया जा रहा है। मेले में राजस्थान के शिक्षा मंत्री भंवरलाल मेघवाल ने आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक-- अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान एवं आगम साहित्य का अवलोकन करते हुए अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान के पाठ्यक्रम को राजस्थान के शिक्षण पाठ्यक्रम में प्रारंभ करवाने की बात कही।

इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर, अभातेयुप के संगठन मंत्री अविनाश नाहर, युवादृष्टि के कार्यकारी संपादक सुधीर चोरड़िया, तेयुप जयपुर साहित्य प्रभारी पंकज दूगड़, जैन विश्व भारती के निदेशक राजू खटेड़ एवं जगदीश ने आचार्य महाप्रज्ञ की आत्मकथा-- ''यात्रा एक अकिंचन की'' माननीय शिक्षा मंत्रीजी को भेंट की। मंत्रीजी ने उपस्थित जनसमूह को आचार्य महाप्रज्ञ की प्रकांड दिव्यता की जानकारी देते हुए उक्त पुस्तक को विशेष रूप से पढ़ने की प्रभावी प्रेरणा दी। पुस्तक मेले में स्थानीय तेयुप अध्यक्ष सुरेन्द्र सेठिया एवं अन्य कार्यकर्ताओं ने पूर्ण सजगता के साथ सम्पूर्ण व्यवस्थाओं को आकर्षित बनाने में योगभूत बने।

आचार्य महाप्रज्ञ की जीवनी की टी.वी. के माध्यम से प्रस्तुति दी गयी। पत्रिका का पुस्तक मेले का महनीय प्रयास पुस्तक प्रेमियों के लिए निश्चित ही उपयोगी एवं उल्लेखनीय अवसर प्रदान करेगा।

अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रकाशित लघु पुस्तिकाएं-- नशामुक्ति कारण एवं निवारण, पर्यावरण संरक्षण, आतंकवाद, अहिंसा विकास के सूत्र एवं कन्या भ्रूणहत्या निषेध आदि के संदर्भ में अणुव्रत समिति जयपुर के माध्यम से निःशुल्क वितरित करने हेतु उक्त विक्रय केन्द्र पर उपलब्ध करवायी गयी।

अणुव्रत समिति रतनादेसर

रतनादेसर। अणुव्रत समिति लूणासर के अध्यक्ष शेरसिंह की उपस्थिति में अणुव्रत आंदोलन को गति प्रदान करने हेतु रतनादेसर ग्राम में देहात अणुव्रत समिति का गठन निम्नानुसार हुआ--

अध्यक्ष : श्री सवाई सिंह पुत्र श्री किरत सिंह राठौड़
मंत्री : श्री मोहन सिंह पुत्र श्री मालू सिंह राठौड़
उपाध्यक्ष : श्री भगवान सिंह पुत्र श्री नारायण सिंह राठौड़
कोषाध्यक्ष : श्री मांगूसिंह पुत्र श्री हेमसिंह राठौड़
सदस्य : 1. श्री अमरदास पुत्र श्री पनदास स्वामी
2. श्री गणपतराम पुत्र श्री मालूसिंह राठौड़
3. श्री अमरचंद पुत्र श्री हड़मानाराम
4. श्री भींयाराम पुत्र श्री दलाराम मेघवाल
5. श्री भींवाराम पुत्र श्री गोरखाराम मेघवाल
6. श्री विष्णुदत्त पुत्र श्री कालूराम ब्राह्मण
7. श्री हड़मानसिंह पुत्र श्री धनेसिंह राठौड़
8. श्री मदनसिंह पुत्र श्री प्रहलादसिंह राठौड़
9. श्री रामचन्द पुत्र श्री सोहनदास स्वामी
10. श्री खूमदास पुत्र श्री लालदास स्वामी
11. श्री ओंकारमल पुत्र श्री मालाराम नायक
12. श्री रूकमाराम पुत्र केसराराम नायक
13. श्री धूड़ाराम पुत्र श्री गोरखाराम मेघवाल
14. श्री देवाराम पुत्र श्री ईश्वरराम शर्मा
15. श्री मघसिंह पुत्र श्री धनसिंह राठौड़
16. श्री नारायणसिंह पुत्र श्री जसवंतसिंह राठौड़
17. श्रीमती सोहनीकंवर पत्नी श्री जीवराजसिंह राठौड़

अणुव्रत समिति, बंडवा

रतनादेसर। अणुव्रत समिति राजलदेसर के अध्यक्ष गोविन्दराम पुरोहित की उपस्थिति में 18-12-2010 को अणुव्रत आंदोलन को गति प्रदान करने हेतु बंडवा ग्राम में देहात अणुव्रत समिति का गठन निम्नानुसार हुआ--

अध्यक्ष : श्री नत्थूसिंह पुत्र श्री पाबूदान सिंह
मंत्री : श्री भागीरथप्रसाद शर्मा पुत्र श्री रामचन्द्र शर्मा
उपाध्यक्ष : श्री करणीसिंह पुत्र श्री शिशुपाल सिंह
कोषाध्यक्ष : श्री मदन सिंह राठौड़ पुत्र श्री गोविन्दसिंह राठौड़
उपकोषाध्यक्ष : श्री भंवरसिंह एवं श्री नेमाराम ढिंढारिया
सदस्य : 1. श्री मदनलाल पुत्र श्री नथमल शर्मा
2. श्री डूंगरराम सारण पुत्र श्री धन्नाराम
3. श्री चन्द्र सिंह ठाकर पुत्र श्री गणपतसिंह
4. श्री हड़मानाराम सुथार पुत्र श्री लादूराम
5. श्री भानीराम नायक पुत्र श्री गोपालाराम
6. श्री लालसिंह पुत्र श्री भंवरसिंह
7. श्री मोहनलाल सेरड़िया पुत्र श्री ऊमाराम
8. श्री चेनाराम मेघवाल पुत्र श्री पेमाराम
9. श्री शिवलाल पुत्र श्री गंगाराम
10. श्री इन्द्र सिंह पंच पुत्र श्री जगमाल सिंह
11. श्री किशनाराम एचरा पुत्र श्री खुमाराम
12. श्री बंशीधर शर्मा पुत्र श्री जयचंदलाल
13. श्री आशुदास स्वामी पुत्र श्री गणपतदास
14. श्री भैराराम नायक पुत्र श्री गोरखाराम
15. श्री श्री लूण सिंह ठाकर पुत्र श्री ज्ञानसिंह

अणुव्रत समिति लाडनूं

लाडनूं। प्रत्येक दो वर्ष बाद अणुव्रत समिति, लाडनूं के अध्यक्ष का चुनाव होता है। समाजसेवी ओमप्रकाश सोनी के निधन से रिक्त हुए अध्यक्ष पद एवं कार्यसमिति चुनाव निम्न प्रकार हुआ--

अध्यक्ष : श्री अली अकबर रिजवी
उपाध्यक्ष : श्री शान्तिलाल रेगर एवं श्रीमती कंचनलता शर्मा
मंत्री : डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'
सहमंत्री : डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी
उपमंत्री : श्री सीताराम टेलर एवं श्री जगमोहन माथुर
संगठन मंत्री : श्री वीरेन्द्र भाटी मंगल
प्रचार-प्रसार : श्री आलोक खटेड
संयुक्त मंत्री : श्री अब्दुल हमीद
संरक्षक : श्री विजयसिंह बरमेचा
सदस्य : श्री रामकैलाश जोशी, श्री जसकरण लोहिया, श्री मगाराम, डॉ. विजेन्द्र प्रधान, श्री जे.पी. सिंह, श्री शरद जैन, श्री नन्दलाल वर्मा, डॉ. अशोक भास्कर, श्री हीरालाल जैन, श्री राजकुमार सांखला, श्री भाजूरवां टाक, श्री राजेश जैन, श्री श्रीचंद चौहान, श्री जयचंदलाल सोनी, श्री प्रेमप्रकाश सोनी।

अणुव्रत समिति द्वारा सेवा कार्य

उदयपुर। अणुव्रत समिति उदयपुर द्वारा केन्द्रीय कारागृह में 30 बन्दी भाइयों की नजर कमजोर होने पर नजर के चश्में उपलब्ध करवाये गये। समिति के मंत्री राजेन्द्र सेन ने बताया कि बंदियों द्वारा नजर के चश्मों की मांग की जा रही थी। यह कार्य समिति के अध्यक्ष गणेश डागलिया की पहल पर समिति के महामंत्री अरूण कोठारी के सौजन्य से नैत्र विशेषज्ञ द्वारा जांच करवा कर पास व दूर के चश्मे 30 बन्दी भाइयों को निःशुल्क उपलब्ध करवाये गये। इस अवसर पर जयपुर कारागार महानिरीक्षक हेमन्त पुरोहित, जेल अधीक्षक एस.एस. शेखावत, अरविन्द चित्तौड़ा, जमनालाल दशोरा, राजेन्द्र सेन, योगेश गहलोत, राधाकिशन व्यास उपस्थित थे।

● अणुव्रत समिति उदयपुर द्वारा केन्द्रीय कारागृह में बंदी भाइयों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से दो ''जीरो-बी'' प्रमुख समाज सेवी एवं उद्योगपति वीरेन्द्र डांगी एवं दानवीर सेठ पंडित लक्ष्मीनारायण गौड़ के सौजन्य से लगवाये गये। समिति के प्रचारमंत्री राजेन्द्र सेन ने बताया कि गणेश डागलिया की पहल पर उद्योगपति वीरेन्द्र डांगी दानवीर सेठ लक्ष्मीनारायण गौड़ के सौजन्य से दो ''जीरो-बी'' की मशीने जो एक घंटे में 500-600 लीटर शुद्ध पानी उपलब्ध करवायेगी।

उक्त मशीनों का उद्घाटन हेमन्त पुरोहित, गणेश डागलिया, अरूण कोठारी, एस.एस. शेखावत, लक्ष्मीनारायण गौड़ ने फीता काटकर किया। इस प्रकार की मशीनें राजस्थान की जेल में पहली बार लगी हैं।

इस अवसर पर समिति के डॉ. रंगलाल धाकड़, डॉ. शोभालाल ओदिच्य, योगेश गहलोत, अरविन्द चित्तौड़ा, हरीश ललवानी, राजू सोनी उपस्थित थे।

www.terapanthinfo.com

प्रेक्षा पुरस्कार-२०११

दिल्ली। मोहनलाल कठोतिया सेवा कोष दिल्ली द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रेक्षाध्यान के एक विशिष्ट साधक एवं प्रशिक्षक को अक्षय तृतीया के अवसर पर **प्रेक्षा पुरस्कार** से सम्मानित किया जाता है।
वर्ष-2011 में दिये जाने वाले प्रेक्षा पुरस्कार हेतु योग्य साधक का चयन संस्था की निर्वाचित समिति द्वारा किया जायेगा। उक्त निर्वाचित साधक के नाम की घोषणा मर्यादा महोत्सव के पुनीत अवसर पर आगामी 10 फरवरी 2011 गुरुवार को आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में राजलदेसर (राजस्थान) में की जाएगी। जो भी व्यक्ति या संस्था योग्य साधक के नाम का सुझाव देना चाहे, वे उनके ध्यान साधनामय जीवन का संक्षिप्त विवरण लिखकर निम्न पते पर भिजवायें--

मोहनलाल कठोतिया सेवा कोष
कठोतिया भवन, 1532, चन्द्रावल रोड़, दिल्ली-110007
दूरभाष : 011 - 23853862, 9311053111

मानसिकता का बदलाव जरूरी

टमकोर, 11 दिसंबर। अणुव्रत शिक्षक संसद राजसमंद द्वारा संचालित सघन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र टमकोर के तत्वावधान में राजकीय खेतान माध्यमिक विद्यालय रामपुरा में भ्रूणहत्या रोकथाम संगोष्ठी एवं रैली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में रा.प्रा.वि. चारणों की ढाणी के विद्यार्थी भी सम्मिलित हुए। पर्यवेक्षक प्रिन्स कुमार चौरसिया ने कहा कि वक्त हमें आगाह कर रहा है कि कन्या भ्रूणहत्याओं को रोकिये, अन्यथा सभ्यता मर जायेगी, आदमी बहशी हो जायेगा और यह सारा सामाजिक ताम-झाम तहस-नहस हो जाएगा। यह सिर्फ कहने और सुनने मात्र से नहीं होगा इसके लिए मानसिकता बदलनी होगी। संस्था अध्यक्ष राधेश्याम जांगिड़ ने हरी झंडी दिखाकर रैली का उद्घाटन किया। रैली में विद्यार्थियों ने 'बेटी नहीं तो बहू नहीं', 'करनी है जीवन की रक्षा - कन्याओं की करो सुरक्षा', 'नारी का सम्मान जहां असली हिन्दुस्तान वहां' के नारे लगाते हुए बड़े ही जोश के साथ गांव में भ्रमण किया। आभार व्यक्त अहिंसा प्रशिक्षक धर्मपाल नात्रक ने किया।

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री से मुलाकात

हरियाणा। स्थानीय अणुव्रत समिति के तत्वावधान में अजय सुराणा के निवास पर हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चोटाला से समिति की उपाध्यक्ष निर्मला बैद, जिनेन्द्र बैद ने मुलाकात की। उन्होंने ओमप्रकाश चोटाला को आचार्य महाप्रज्ञ एवं अणुव्रत साहित्य भेंट कर अणुव्रत आचार संहिता की जानकारी दी। निर्मला बैद ने कहा कि अगर राजनेताओं द्वारा भ्रष्टाचार को रोकने का प्रयास किया जाये तो अच्छा परिणाम सामने आ सकता है। भ्रष्टाचार निवारण से ही देश का भविष्य उज्जवल बनेगा। आज अपेक्षा है अणुव्रत नियमों को अपनाने की। क्योंकि संयम के द्वारा ही व्यक्ति सही रास्ते पर चल सकता है। ओमप्रकाश चोटाला ने उक्त साहित्य को अपनी लायब्रेरी में रखवाने की बात कही ताकि अन्य भी इसका लाभ उठा सकें। इस अवसर पर अजय सुराणा, विमला, चित्रा, जिनेन्द्र बैद उपस्थित थे।

अणुव्रत मूल्यों से भ्रष्टाचार का समाधान

लाडनूं, 12 दिसंबर। आज चारों तरफ एक ही आवाज बुलन्द हो रही है वह है--भ्रष्टाचार। संसद का कार्य भ्रष्टाचार को लेकर पूरा शीतकालीन बन्द रहा। राष्ट्रमंडल घोटाला, दूरसंचार घोटाला, आदर्श कॉलोनी घोटाला इत्यादि भ्रष्टाचार की कहानी उजागर कर रहे हैं। भ्रष्टाचार क्यों? इस प्रश्न का एक ही जवाब है कि व्यक्ति मानवीय गुणों को भुलाता जा रहा है। अणुव्रत मानव धर्म है तथा मानवीय गुणों के विकास की कुंजी है। अणुव्रत के मूल्य ही भ्रष्टाचार का स्थायी समाधान बन सकते हैं। ये विचार मुनि सुमेरमल सुदर्शन ने अणुव्रत संगोष्ठी को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा--आजादी के बाद आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया था। उनका मुख्य उद्देश्य था राष्ट्र का नैतिक विकास किन्तु इस आंदोलन को सरकार का सहयोग न मिल पाने से अणुव्रत के मूल्य देश के लोगों की आचार संहिता न बन सके। यह आंदोलन नैतिकता का आंदोलन है। इस आंदोलन के प्रसार से ही राष्ट्र भ्रष्टाचार की समस्या से निजात पा सकता है। इस अवसर पर अली अकबर रिजवी, शान्तिलाल रेगर एवं कंचनलता शर्मा, डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश', डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी, सीताराम टेलर एवं जगमोहन माथुर, वीरेन्द्र भाटी मंगल, आलोक खटेड, अब्दुल हमीद, विजयसिंह बरमेचा, रामकैलाश जोशी, जसकरण लोहिया, मगाराम, डॉ. विजेन्द्र प्रधान, जे.पी. सिंह, शरद जैन, नन्दलाल वर्मा, डॉ. अशोक भास्कर, हीरालाल जैन, राजकुमार सांखला, भाजूरवां टाक, राजेश जैन, श्रीचंद चौहान, जयचंदलाल सोनी, प्रेमप्रकाश सोनी उपस्थित थे।

कैलाशचन्द डागा का निधन

जयपुर। अणुव्रत आंदोलन से जुड़े जवाहरात व्यवसायी स्व. श्री कन्हैयालाल डागा के सुपौत्र, स्व. श्री प्रेमचन्द डागा के सुपुत्र श्री कैलाशचन्द डागा का 9 दिसंबर 2010 को देवलोकगमन हो गया। श्री कैलाशचन्द डागा स्पष्ट वक्ता, सरल, विलक्षण व मिलनसार थे। संत सेवा, संघ-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्यता स्व. डागा का प्रमुख गुण था। आप अपने पीछे अपनी धर्मसहायिका शान्तिदेवी व पुत्र सुरेन्द्र, महेन्द्र, सुधीर, संजीव के अलावा भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। स्व. डागा के कुल की चन्द्रिका एवं वधु रत्नसंघ में दीक्षित महासती भाग्यप्रभा एवं महासती न्व्यप्रभा अपूर्व सेवा में सतत् संलग्न हैं। कैलाशचन्द डागा के ज्येष्ठ भ्राता प्रकशचन्द तथा लघुभ्राता विमलचंद डागा जैन समाज की विभिन्न संस्थाओं के अग्रगण्य पदों पर सुशोभित हैं। आपके परिवार के ज्येष्ठ एवं कनिष्ठजन धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत हैं। कैलाशचंद डागा ने निधन से पहले पूर्ण होशहवाश में संलेखना पूर्वक सागारी संथारे प्रत्याख्यान किया।

अणुव्रत परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

www.terapanthinfo.com

जीवन विज्ञान एवं अणुव्रत परीक्षा प्रमाण-पत्र वितरण

सायरा, 16 दिसंबर। अणुव्रत समिति सायरा द्वारा सन् 2009-10 की अणुव्रत परीक्षा व जीवन विज्ञान परीक्षा के प्रमाण-पत्र समिति के उपाध्यक्ष बाबूलाल व मुख्य परीक्षा प्रभारी राजेन्द्र गौरवाड़ा उपस्थिति में वितरण किया गया। यहां ये परीक्षाएं पिछले 20 साल से समिति के मंत्री 'अणुव्रत सेवी' जसराज जैन एवं समिति के अध्यक्ष मीठालाल भोगर की देखरेख में करवायी जा रही हैं।

अणुव्रत परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह

बाढ़, 18 दिसंबर। अणुव्रत शिक्षक संसद राजसमंद द्वारा संचालित अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र पंचशील नगर बाढ़ के प्रांगण में एकदिवसीय पारिवारिक ''हिंसा कारण - निवारण'' कार्यशाला एवं अणुव्रत परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन हुआ। उद्घाटन करते हुए नगर परिषद के उपाध्यक्ष राजीव कुमार चुन्ना ने पारिवारिक हिंसा द्वारा उत्पन्न अशांति, तनाव और विघटन को रेखांकित किया। संगठन के प्रांतीय मंत्री हेमन्तकुमार ने अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों द्वारा पारिवारिक हिंसा कम करने के लिए किए जाने वाले प्रयासों को प्रस्तुत किया।

समारोह के आयोजक अहिंसा प्रशिक्षक प्रो. साधुशरण सिंह 'सुमन' ने पारिवारिक हिंसा को सामाजिक विकास का बड़ा अवरोधक मानते हुए इसके लिए लोगों को प्रेक्षाध्यान प्रयोग पद्धति स्वरोजगार प्रशिक्षण तथा सकारात्मक दृष्टिकोण रखने की जरूरत बतायी। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के महान ग्रंथ ''परिवार के साथ कैसे जीएं'' तथा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की पुस्तक ''आओ जीना सीखें'' को पारिवारिक हिंसा कम करने की दिशा में अनमोल उपहार बताया। मंच संचालन एवं स्वागत भाषण अनूप आवासीय स्कूल के प्राचार्य राजेश कुमार सिंह राजू ने किया। धन्यवाद ज्ञापन रंजना रानी गुप्ता ने किया। इस अवसर पर 2344 छात्र-छात्राओं को अणुव्रत परीक्षा प्रमाण पत्र तथा प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले 22 संभागियों को पदक प्रदान किया गया।

यात्रा एक अकिंचन की ग्रंथ का लोकार्पण

कोलकाता। साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में उत्तर हावड़ा सभा के तत्वावधान में आचार्य महाप्रज्ञ की आत्मकथा ''यात्रा एक अकिंचन की'' ग्रंथ का लोकार्पण स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के महाप्रबंधक सुरेन्द्र कुमार सिंह के कर कमलों से हुआ। न्यासी सुरेन्द्र सुराणा ने आचार्य महाप्रज्ञ के कर्तृत्व को उजागर करते हुए कहा-- एक कालजयी महापुरुष द्वारा आत्मकथा के रूप में लिखे गये कालजयी ग्रंथ के लोकार्पण का जिन्हें अवसर मिलता है उनका नाम भी इतिहास में अंकित हो अमर बन जाता है।

साध्वी कनकश्री ने कहा-- आचार्य महाप्रज्ञ विश्व की महानतम आध्यात्मिक विभुतियों में अग्रणी थे। वे महान दर्शनिक, प्रखर चिंतक और लगभग 300 मौलिक ग्रंथों के रचियता थे। उनके ग्रंथों में जागतिक समस्याओं का समाधान निहित है।

विशिष्ट अतिथि सुरेन्द्र कुमार सिंह ने कहा--एक महर्षि के जीवन ग्रंथ के लोकार्पण का सौभाग्य मुझे मिला, इसे मैं अपने जीवन का अभूतपूर्व क्षण मानता हूं। यह पठनीय और संग्रहणीय ग्रंथ है। सभाध्यक्ष अमरचंद दूगड़, न्यासी लाभचंद सुराना ने अतिथियों का मोमेन्टो व साहित्य से सम्मान किया। संचालन विमल बैद ने किया। इस अवसर पर हजारीमल गुलाबचंद श्यामसुखा ट्रस्ट तथा मोहनलाल चोरड़िया के सहयोग से 75 प्रतिशत छूट पर यह अमूल्य ग्रंथ उपलब्ध करवाया गया।

केन्द्रीय कारागार में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम

अहमदाबाद। साध्वी कनकरेखा के सान्निध्य में अहमदाबाद केन्द्रीय कारागार के परिसर में अहिंसा एवं व्यसनमुक्ति पर विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का प्रथम चरण महिला विभाग के मध्य रखा गया। साध्वीश्री महिला कैदियों को संबोधित करते हुए कहा--आज की अस्त-व्यस्त जीवन शैली में व्यक्ति दौड़ लगा रहा है। चाह के अनुरूप राह नहीं मिलने पर व्यक्ति भटक जाता है और व्यसन की गिरफ्त में आकर अपनी जिंदगी को बर्बाद कर देता है। यदि हमें अपने जीवन को सफल बनाना है तो जीवन में परिवर्तन लाना होगा।

साध्वीश्री ने दूसरे चरण में पुरुष कैदियों को संबोधित करते हुए कहा--हमें महावीर की अहिंसा को जीवन में अपनाना होगा। अनावश्यक हिंसा, झूठ आदि को छोड़कर नैतिकता का जीवन जीना होगा। हमें मानवीय गुणों से जीवन को सजाना व संवारना होगा। करणीय-अकरणीय कार्य के प्रति विवेक चेतना को जगाना होगा। इस अवसर पर उपस्थित कैदी भाइयों ने व्यसनमुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। जेलर खेरा साहब ने साध्वीश्री का स्वागत करते हुए कैदियों से साध्वीश्री द्वारा बताये गये रास्ते पर चलने का आह्वान किया। संयोजन बसंत मालू ने किया।

आचार्य तुलसी कर्तृत्व पुरस्कार-2011

नई दिल्ली। वर्ष-2011 के आचार्य तुलसी कर्तृत्व पुरस्कार के लिए योग्य महिला अभ्यर्थियों अथवा संस्थाओं के नाम के प्रस्ताव आमंत्रित किए जा रहे हैं। जिन्होंने समाज में अध्यात्म, साहित्य, कल, विज्ञान, प्रशासन, नारी उत्थान, समाज सेवा आदि किसी एक विशेष क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया हो, वे आवेदन कर सकते हैं।

पुरस्कार स्वरूप राशि 1,00,000/- रु. का चैक, प्रशस्ति-पत्र ससम्मान प्रदान किया जाएगा।

आपके प्रस्ताव निर्धारित फॉर्म पर आवश्यक अनुलग्नकों सहित संस्था के निम्न कार्यालय में 8 फरवरी 2011 तक अवश्य जमा हो जाने चाहिए। फॉर्म एवं नियामावली महिला मंडल की वेबसाइट से प्राप्त कर सकते हैं--**7-बी, श्रीराम रोड, दिल्ली-54, मो. 9818403318**

का.:'रोहिणी' जैन विश्व भारती, लाडनूं, जिला-नागौर, राजस्थान-341306

-- **सायर बैंगानी,** निदेशक

www.terapanthinfo.com

पर्यावरण चेतना रैली

बीकानेर, 18 दिसंबर। बीकानेर दैनिक भास्कर समूह द्वारा प्रेरित विशाल प्रदूषण बचाओ रैली को सम्बोधित करते हुए अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा--हमारी पृथ्वी का अपना एक पर्यावरण है। वह अत्यंत रहस्यमय है। फिर भी इसमें भास्कर की भूमिका तो स्पष्ट दिखाई दे रही है। पर्यावरण के कारण ही पृथ्वी पर जीवन संभव हो पा रहा है। पर वर्तमान उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण पर्यावरण इतना प्रदूषित होता जा रहा है कि पृथ्वी के अस्तित्व पर भी खतरा मंडरा रहा है। इस खतरे से परिचित कराने के लिए दैनिक भास्कर अनेक संस्थाओं के साथ मिलकर रैली का आयोजन कर रहा है, यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रदूषण से बचने के लिए संयम की चेतना का जागरण अत्यंत जरूरी है। इसीलिए अणुव्रत का घोष है--संयमः खलु जीवनम्। बहुत सारे लोग प्रकृति की पूजा तो करते हैं पर उसकी सुरक्षा के प्रति जागरूक नहीं होते। अणुव्रत आचार संहिता में एक व्रत है--''मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूंगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूंगा। पानी तथा बिजली का दुरुपयोग नहीं करूंगा। यदि इस व्रत का सम्यक् पालन किया जाये तो प्रदूषण की समस्या का काफी समाधान मिल सकता है। सभी लोगों ने समवेत स्वरों में इस व्रत को स्वीकार कर संयमः खलु जीवनम् की भावना को उजागर किया।

इस अवसर पर मुनि शांतिकुमार, मुनि मोहजीतकुमार, मुनि पीयूषकुमार, दैनिक भास्कर बीकानेर संस्करण के संपादक मधु आचार्य, प्रबंधक संपादक मनीष ओझा, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष सुमेरमल दफ्तरी, सभा गंगाशहर के मंत्री आसकरण पारख, तेयुप के उपाध्यक्ष मनोज सेठिया, व्यापार मंडल के अध्यक्ष द्वारका प्रसाद पचीसिया, घेवरचंद मुसरफ, पारसमल आदि अनेक विशिष्ट जन एवं स्कूलों के छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

राजीव गांधी सर्किल से प्रारंभ हुई यह रैली बीकानेर के प्रमुख मार्गों से गुजरकर जिलाधीश कार्यालय तक पहुंची तथा जिलाधीश को अपना ज्ञापन सौंपा। स्थान-स्थान पर रैली का सम्मान किया गया। पर्यावरण के प्रति एक लोक-चेतना जागृत हुई।

नई स्फूर्ति-नई उमंग भरती पुस्तक

ललित गर्ग

भारत अपनी सुंदरता के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। भारत में विभिन्न संप्रदाय-धर्म और जाति के लोग एक साथ मिलकर रहते हैं। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक धरोहर के कारण भारत दुनिया के प्रमुख पर्यटन देशों में शुमार है। यहाँ के हर राज्य की अलौकिक और विलक्षण विशिष्टताएं हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। देश की इन विविधताओं ने ही अनेक यायावरी लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। लेखक, पत्रकार और समाजसेवक पुखराज सेठिया भी एक यायावरी पुरुष हैं जिनके जीवन का लक्ष्य जीवन की आपाधापी, भागदौड़ से हटकर प्रमुख पर्यटन स्थलों के बीच जीवन के मायने ढूंढ़ना रहा है। इसी सत्य की खोज ने उन्हें ऐसे-ऐसे ऐतिहासिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक स्थलों से साक्षात्कार करवाया है। उनकी इन्हीं यात्राओं के दौरान अनुभूत तथ्यों का प्रभावी एवं जीवंत चित्रण उन्होंने अपनी पुस्तक 'आओ घूमे अपना देश' में किया है। यात्रावृत की दृष्टि से यह एक अनूठा पठनीय ग्रंथ है,

यात्रा साहित्य की दृष्टि से यह ग्रंथ अपनी एक विशेष पहचान और उपयोगिता बनाकर प्रस्तुत होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। ग्रंथ में तथ्यपरकता, भौगोलिकता, रोचकता, सरसता और सहजता आदि यात्रा-वृत्त के सभी गुण समाहित हैं।

पूरे देश को घर समझने वाले, हर प्रांत से आत्मीय लगाव रखने वाले और अपना समझ कर सभी जगह घूम आने वाले पुखराजजी सेठिया की तरह के कितने लोग हो सकते हैं? वे दूसरे देशों में भी घूमे तो अपनेपन की इसी अनुभूति के साथ, इसीलिए वे जहाँ भी गये न केवल उन जगह के प्रमुख दर्शनीय स्थलों को देखा बल्कि वहाँ के लोगों के साथ, वहाँ के खान-पान के साथ, वहाँ के सांस्कृतिक मूल्यों के साथ, वहाँ के ऐतिहासिक तथ्यों के साथ एकाकार हो गए। आदमी को सिर्फ आदमी समझना, किसी खाने में बांटकर नहीं देखना, चाहे वह खाना ऐतिहासिक- सांस्कृतिक धरोहर की रेशमी चादर में लिपटा हो अथवा सुविधावादी राजनैतिक दाव-पेंच की पद्धति से निर्मित हो, कितना कठिन काम है लेकिन लेखक ने यही

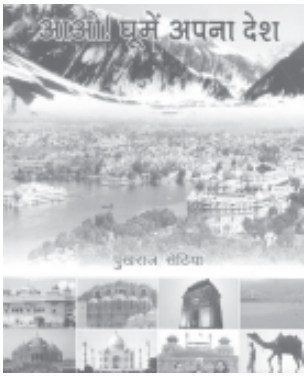

कठिन काम किया है, इसलिए उनका स्नेह सभी के लिए सर्वत्र प्रवाहित होता रहा। सेठिया के जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण भाग है उनका भारत भर में भ्रमण और अपनी अक्षत जिज्ञासा और अखंड पिपासा के साथ भारत को यहाँ से वहाँ तक घूमकर देख लेना।

भारत पल-पल परिवर्तित, नितनूतन, बहुआयामी और इन्द्रजाल की हद तक चमत्कारी यथार्थ से परिपूर्ण है। वह जैसा है, हुबहु वैसा ही उसे अपनी कलम से उद्घाटित करने की जद्दोजहद के जरिये ही लेखक ने इस मानक दृष्टि को प्राप्त किया है, वह भारत की सिर्फ छापों को न ग्रहण करने, बल्कि उसकी समग्र विविधताओं, नित नवीनताओं और अंतर्विरोधों के बीच से उस बिन्दु को ढूंढ़ निकालने की दृष्टि, जिससे इस बहुरूपी भारत को उसके बहुआयामी और निहंग वास्तविक रूप में देखा जा सके और ऊबड़-खाबड़ अनगढ़ता की परतों में छिपी सुंदरता को उद्घाटित किया जा सके।

'आओ घूमे अपना देश' एक ऐसा गुलदस्ता जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्प सुसज्जित हैं। 'आओ घूमे अपना देश' पर्यटन और भारत भ्रमण की दृष्टि से एक विलक्षण पुस्तक है।

कृति	: आओ घूमे अपना देश
लेखक	: पुखराज सेठिया
पृष्ठ	: 287 मूल्य : रु. 1000/-
प्रकाशक	: सुंदर साहित्य संस्थान 52 अंगूरी बाग, दिल्ली-110006

ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट,
25 आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92

www.terapanthinfo.com

अणुव्रतमय हो नववर्ष-२०११

अणुव्रत महासमिति कार्यसमिति, समस्त अणुव्रत कार्यकर्ताओं एवं सभी पाठकगणों को नये वर्ष की शुभकामनाएं। यह वर्ष-2011 हम सबके लिए शुभ और रचनात्मक कार्यों से परिपूर्ण, मंगलमय तथा अणुव्रतमय हो।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के नेतृत्व में देश को नैतिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, सन्देश मिले तथा अहिंसा के जागरण में उनका मार्ग प्रशस्त हो और यशस्वी बने।

9 मई 2010 को चैतन्य पुरुष, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का सरदारशहर में महाप्रयाण हो गया। उनके श्रीमुख से अन्तिम उद्‌गार अणुव्रत को गति-प्रगति देने के लिए आशीर्वाद दिया था। हम अपने नैतिक आचरण से अणुव्रत के संदेश को जनकल्याण के लिए जन-जन में प्रचारित-प्रसारित करें।

अणुव्रत को मानव धर्म के रूप में आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण, साधु-संतों ने एवं हजारों कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत का संदेश, अणुव्रत आचार संहिता को लाखों-लाखों लोगों तक पहुंचाया है। विगत 60 वर्षों से यह नैतिक जागरण का कार्य चल रहा है। हम अणुव्रती कार्यकर्ता मिलकर अणुव्रत विचार को और सशक्त बनाएं और देश को सदाचार के मार्ग पर लाने का प्रयास करते रहें। अक्टूबर 2010 में सरदारशहर में सम्पन्न हुए अणुव्रत अधिवेशन में कई कार्यकर्ताओं ने अपनी सहभागिता प्रदान की। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में अणुव्रत भवन का लोकार्पण राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय अशोक गहलोत द्वारा हुआ यह एक विशेष उपलब्धि हुई।

राजस्थान, दिल्ली, तमिलनाडु के विधायकों को अणुव्रत पत्रिका निःशुल्क भेजी जा रही है। साथ ही चेन्नई से तमिल भाषा में प्रकाशित अणुव्रतम भी करीब 2000 हजार लोगों को भेजी जा रही हैं।

नये वर्ष की मंगलप्रभात में हम चाहते हैं कि अणुव्रत आंदोलन में तेजस्विता आये एवं यह अधिक से अधिक प्रगति करे--

- अणुव्रत पाक्षिक के 10 हजार पाठक बनें।
- आचार्य तुलसी शताब्दी महोत्सव को भव्य रूप में मनाने की योजना बनें।
- अणुव्रत आचार संहिता के बोर्ड, हर घर, दुकान, भवन व स्कूलों में लगें।
- अणुव्रत के माध्यम से आडम्बरों पर लगाम लगे। नशाबंदी के प्रयत्न हो, भ्रष्टाचार पर प्रहार हो, कन्या भ्रूणहत्या बंद हो, जल बचाओ-पेड़ बचाओ-बिजली बचाओ व पर्यावरण बचाओ के प्रयत्न हों।
- रूढ़ परम्पराओं का त्याग करते हुए ''नया मोड़' को अपनायें।
- सत्-साहित्य का स्वाध्याय करें।
- शाकाहार का प्रचार करें।
- बच्चों को नैतिकता के संस्कार दें।
- सादा-जीवन उच्च-विचार को जीवन में अपनायें। अधिक से अधिक लोगों को अणुव्रत मिशन से जोड़ने का प्रयत्न हो। लेकिन सर्वप्रथम हम स्वयं भी अणुव्रतमय बनें।
  अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने कहा था--अगर प्रेरणा देनी हो तो पहले स्वयं प्रेरित हों किसी को शुद्ध बनाना है तो स्वयं शुद्ध बने।
- सभी अणुव्रत समितियों से अनुरोध है कि वे सक्रिय होकर कार्य करें एवं हर दो वर्ष में चुनाव अवश्य हों। हर कार्यक्रम की रिपोर्ट अणुव्रत महासमिति कार्यालय में अवश्य भिजवायें, ताकि अणुव्रत पाक्षिक में उसका प्रकाशन किया जा सके।
- सभी अणुव्रत समितियां कम से कम 10 आजीवन सदस्य अवश्य बनावें। अपने ग्राम में अणुव्रत घोषों का भित्ती अंकन एवं मुख्य चौराहों पर अणुव्रत आचार संहिता के होर्डिंग लगवायें।

अणुव्रत महासमिति से निरंतर सम्पर्क बनाए रखें और यदि अणुव्रत साहित्य की आवश्यकता हो, तो मंगवायें। समय-समय पर पत्र-व्यवहार एवं प्रत्यक्ष संपर्क कर अणुव्रत आंदोलन की गति-प्रगति में सहभागी बनें। नये वर्ष की मंगलकामना के साथ आप सभी को सादर प्रणाम!

-- निर्मल एम. रांका

www.terapanthinfo.com